काउण्ट लुई हेमन् 'कीरो'

परिशिष्ट केवल चिकित्सकों के हितार्थ]

3-3

हस्तरेखाऐं क्या कहती हैं ?

[विश्व-विख्यात हस्तरेखा-विशेषज्ञ 'कीरो' की हस्त-परीक्षा विषयक पुस्तक का सरल एवं सचित्र हिन्दी रूपान्तर : हस्त-रेखाओं के आधार पर विभिन्न रोगों की परीक्षा एवं उनके होम्योपैथिक उपचार सहित अपने ढंग की अपूर्व पुस्तक]

मूल लेखक :

कीरो

•

रूपान्तरकार :

पं. राजेश दीक्षित

['गिनीज बुक ऑफ दी वर्ल्ड रिकार्ड्स' में नामांकित विश्व में सर्वाधिक पुस्तकों के प्रणेता]

रोजगार प्रकाशन

हालनगंज, मथुरा– 281001 (उ. प्र.)

रोजगार प्रकाशन
हालनगंज, मथुरा- 281001

◆

मूल-लेखक : **कीरो**
रूपान्तरकार : **आचार्य पं. राजेश दीक्षित**

◆

संशोधित नवीन संस्करण

◆

मूल्यः
बीस रुपये मात्र
Rs. 20/-

◆

लेजर टाइपरीटर :
हैप्पी कम्प्यूटर ग्राफिक्स, मथुरा

◆

मुद्रकः
नवज्योंति प्रेस, मथुरा

हाथों में कर्म और भाग्य– दो बड़ी शक्तियाँ छिपी हुई रहती हैं । कर्म से भाग्य (भविष्य) बनता है और भाग्य कर्म करने की प्रेरणा देता है। दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक के बल पर आप अपना भाग्य जान सकेंगे और श्रेष्ठतम कर्म करने की प्रेरणा भी प्राप्त करेंगे ।

'HAST-REKHAYEN KYA KAHATI HAIN'
BY—CHEIRO

प्रकाशकीय

हस्तरेखाओं के आधार पर ही किसी भी व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव एवं जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यह विद्या सहस्रों वर्ष पुरानी है । इसका उद्‌गम भारतवर्ष ही है । हमारे यहाँ प्राचीन काल में इसे **'सामुद्रिक-शास्त्र'** तथा बाद में **'लक्षण-शास्त्र'** के नाम से पुकारा जाने लगा । इस शास्त्र से न केवल हस्त-रेखा अपितु मनुष्य-शरीर के विभिन्न अङ्गों की बनावट तथा स्वर आदि के आधार पर भी चरित्र-परीक्षा की जाती थी ।

'लक्षण-शास्त्र' के विकास-काल में विभिन्न विषयों पर अलग-अलग अनुसंधान किए गए, जिसके फलस्वरूप 'हस्त-परीक्षा' ने एक पृथक् शास्त्र अथवा विज्ञान का स्वरूप ग्रहण कर लिया ।

* यूरोप में हस्तरेखा-विज्ञान क्षेत्र में जिन मनीषियों ने विश्व-विश्रुत ख्याति अर्जित की, 'कीरो' का नाम उनमें सर्वोपरि है ।

* वर्षों के अध्ययन तथा अनुभव द्वारा कीरो ने हस्त-परीक्षण में ऐसी अभिज्ञता प्राप्त कर ली थी कि उनकी भविष्यवाणियाँ प्रायः शत-प्रतिशत सत्य एवं तहलका मचा देने वाली सिद्ध हुईं । इस विषय पर उनके द्वारा लिखित पुस्तकों का विश्व की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में रूपान्तरण एवं करोड़ों की संख्या में प्रकाशन होना उनकी लोकप्रियता एवं उपयोगिता का सबसे बड़ा प्रमाण है ।

* कीरो की पुस्तकों के अनेक अनुवाद अथवा रूपान्तर हिन्दी भाषा में भी प्रकाशित हुए हैं, परन्तु उनमें से कोई भी अनुवाद अक्षरशः हो– यह नहीं कहा जा सकता । बहु-विज्ञापित कुछ हिन्दी रूपान्तरों में तो कीरो के साथ ही अन्य देशी-विदेशी विद्वानों के मत को प्रस्तुत कर, घालमेल की अजीबो-गरीब स्थिति उत्पन्न कर दी है । पृष्ठ संख्या बढ़ाकर अधिक मूल्य रखने की लालसा ने "कहीं की ईंट कहीं का

रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा" वाली कहावत को भी चरितार्थ कर दिया है ।

* प्रस्तुत पुस्तक कीरो लिखित मूल-पुस्तक का हिन्दी भावानुवाद है । अन्तिम परिशिष्ट-भाग में दिए गए होम्यो-उपचार के अतिरिक्त ऐसी कोई बात इस पुस्तक में संकलित नहीं की गई है, जिसे कीरो ने न लिखा हो ।

* प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तर सहस्राधिक पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यशस्वी लेखक, विद्या-वारिधि, आचार्य पं. राजेश दीक्षित द्वारा ऐसी सरल भाषा तथा रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है कि सामान्य हिन्दी पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इससे पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है । विषय-वस्तु को अधिकाधिक बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से इसमें स्थान-स्थान पर **चित्र भी पर्याप्त संख्या में दे दिये गये हैं** ।

* **हस्त-परीक्षा द्वारा शारीरिक तथा मानसिक-अनेक प्रकार की बीमारियों का ज्ञान भी प्राप्त किया जाता है** । उनके लिए होम्यो-उपचार निरापद तथा प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है । अस्तु, पाठकों के हित की दृष्टि से इस पुस्तक के अन्त में एक **होम्यो-चिकित्सा-परिशिष्ट को भी सम्मिलित कर दिया गया है** ।

* आशा है, पाठक इसे स्नेहपूर्वक अपनायेंगे ।

—प्रकाशक

पुनश्च :

भारतवर्ष के अनेक हस्तरेखा-विशारदों ने हमें सूचित किया है कि **'ऐसी श्रेष्ठ पुस्तक हिन्दी में अन्य नहीं है ।'** –इससे लाभान्वित होने वाले विद्वानों के हम कृतज्ञ हैं ।

संसार प्रसिद्ध भविष्यवक्ता 'कीरो'

दो शब्द जिज्ञासुओं से

मानव सदैव से ही यह जानने के लिये उत्सुक रहा है कि भविष्य में उसके साथ क्या घटने वाला है । आने वाले कल को जानने की इच्छा सभी के मन में होती है । इसीकारण प्राचीन समय में कठोर साधना द्वारा ऐसी-ऐसी युक्तियाँ खोजी गईं, जिनके माध्यम से भावी समय के विषय में जाना जा सके । ज्योतिष-विद्या, सामुद्रिक-शास्त्र, रमल-विद्या इसी के सुन्दर उदाहरण हैं ।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह हैं कि इन सब विद्याओं का उदय भारत-भूमि पर ही हुआ है । स्वयं 'कीरो' ने भी हस्त-परीक्षा का ज्ञान भारतवर्ष से ही प्राप्त किया था ।

वास्तव में हस्त-परीक्षा विज्ञान 'सामुद्रिक विज्ञान' तथा 'ज्योतिष-विद्या' का समावेश मात्र है । इसका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति एक अलग प्रकार का व्यक्तित्व रखता है और प्रत्येक व्यक्तित्व एक भिन्न प्रकार के व्यक्ति का परिचायक होता है । शायद तभी विश्व के किन्हीं भी दो व्यक्तियों के हाथ की रेखायें और छाप परस्पर नहीं मिलते ।

यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह भी है कि हस्तरेखायें केवल भविष्य की ही परिचायक नहीं होतीं अपितु उनके आधार पर जातक के स्वभाव, इच्छा, स्वास्थ्य आदि का भी ज्ञान होता है । इसी तथ्य के आधार पर 'कीरो' ने लिखा था कि– 'भविष्यवक्ता को चाहिये कि वह पहले जातक को उसके अतीत के विषय में बताये ताकि जातक को पता चल सके कि बताने वाला इस विज्ञान का ज्ञाता है क्योंकि कोई भी भविष्यवक्ता भविष्य के विषय में कुछ भी कह सकता है परन्तु अतीत के बारे में वह जातक को धोखा नहीं दे सकता । इस प्रकार जातक पूर्णतया संतुष्ट हो सकेगा।'

कीरो का यह विचार भी बिल्कुल सही था कि इस विधि से जिज्ञासु शीघ्र ही हस्तरेखा-विज्ञान में पारंगत हो जायेगा । इसी सिद्धान्त के आधार पर कीरो भविष्यवाणी करते थे जो शत-प्रतिशत्त सही होती थीं ।

'कीरो' के उन्हीं विचारों का यह संकलन प्रत्येक जिज्ञासु पाठक के लिये मार्गदर्शक सिद्ध हो– यही कामना है ।

–रूपान्तरकार

विषय-सूची

परिशिष्ट–

कीरो : एक संक्षिप्त परिचय

परिचय

विश्व-प्रसिद्ध हस्तरेखा-विशेषज्ञ 'कीरो' के जन्म का नाम 'जॉन ई-वार्नर' था । बड़े होकर जब वे अमेरिका के 'हॉलीवुड' नामक उपनगर में ज़ा बसे, तब उन्होंने अपना नाम बदलकर 'काऊण्ट लुईस हैमन' रख लिया, तथापि हस्तरेखा-विज्ञान की दुनियाँ में उन्हें 'कीरो' नाम से ही जाना जाता है । 'कीरो' शब्द ग्रीक-भाषा का है, जिसका अर्थ होता है– 'हाथ' ।

'कीरो' का जन्म सन् 1866 ई. में इङ्गलैण्ड के एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था । बाल्यावस्था में उनका मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता था । संयोगवश उन्हीं दिनों उन्हें एक ऐसा सैलानी-साथी मिल गया जो विश्व के अनेक देशों का भ्रमण कर चुका था । एक दिन कीरो अपने घर से चुपचाप भाग निकले तथा उस व्यक्ति के साथ विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए भारत आ पहुँचे । यहाँ उनकी भेंट एक ऐसे ब्राह्मण से हुई, जो सामुद्रिक-विज्ञान का पण्डित था । उसने कीरो की हस्तरेखायें देखकर उनके जीवन की कुछ घटनाओं का इस प्रकार वर्णन किया कि क़ीरो आश्चर्यचकित रह गये तथा हस्तरेखा-विज्ञान सीखने के लिए उसके पीछे पड़ गये ।

उस ब्राह्मण ने कई वर्षों तक कीरो को सामुद्रिक शास्त्र का अध्ययन कराया । इसी अवधि में कीरो ने भारत के अन्य क्षेत्रों का भी भ्रमण करते हुए अनेक ज्योतिषियों तथा हस्तरेखा विदों से सम्पर्क स्थापित कर, उनसे नई-नई जानकारियाँ प्राप्त कीं । इस प्रकार भारत में रहते हुए ज्योतिष तथा सामुद्रिक शास्त्र का गहन अध्ययन करने के उपरान्त कीरो अपने देश को लौट गए ।

इङ्गलैण्ड पहुँचकर कीरो ने स्वयं को 'हस्तरेखा-विशेषज्ञ' घोषित करते हुए जब इस विद्या का प्रचार प्रारम्भ किया तो वहाँ के ईसाई पादरियों ने उन्हें धर्म विरोधी, चर्च विरोधी, समाज-विरोधी तथा शैतान-समर्थक आदि अनेक उपाधियों से विभूषित कर, तिरस्कृत, अपमानित एवं लांछित करना आरम्भ कर दिया । इतना ही नहीं, वे इङ्गलैण्ड की तत्कालीन सरकार

द्वारा उन्हें 'देश निकाला' का दण्ड दिलवाने में भी सफल हो गये। इन सब षड़यन्त्रों के फलस्वरूप एक दिन कीरो को अपना देश इङ्गलैण्ड छोड़ना पड़ा और वे फ्रांस के 'पेरिस' नामक नगर में रहने लगे ।

पेरिस में रहते हुए कीरो ने 'हस्त-रेखा विज्ञान' से मुँह मोड़कर, 'शैम्पेन' नामक शराब बनाने का कारखाना खोल लिया, परन्तु जीवन में राजसिकता एवं विलासिता का अधिक समावेश हो जाने के कारण उसे चला पाने में असमर्थ रहे, फलतः उसे जल्दी ही बन्द भी कर देना पड़ा।

कीरो के पेरिस में रहते समय ही इङ्गलैण्ड-निवासी उनके अनुयाइयों के प्रयत्नों से वहाँ की सरकार ने देश-निकाले का आदेश भी वापिस ले लिया, फलतः कीरो कुछ समय बाद पुनः इङ्गलैण्ड लौट आये तथा वहीं रहकर व्यवसाय के रूप में पुनः 'हस्तरेखाविद्' का कार्य करने लगे ।

लन्दन के डायमण्ड पार्क स्थित एक छोटे परन्तु शानदार बँगले में रहते हुए जान ई-वार्नर ने बहुत थोड़े समय में 'प्रोफेसर कीरो' के नाम से हस्तरेखा-विशेषज्ञ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर ली तथा फ्रांस, रूस, जर्मनी आदि अन्य देशों के लोगों ने भी अपना भविष्य जानने के लिए उनसे सम्पर्क करना आरम्भ कर दिया ।

सन् 1893 ई. में कीरो अपने लन्दन के मकान की देखभाल नौकरों के जिम्मे छोड़कर, स्वयं अमेरिका चले गये । फिर वहीं के 'न्यूयार्क' नगर में एक बड़ा बँगला खरीदकर, स्थायी रूप से बस गए । इस समय उनकी आयु मात्र 33 वर्ष थी ।

प्रख्यात भारतीय सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जब अमेरिकन-प्रवास में थे, तब कीरो ने भी 'शिकागो' नगर में उनसे भेंट की थी तथा उनके व्यक्तित्व, अध्यात्मवाद एवं विद्वता से अत्यधिक प्रभावित भी हुए थे । तत्पश्चात् उन्होंने एक बार फिर भारत आकर महात्मा गाँधी, पं. मोतीलाल नेहरू एवं एनीबेसेन्ट आदि अनेक नेताओं से भेंट की तथा उनके हाथ देखकर भविष्यवाणियाँ भी की थीं ।

अमेरिका में रहते समय कीरो ने अनेक शक्तिशाली राजनीतिज्ञों तथा अधिकारियों के भ्रष्टाचार का भण्डाफोड़ किया, फलस्वरूप उन्होनें न्यायालयों में झूठे-सच्चे आरोप लगाकर कीरो को न्यूयार्क से निर्वासित करा दिया । इतना ही नहीं, अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड की सरकारों ने कुछ समय के लिए उन पर 'हस्तरेखा द्वारा भविष्य कथन' पर भी रोक लगा दी थी ।

अब कीरो ने हाथ देखना छोड़कर 'अमेरिकन-रजिस्टर' नामक एक पत्र निकालना आरम्भ किया । इस पत्र में भी जब उन्होंने भ्रष्ट-अधिकारियों के विरुद्ध लिखना चालू रखा तो वे उनके और भी प्रबल विरोधी हो गये । अन्ततः कीरो को उस पत्र का प्रकाशन बन्द करने को भी विवश होना पड़ा ।

इसके बाद कीरो पेरिस चले गये । वहाँ उन्होंने 'जुबली बैंक' नामक एक निजी बैंक की स्थापना की, साथ ही अपना नाम बदलकर 'काउन्ट लुईस हैमोन' रख लिया । अपना रहन-सहन भी उन्होंने 'काउन्ट (नवाब)' जैसा बना लिया । बैंक आरम्भ में तो धड़ल्ले से चला, परन्तु कीरो व्यावसायिक-बुद्धि लेकर पैदा नहीं हुए थे, फलतः कुछ समय बाद उसे भी बन्द करना पड़ा ।

पेरिस से हटकर कीरो फिर अमेरिका चले गये और वहाँ पुनः 'हस्तरेखा-विशेषज्ञ' का कार्य करने लगे । बीच में कुछ दिनों तक लन्दन में भी रहे । इस बीच उन्होंने 'लैंग्वेज ऑफ दी हैण्ड', 'बुक ऑफ नम्बर्स', 'गाइड टु दि हैण्ड', 'यू एण्ड योर हैण्ड', 'ह्वेनवर यू बौर्न', 'यू एण्ड योर स्टार्स' तथा 'वर्ल्ड प्रिडिक्शस' आदि पुस्तकें लिखीं । इन पुस्तकों द्वारा उन्हें विश्वव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त होने के अतिरिक्त पर्याप्त आर्थिक लाभ भी हुआ । साथ ही उनका 'हस्त-परीक्षण व्यवसाय' भी खूब चल निकला।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में कीरो ने अमेरिका के सुप्रसिद्ध उपनगर 'हालीवुड' को अपना आवास बनाया । उन्होंने प्रभूत मात्रा में धनोपार्जन किया, तथापि वे उसे संचित नहीं रख सके । वे जितना कमाते थे, उस सबको अपनी विलासिता पर व्यय कर दिया करते थे । राजसी ठाट-वाट और शानशौकत की जिन्दगी बिताने के कारण वे अन्तिम समय में आर्थिक दृष्टि से बहुत सामान्य व्यक्ति रह गये ।

'कीरो' के जीवन का अन्तिम समय आश्चर्यकारी घटनाओं से सम्बद्ध रहा । आखिरी समय में परिचर्या-सुश्रूषा करने वाली श्रीमती ई-फीलान नामक नर्स ने कीरो की मत्यु का वर्णन करते हुए लिखा है— सन् 1936ई. के एक दिन मृत्यु-शय्या पर पड़े कीरो के कमरे की दीवार-घड़ी 12 बजकर 15 मिनट पर अचानक ही बड़ी जोर से गूँज उठी । फिर हर 15 मिनट के अन्तर से, उसमें से एक प्रकार का तीव्र स्वर उभरने लगा तथा ठीक 1 बजे, जबकि चौथी बार उसमें से तेज आवाज निकली, कीरो ने अपने प्राण्प त्याग दिये । उस समय वह कमरा एक प्रकार की भीनी सुगन्ध से भी भर गया था, जबकि कमरे के बाहर किसी प्रकार की सुगन्ध अथवा फूल आदि का कोई चिह्न तक नहीं था । कीरो का शव जब तक अन्त्येष्टि

के लिए वहाँ से नहीं हटाया गया, तब तक उस सुगन्धि की लहरें कमरे में निरन्तर भरी रहीं । इस प्रकार उस रहस्यमय व्यक्ति की मृत्यु भी रहस्यमय परिस्थितियों में ही हुई ।

कीरो की प्रमुख भविष्यवाणियाँ

कीरो ने अपने जीवनकाल में हजारों व्यक्तियों की हस्त-परीक्षा की थी। उनमें सामान्य मजदूर से लेकर बड़े-बड़े सम्राट तक थे । उनकी सभी भविष्यवाणियाँ प्रायः खरी उतरती थीं । यहाँ उनके द्वारा की गई प्रमुख भविष्यवाणियों में से कुछ का उल्लेख मात्र किया जा रहा है—

1—सन् 1896 की घटना है । कीरो उन दिनों अमेरिका में रह रहे थे । महारानी विक्टोरिया ने उनकी प्रशंसा सुनी तो इङ्गलैण्ड बुला भेजा। लन्दन पहुँचने पर उन्हें राजपरिवार से सम्बन्धित लार्ड आर्थर पेगेट के बँगले पर ले जाया गया । वहाँ एक व्यक्ति को पर्दे की आड़ में बैठाकर केवल उसका दाँया हाथ देखकर भविष्यवाणियाँ करने के लिये जब कीरो से कहा गया तो उन्होंने बताया– 'यह व्यक्ति 14 वर्षों तक जीवित रहेगा । अब से 5 वर्ष बाद यह राज्यसिंहासन पर बैठेगा तथा 9 वर्ष तक शासन करने के उपरान्त 69 वर्ष की आयु में परलोकवासी होगा ।'

कीरो की उक्त भविष्यवाणी पूर्ण सत्य निकली । पर्दे में बैठकर हाथ दिखाने वाला व्यक्ति और कोई नहीं इङ्गलैण्ड के भावी-सम्राट एडवर्ड सप्तम थे । महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के बाद सन् 1902 ई. में वे ब्रिटिश-साम्राज्य के शासक बने । नौ वर्ष बाद सन् 1910 ई. में, ठीक 69 वर्ष की आयु में ही उनकी मृत्यु भी हुई ।

2–सन् 1897 में श्री कीरो इङ्गलैण्ड में ही थे, उन्हीं दिनों रूस के सम्राट जार निकोलस द्वितीय ने बड़े गुप्त रूप से एक व्यक्ति के हाथों अपने हाथ की छाप भिजवाकर, भविष्यवाणी करने के लिए कहा । जो व्यक्ति हाथ का प्रिन्ट लेकर आया था, उसने यह प्रकट नहीं होने दिया कि उसे किसने भेजा है तथा यह छाप किस व्यक्ति के हाथ की है ।

कीरो ने उस प्रिन्ट को गौर से देखा, तत्पश्चात् उसी कागज के पीछे यह लिखा– 'यह हाथ की छाप जिस व्यक्ति की है, उसे आजीवन युद्ध-संघर्ष में रत रहना होगा तथा चिन्ताओं से कभी छुटकारा नहीं मिलेगा । आज से बीस वर्ष बाद अर्थात् सन् 1917 ई. में इसका सर्वस्व नष्ट हो जायेगा तथा मृत्यु भी ऐसी रोमांचक होगी, जो इतिहास में अविस्मरणीय बनी रहेगी।'

कालान्तर में कीरो की यह भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। सन् 1917 ई. की प्रसिद्ध राज्यक्रान्ति में जार निकोलस द्वितीय को सिंहासन से उतारा गया तथा उसके परिवारीजनों को कत्ल करने के बाद, स्वयं उसे भी नगर के चौराहे पर खड़ा करके सार्वजनिक रूप से मृत्यु-दण्ड दिया गया।

3— एक बार इङ्गलैण्ड के ही एक सैनिक ने कीरो को अपना हाथ दिखाते हुए जब भविष्य बताने का आग्रह किया तो कीरो ने उससे कहा— 'तुम्हें शीघ्र ही सेना में बहुत उच्च पद प्राप्त होगा, अनेक युद्धों में तुम्हें विजय प्राप्त होगी, इतिहास में तुम्हें एक बड़े योद्धा के रूप में स्मरण किया जाएगा, परन्तु तुम्हारी मृत्यु युद्ध-क्षेत्र में न होकर समुद्र में डूबने से होगी। उससे बचने का कोई उपाय नहीं दीखता ।'

उक्त सैनिक ने ही आगे चलकर लार्ड किचनर के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की । अनेक युद्धों में अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करने के उपरान्त उसने ब्रिटिश-कालीन भारतीय-सेना में प्रधान सेनापति का पद भी प्राप्त किया और अन्त में उसकी मृत्यु भी समुद्र में डूबकर हुई, क्योंकि जिस जलयान में वह यात्रा कर रहा था, वह समुद्री-तूफान में फँसकर नष्ट हो गया ।

4— एक बार अँग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा नाटककार 'आस्कर वाइल्ड' के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते हुए कीरो ने कहा कि वे प्रसिद्धि के चरम शिखर पर पहुँचने के बाद एकदम नीचे गिरेंगे तथा कारागार अथवा देश-निर्वासन की सजा भुगतने के बाद विदेश में इधर-उधर भटकते हुए मृत्यु को प्राप्त होंगे । उस समय उन्हें कोई भी व्यक्ति अभय नहीं देगा ।

'पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' नामक पुस्तक के प्रकाशन के साथ ही आस्कर वाइल्ड की ख्याति उच्चतम शिखर पर जा पहुँची, जिसके कारण वे बड़े अहंकारी भी हो गये । उस घटना के दो वर्ष बाद ही उन्हें दुराचार के एक मामले में कारावास का दण्ड भोगना पड़ा, जिसके कारण उनकी सम्पूर्ण ख्याति धूल में मिल गई । जेल से छूटने के बाद वे ग्लानिवश अपना देश छोड़कर फ्रांस चले गये । वहीं बहुत समय तक दीन-हीन अवस्था में भटकते रहने के बाद उनकी मृत्यु भी हुई ।

5— भारत के सम्बन्ध में कीरो ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के समक्ष एक दिन ब्रिटिश शासन को घुटने टेकने पड़ेंगे तथा सभी दमनात्मक उपायों के विफल हो जाने पर स्वतन्त्रता भी देनी पड़ेगी । सन् 1947 ई. में भारत विभाजन तथा उसके

पूर्व एवं पश्चात् देश में साम्प्रदादिक दंगे भड़कने की बावत भी उन्होंने पहले ही कह दिया था ।

6—(क) सन् 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध होने, (ख) द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका के सबसे बाद में सम्मिलित होने, (ग) द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन को सर्वाधिक क्षति पहुँचने, (घ) इटली तथा जर्मनी द्वारा एक साथ मिलकर फ्रांस से युद्ध करने तथा (ङ) अमेरिका एवं जापान के दीर्घकाल तक युद्ध-रत रहने की भविष्यवाणियाँ कीरो ने बहुत पहले कर दी थीं ।

7— जनरल सर बुलर का हाथ देखकर कीरो ने उन्हें बताया कि उन्हें एक और युद्ध-अभियान का नेतृत्व करना पड़ेगा, जिसमें वे पराजित होंगे तथा उनके मस्तक पर कलंक का टीका भी लगेगा । बाद में 'बोयर-युद्ध' में पराजित होने पर उनकी कटु-आलोचना भी की गई थी।

8—इङ्गलैण्ड के एक बहुत बड़े तथा समृद्ध व्यापारी विलियम हिवटले का हाथ देखकर कीरो ने 13 वर्ष बाद उनकी हत्या हो जाने की चेतावनी दी थी और समय आने पर वही घटना घटित भी हुई ।

9— जोसफ चैम्बरलेन एम. पी. तथा उसके पुत्र सर आस्टिन चैम्बरलेन के हाथों को देखकर कीरो ने दोनों– पिता-पुत्र के जीवन में लगभग एक जैसी ही घटनाएँ घटने की भविष्यवाणी की थी । वैसा ही हुआ भी । आस्टिन चैम्बरलेन ने उन सभी उच्च पदों को प्राप्त किया, जिन्हें उनके पिता ने पाया था । वे पिता के बराबर की आयु में ही पार्लियामेण्ट के सदस्य बने तथा मन्त्रि-मण्डल में भी वही स्थान प्राप्त किया। इतना ही नहीं, दोनों को रोग भी एक जैसे ही हुए तथा 63 वर्ष की आयु में दोनों को ही पक्षाघात का शिकार भी बनना पड़ा ।

10—शिकागो निवासी डॉ. मीयर को अदालत द्वारा मृत्युदण्ड दिए जाने के बाबजूद भी जीवित बने रहने तथा अन्तिम-जीवन कारागार में बिताने की भविष्यवाणी भी कीरो द्वारा ही की गई थी । डॉ. मीयर ने अपने धनाढ्य मरीजों की विष देकर हत्या की, जिसके फलस्वरूप अदालत द्वारा उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया । प्राण-रक्षा की सभी अपीलें ऊपरी अदालतों द्वारा निरस्त कर दी गईं । उसे बिजली की कुर्सी पर बैठाकर मृत्यु-दण्ड देने की तारीख भी निश्चित कर दी गई । अन्त में उसने सुप्रीम कोर्ट में अपील की, जिसने मृत्यु-दण्ड को आजीवन कारावास की सजा में परिवर्तित कर दिया । फलस्वरूप वह लगभग 15 वर्षों तक और जीवित बना रहा।

हस्तरेखा-विज्ञान : 'कीरो' की दृष्टि में

'कीरो' ने हस्तरेखा-विज्ञान के सम्बन्ध में अपना जो अभिमत व्यक्त किया है, पाठकों की जानकारी के लिए उसका सार-संक्षेप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

जो विज्ञान अथवा कला अपने जन्मकाल से ही मनुष्य-जाति की प्रगति एवं सुधार की पक्षपाती रही हो, उसकी उपयोगिता निर्विवाद है तथा उसे मान्यता एवं प्रोत्साहन देना भी सबका कर्तव्य है ।

हाथ की परीक्षा द्वारा मनुष्य की प्रकृति एवं गुण-दोषों का ज्ञान प्राप्त कर, उन्हें दूर करने के उपायों पर विचार किया जा सकता है । हाथ मनुष्य के आचरण की उस बन्द अलमारी की चाभी जैसा है, जिसके भीतर क्षमतायें, गुण तथा कार्य-शक्तियाँ छिपी रहती हैं । हस्त-परीक्षा द्वारा उस अलमारी के ताले को खोलकर अपने (Self) को पहिचाना जा सकता है तथा अपनी क्षमता को कार्यान्वित एवं विकसित भी किया जा सकता है।

स्वयं को पहिचान लेने पर अपने ऊपर अधिकार रख पाना भी संभव हो सकता है । अतः हमें अपने जीवन को सफल एवं सुखद बनाने तथा अपने गुणों, क्षमताओं एवं क्रियाशीलता का भरपूर उपयोग करने के लिए हाथ की भाषा को पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि इससे स्वयं को पहिचानने में मदद मिलती है ।

हस्तरेखा-विज्ञान बहुत प्राचीन है । प्रगैतिहासिक-काल में पहुँच कर जब हम इतिहास को टटोलते हैं तो ज्ञात होता है कि आर्य-सभ्यता के पुरातन काल में भी उसकी अपनी भाषा तथा साहित्य था । हस्त-विज्ञान का जन्म भी आर्यों के द्वारा ही हुआ । भारतवर्ष में उत्पन्न यह विज्ञान यूनान, मिस्र आदि देशों में होता हुआ सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित हुआ ।

इस सत्य को भुलाया नहीं जा सकता कि अत्यन्त प्राचीनकाल में भी भारतीय विद्वान् किसी व्यक्ति के हाथ की बनावट एवं रेखाओं को देखकर उसके भविष्य का सही-सही वर्णन कर दिया करते थे ।

भारत के प्राचीन मन्दिर तथा इमारतों के माध्यम से खगोल-शास्त्र की जो गणनायें प्रकाश में आई हैं, उनसे पता चलता है कि हिन्दू विद्वानों को विषुवत् के अग्रगमन का ज्ञान ईसा से शताब्दियों पूर्व प्राप्त था । इसी प्रकार ज्ञान-विज्ञान की अन्य विधाओं में भी भारतवर्ष अन्य देशों का अग्रणी रहा है तथा इस देश में उद्‌भूत सिद्धान्त ही अन्य देशों के लिए ज्ञान सम्वाहक बने हैं । संसार के ग्रन्थों में हिन्दुओं के वेद सबसे प्राचीन हैं तथा यूनानी सभ्यता एवं ज्ञान का मूलाधार भी इन्हीं को माना जाता है ।

इतिहास के अध्ययन से यह पता चलता है कि भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में अत्यन्त प्राचीन काल से 'जोशी' जातीय विद्वान् हस्त-परीक्षा में निष्णात तथा अन्य लोगों को इसका प्रशिक्षण भी देते थे । अपनी भारत-यात्रा की अवधि में मुझे एक अद्‌भुत पुस्तक को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । वह पुस्तक एक गुफा के भीतर बने मन्दिर के खण्डहर में रखी रहती थी तथा उसके स्वामियों के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति उसका स्पर्श तक नहीं कर सकता था । यह रहस्यपूर्ण पुस्तक मनुष्य की चमड़ी द्वारा निर्मित थी तथा उसमें सैकड़ों हस्त-चित्र बने हुए थे, साथ ही यह भी लिखा था कि किस रेखा और किस चित्र का अर्थ किस समयावधि में सत्य प्रमाणित हुआ । वह पुस्तक लाल रंग के एक ऐसे तरल पदार्थ द्वारा लिखी गई थी, जिसकी स्पष्टता, गहराई तथा चमक पर काल (समय) का कोई प्रभाव नहीं पड़ सका था । पीले रंग की चमड़ी पर अंकित लाल रंग के चित्र, अङ्क चिहन तथा रेखायें एक प्रकार का अद्‌भुत दृश्य उपस्थित करते थे । पुस्तक लिखने वालों ने जड़ी-बूटियों द्वारा तैयार किसी रसायन के प्रलेप से उस पुस्तक के पृष्ठों पर वार्निश जैसी चमक उत्पन्न कर दी थी और वे देखने में एकदम नये से लगते थे । केवल उसकी जिल्द पर ही समय का कुछ कुप्रभाव पड़ा था । वह पुस्तक बहुत पुरानी थी । उसे किसने लिखा था, यह बात उसके स्वामियों को भी ज्ञात नहीं थी । वह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त था । उसका प्रथम खण्ड ऐसी भाषा में लिखा था, जिसका अर्थ समझने में उसके स्वामी भी समर्थ नहीं थे ।

उक्त प्रकार के न जाने कितने ग्रन्थ भारतवर्ष में विद्यमान हैं, जिन्हें

उनके स्वामी कृपण की सम्पत्ति की भाँति अपने कलेजे में चिपटाये हुए हैं तथा किसी अन्य को उसकी हवा तक नहीं लगने देते ।

हस्त-विज्ञान का जन्म भारत में हुआ और वहाँ से चलकर दूर देशों तक फैला तो अन्य देशवासियों ने भी उससे सम्बन्धित सिद्धान्तों तथा नियमों का अध्ययन कर कुछ नवीन खोजें भी कीं, फलतः इसकी वैज्ञानिकता अधिक प्रमाणित एवं सुनिश्चित हो गई । यूनानी सभ्यता के समय इस विज्ञान को जो स्पष्ट रूप प्राप्त हुआ था, उसे चीन, तिब्बत, वर्शिया (ईरान) तथा मिस्र में अधिक विस्तार मिला । ईसा से 423 पूर्व Anaxagoras नामक एक यूनानी-विद्वान् हस्त-विज्ञान का प्रशिक्षण भी देते थे, इसका पता चला है । Hispanus नामक एक यूनानी-विद्वान् को किसी धर्मस्थल की वेदी पर स्वर्णाक्षरों में लिखित हस्तविज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तक भी प्राप्त हुई थी, जिसे उसने सिकन्दर महान् को भेंट कर दिया था।

सम्राट आगस्टस तथा अन्य यूनानी महापुरुष हस्त-विज्ञान के ज्ञाता तथा उसे सम्मान देने वालों में से थे, परन्तु इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि यह विज्ञान प्राचीन काल से ही यूरोप के धर्म-नेताओं की ईर्ष्या एवं विद्वेष का कारण भी बना रहा । वे लोग इस विज्ञान के जन्मदाताओं को 'काफिर' अथवा 'अधर्मी' कहकर पुकारते थे । उनके मत में हस्त-विज्ञानी शैतान की सन्तान थे । इतना ही नहीं, उन्होंने अपने प्रभाव से शास्त्रों को प्रभावित कर इस विज्ञान को गैर-कानूनी तथा दण्डनीय भी घोषित करवा दिया । फलतः इस विज्ञान को कुछ समय के लिए पिछड़ना भी पड़ा ।

मध्यकालीन युग में इस विज्ञान की पुनर्स्थापना के अनेक प्रयत्न किये गये। सन् 1475 ई. में हस्त-विज्ञान पर Die Kunst Ciromanta तथा सन् 1490 ई. में Cyramantia Aristotelis Cum Flguris नामक पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनकी प्रतियाँ 'ब्रिटिश-म्यूजियम' में आज तक सुरक्षित हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में इस विज्ञान ने अपना प्रतिष्ठित-स्थान पुनः प्राप्त किया, तब यह भी स्पष्ट हो गया कि समय-समय पर धार्मिक संस्थानों द्वारा इस विज्ञान पर जो लांछन तथा आक्षेप लगाये गये, वे द्वेषपूर्ण तथा ईर्ष्या-जन्य थे ।

हम (कीरो) जिन दिनों लन्दन में रह रहे थे तब वहाँ के एक कैथोलिक-पादरी ने एक परिवार को Absolution नामक एक धार्मिक-संस्कार कराने से इसलिए इन्कार कर दिया था कि उस परिवार के मुखिया एक बार हमारे पास अपना हाथ दिखाने आये थे । इसी प्रकार

अमेरिका में रहते समय दो पादरी हमारे पास यह विश्वास दिलाने के लिये आये थे कि हमारी हस्त-परीक्षा सम्बन्धी सफलता शैतान की देन है तथा हमें इस ओर से विमुख होकर पादरी बन जाना चाहिए ताकि शैतानी शक्तियों से हमारा सम्बन्ध टूट जाय ।

धार्मिक-संस्थानों के विरोध को ध्यान में रखते हुए हमें यह बताने में कोई संकोच नहीं है कि स्वयं बाइबिल के अनेक पदों में हाथों का जिक्र है । सैंतीसवें प्रकरण के सातवें पद में कहा गया है– "ईश्वर ने हाथों में चिह्न इसलिए अंकित किये हैं, ताकि लोग यह जान लें कि किस प्रकार का भविष्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा है ।" इसी प्रकार के कुछ अन्य पद भी हैं, जैसे- "Length of days is in her right hand and honour are in her left" आदि ।

वर्तमान युग 'विशिष्टीकरण' का है । इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके द्वारा किसी एक विषय में तो अधिकाधिक ज्ञान अर्जित कर लिया जाता है, परन्तु अन्य विषयों में लगभग कोरा रह जाना पड़ता है। इसलिए तो बाल्टेयर ने 'न्यूटन' के सम्बन्ध में कहा था– "न्यूटन अपने सम्पूर्ण विज्ञान में पारंगत है, परन्तु वह यह नहीं जानता कि हाथ किस प्रकार हरकत करते हैं ।" कुछ समय पूर्व प्रत्येक चिकित्सक 'हिप्नोटिज्म' को असम्भव कहता था, परन्तु आज उसे मान्यता देकर, उसका ज्ञान प्राप्त करने में प्रयत्नशील है । हस्त-विज्ञान के सम्बन्ध में भी वही बात है । वर्षों तक डाक्टर लोग इसे ढोंग बताते रहे, परन्तु अब वे ही यह स्वीकार कर उठे हैं कि हाथ विभिन्न रोगों का संकेत देते हैं । दरअसल, हाथ की रेखाएँ अर्थहीन नहीं होतीं । जिस प्रकार चिकित्सा-शास्त्र की मान्यतानुसार कान के ऊपरी भाग में उठी हुई गाँठ पागलपन का संकेत देती है, उसी प्रकार हाथ के नाखूनों के विभिन्न आकार विभिन्न रोगों की सम्भावना का संकेत करते हैं तथा हथेली की रेखाएँ मनुष्य के जीवन में घटने वाली घटनाओं की मुँह बोलती तस्वीर होती हैं । 'हाथ की रेखाएँ काम करने से बनती हैं'– यह धारणा नितान्त मिथ्या है । जन्म के समय ही बच्चे के हाथों में रेखायें बिल्कुल स्पष्ट बनी होती हैं । हाथों द्वारा काम करने पर, उन पर त्वचा की एक मोटी तथा कच्ची तह जम जाया करती है, जो अनेक रेखाओं को छिपा देती है, रेखाओं को बनाती नहीं है । यदि किसी उपाय

से उस तह को हटा दिया जाय तो स्वाभाविक चिह्न तथा रेखायें पुनः स्पष्ट रूप में दिखाई दे सकते हैं ।

'हाथ मनुष्य-शरीर के अन्य अङ्गों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं'– अनेक विद्वानों ने यह बात स्पष्ट शब्दों में स्वीकार की है । Quintilian नामक एक विद्वान् का कहना है–'शरीर के अन्य अंग तो बोलने वाले के सहायकभर होते हैं, परन्तु हाथ सब बातों को स्वयं कह देने में समर्थ रहते हैं ।'

मेडिकल साइन्स ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हाथ में सबसे अधिक और हथेली में अन्य भागों से अधिक नसें होती हैं और वे मस्तिष्क के प्रत्येक आदेश का पालन करती रहती हैं । **"बालजक"** ने अपनी एक पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है– "हम चुप रहने के लिए होठों को तथा न देखने के लिए आँखों को बन्द कर सकते हैं । मन की भावनाओं को छिपाने के लिये भौंहों के संचालन को रोक सकते हैं तथा मस्तिष्क पर भी नियन्त्रण कर सकते हैं, परन्तु हाथों पर ऐसा अधिकार पाने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि शरीर का अन्य कोई भी अंग हाथों से अधिक भावना-सूचक नहीं होता ।"

प्रारम्भ में हाथ की विभिन्न रेखाओं का नामकरण कैसे किया गया, इस सम्बन्ध में हमें कुछ ज्ञात नहीं है, तथापि उन नामों में औचित्य तथा यथार्थता है– इसे स्वीकार करना पड़ता है । इस सम्बन्ध में केवल यही कहा जा सकता है कि आरम्भ में प्रकृति के नियम रहस्य के पर्दे में छिपे थे । समय बीतने के साथ ही मनुष्य को उन नियमों की भिन्नता ज्ञात होती गई, तब वे रहस्य नहीं रहे । बाइबिल के अनुसार– "सभी काम ईश्वर की इच्छानुसार होते हैं, मनुष्य उनमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता ।" इससे यह निष्कर्ष निकला कि कोई अदृश्य-विधान अथवा रहस्यपूर्ण अज्ञात प्रेरणा या शक्ति हमारे जीवनमार्ग को निर्धारित करती है । उस शक्ति ने ही हमारे हाथ में रेखायें उत्पन्न कर उनमें भविष्य के संकेत को छिपा रखा है और उसी के आधार पर हम उन संकेतों को पढ़ने की चेष्टा करते हैं । प्रारब्ध का सिद्धान्त किसी के काम में बाधा नहीं डालता, अपितु उसे अधिक प्रगतिशील बनाता है । वह कठिनाइयों के समय मनुष्य को धैर्य रखने, विपत्ति के समय सन्तोषी बने रहने, सफलता के समय विनम्र बने रहने तथा जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में नैतिक उच्चता बनाये रखने की प्रेरणा देता है ।

मनुष्य अपने प्रारब्ध का निर्माता भी होता है और गुलाम भी । जो वर्तमान है, उसे विगत का परिणाम समझना चाहिए तथा वर्तमान ही भविष्य का कारण भी बनता है अर्थात् गत-जीवन के कर्म वर्तमान को प्रभावित करते हैं तथा वर्तमान के कर्म भविष्य पर प्रभाव डालते हैं । यह क्रम सृष्टि के आरम्भ से चलता आ रहा है और अन्त तक इसी प्रकार चलता रहेगा। वर्तमान की भविष्य-सूचक हस्त-रेखाओं का निर्माण पूर्वकृत कर्मों के आधार पर ही हुआ होता है तथा भविष्यत् की रेखाओं का निर्माण इस जन्म के कृत्य करेंगे– 'हस्त-परीक्षा विज्ञान' इसी सिद्धान्त पर आधारित है और इसे भुलाया नहीं जा सकता । इसके सिद्धान्त मनुष्य-जाति को अपना उत्तरदायित्व समझने में समर्थ बनाते हैं, इसके द्वारा भविष्य के सम्बन्ध में चेतावनी मिलती है तथा इसी आधार पर मनुष्य स्वयं को पहिचानने में समर्थ होता है, यही इस विज्ञान की विशेषता है । इसी हेतु इसे सीखने और समृद्ध बनाने की आवश्यकता भी है ।

अपनी यथार्थता एवं सत्यता के कारण यह विज्ञान प्रोत्साहन पाने का अधिकारी है, अतः इसे स्वयं सीखना चाहिए तथा दूसरों को भी सिखाना चाहिए ।

मैंने अपने जीवन में हजारों व्यक्तियों के हाथ देखे हैं तथा उन्हें आसन्न-भविष्य के प्रति सचेत किया है । जिन लोगों ने मेरी चेतावनी को गम्भीरता से ग्रहण किया, वे लाभान्वित हुए तथा जिन्होंने उसे हँसकर उड़ा दिया, उन्हें उसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ी है । अतः इस बात पर विश्वास करना उचित ही है कि **"ईश्वर ने मनुष्य के हाथ में रेखायें इसीलिए अंकित की हैं कि वह उनके आधार पर यह जान सके कि कौन-सी प्रवृत्तियाँ उसे कष्ट देने वाली और कौन-सी सुख देने वाली हैं । हस्तरेखा-विज्ञान का यही सर्वोत्तम लाभ है । यह विज्ञान मनुष्य के लिए सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है ।"**

—कीरो

हाथ देखने की विधि

हाथ कैसे देखें ?

हस्त-परीक्षक को उचित है कि वह हाथ दिखाने वाले व्यक्ति को अपने सामने ऐसी स्थिति में बैठाये कि उसके हाथ पर रोशनी-भली-भाँति पड़े तथा सभी रेखाऐं, चिह्न आदि स्पष्ट रूप से दिखाई दें । हिन्दू विद्वानों के अनुसार प्रातःकाल का समय हस्त-परीक्षा के लिए सर्वोत्तम रहता है क्योंकि उस समय हाथ में रक्त का संचार भली-भाँति होता है, जिससे हथेली एवं रेखाओं के वास्तविक रंग का समुचित ज्ञान हो जाता है ।

जातक को भी चाहिये कि वह प्रातःकाल, स्नान के पश्चात् ही हस्त-परीक्षा करवाये क्योंकि इस समय मन शुद्ध, पवित्र तथा प्रसन्न होता है । साथ ही उसको शुभाशुभ फलादेश सुनकर किञ्चित मात्र भी विचलित न होना चाहिये बल्कि शान्त भाव से विचारों पर नियन्त्रण करते हुये सदैव श्रेष्ठतम कर्म करने का प्रयास करना चाहिये ।

हस्त-परीक्षक दोनों हाथों को भली-भाँति देखे । सूक्ष्म रेखाओं तथा चिह्नों को देखने के लिए मैगनीफ़ाइङ्ग ग्लास (आतशी शीशे) का प्रयोग करना उचित रहता है ।

सर्वप्रथम हाथ की श्रेणी का तत्पश्चात् अँगुलियों की बनावट का विचार करना चाहिए । फिर पहले बाँया, तत्पश्चात् दाँया हाथ देखकर उन दोनों के अन्तर को समझ लेना चाहिए । हाथ के प्रत्येक भाग– हथेली, करपृष्ठ, नाखून, त्वचा, रंग, अँगुलियाँ, अँगूठा तथा कलाई आदि की स्थितियों को देखना आवश्यक है । सर्वप्रथम अँगूठा देखें तत्पश्चात् हथेली की कठोरता एवं मृदुता पर ध्यान दें । फिर अँगुलियों पर अलग-अलग विचार करके, ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति को समझें । अन्त में एक-एक रेखा पर विचार करके सबके निष्कर्षस्वरूप फलादेश करें । स्मरण रखें कि हाथ की परीक्षा जितनी गहराई से की जाएगी तथा अनुभव जितना बढ़ता चला जाएगा, फलादेश भी उतना ही सटीक बैठेगा ।

हस्त-परीक्षा का सिद्धान्त

हस्त-परीक्षा के समय दोनों हाथों को देखना चाहिए । दोनों हाथ एक-दूसरे से प्रायः बिल्कुल भिन्न होते हैं । बाँया हाथ जातक के प्राकृतिक-स्वभाव को प्रदर्शित करता है तथा दाँये हाथ में जन्म के बाद प्राप्त प्रशिक्षण, अनुभव एवं वातावरण के आधार पर रेखाओं तथा चिह्नों का निर्माण होता है ।

मध्यकालीन युग में बाँया हाथ देखने की ही प्रथा थी, क्योंकि यह समझा जाता था कि हृदय के निकट होने के कारण वही जीवन को सही रूप में प्रतिबिम्बित करता है । परन्तु इस प्रथा के कारण हस्त-परीक्षा-विज्ञान की अवनति हुई, क्योंकि इससे जातक के विषय में समुचित जानकारी नहीं मिलती थी । अनुभव से ज्ञात होता है कि मनुष्य अपने दाँये हाथ को ही अधिक प्रयोग में लाता है, इसी कारण उसके स्नायुओं तथा मांसपेशियों का विकास अधिक होता है । मनुष्य-शरीर के परिवर्तन की छाप जितनी दाँये हाथ पर पड़ती है, उतनी बाँये पर नहीं पड़ती । यह बात अलग है कि जिन लोगों का बाँया हाथ अधिक सक्रिय होता है, उनके बारे में इस नियम को उल्टा समझना चाहिए । ऐसे लोगों के दाँये हाथ को जन्मजात-गुणों का प्रतीक तथा बाँये हाथ को कर्म-फल का प्रतीक समझना चाहिए । अस्तु, जिन लोगों का बाँया हाथ अधिक सक्रिय हो, उनके बाँये हाथ को तथा अन्यों के दाँये हाथ को देखना चाहिए ।

जिस व्यक्ति के हाथ की रेखाओं में अधिक परिवर्तन होते दिखाई दें, उनके जीवन को विशेष घटनापूर्ण समझना चाहिए ।

टिप्पणी- सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुषों के समान कार्य करने वाली महिलाओं के दाँये तथा घरेलू स्त्रियों के बाँये हाथ को देखना उचित रहता है। परन्तु पाश्चात्य मतानुसार चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री, उसके सक्रिय (अधिक काम करने वाले) हाथ को ही देखना चाहिए ।

कीरोनोमी तथा कीरोमेन्सी

पूर्व-इतिहास

'कीरो' ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है– हाथ । प्रसिद्ध हस्तरेखा विद् 'कीरो' के जन्म से भी बहुत पहले से हस्तरेखा सम्बन्धी पुस्तकों में इस शब्द का प्रयोग होता आया है ।

13 मार्च सन् 1798 ई. को फ्रांस के नारमण्डी नामक स्थान में जन्मे 'कैसीमीर स्टेनिसलास द आरपेण्टिगनी' नामक एक व्यक्ति ने सैनिक-सेवा में रहते हुए सन् 1844 ई. में अवकाश लिया था । जिन दिनों वह सेना में कार्यरत था, उन्हीं दिनों उसकी भेंट एक युवा जिप्सी से हुई थी जिसने उसका हाथ देखकर, उसके जीवन के सम्बन्ध में कुछ ऐसी बातें बताई थीं, जिन्हें सुनकर वह आश्चर्यचकित रह गया था । उसी दिन से आरपेण्टिगिनी ने स्वयं भी हस्त-परीक्षा विषय में रुचि लेना आरम्भ कर दिया तथा अपने मित्रों के हाथों का अध्ययन करने लगा । हाथों को देखते समय उसने यह अनुभव किया कि इन्जीनियर अथवा वैज्ञानिकों के हाथ चौकोर तथा गाँठदार होते हैं एवं चित्रकार अथवा कविता लिखने वालों के हाथ चिकने होते हैं और उनकी अँगुलियाँ अग्रभाग की ओर नुकीली होती हैं । यह अन्तर समझ में आते ही उसने मनुष्य के हाथ की बाहरी रूपरेखा के आधार पर हाथ के अध्ययन पर अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया तथा अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर एक नये सिद्धान्त का आविष्कार किया, जिसमें समस्त मनुष्यों के हाथों को कुछ मौलिक वर्गों में रखा जा सकता है ।

आरपेण्टिगिनी का शोध-प्रबन्ध सन् 1839 ई. में प्रकाशित हुआ था। आरपेण्टिगिनी के ही सिद्धान्तों में फ्रांस के सुप्रसिद्ध हस्तरेखा विशेषज्ञ डेसबारोल्स ने कुछ संशोधन तथा परिवर्द्धन किये थे ।

हाथ की समुचित परीक्षा के लिए इस विज्ञान की दोनों शाखाओं– (1) कीरोनोमी (Cheironomy) तथा (2) कीरोमेन्सी (Cheiromancy)

का प्रयोग आवश्यक है । 'कीरोनोमी' द्वारा हाथ तथा अँगुलियों की बनावट एवं उनके आकार, गठन आदि के आधार पर किसी मनुष्य के चरित्र की पहिचान की जा सकती है तथा 'कीरोमेन्सी' द्वारा हाथ की रेखाओं तथा अन्य चिह्नों के माध्यम से जातक के जीवन में घटने वाली भूत, वर्तमान एवं भविष्यत् कालीन घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है ।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रथम भाग की जानकारी के बिना दूसरे भाग का अध्ययन निष्फल रहता है । अतः हाथ का अध्ययन करते समय हथेली की रेखाओं तथा चिह्न आदि से पूर्व हाथ तथा अँगुलियों की बनावट, उनके आकार, त्वचा, नाखून, रंग आदि पर विचार करना आवश्यक है ।

हाथ की संरचना

कलाई से लेकर अँगुलियों के अन्तिम छोरों तक के भाग को 'हाथ' कहा जाता है । हाथ की जड़ अर्थात् कलाई से जुड़े भाग में छोटी-छोटी 8 हड्डियाँ होती हैं । इस आधार-स्थल से पाँच लम्बी तथा सीधी हड्डियाँ निकलती हैं, जिन्हें 'करमास्थि' कहा जाता है । ये पाँचों हड्डियाँ हथेली की रचना का मूलाधार होती हैं । इन करमास्थियों के ऊपर चौदह अँगुलि-अस्थियाँ होती हैं, जो अँगूठे में दो तथा प्रत्येक अँगुलि में तीन-तीन पाई जाती हैं । प्रत्येक अँगुल्यास्थि अँगुली के एक पर्व का निर्माण करती है । इसी कारण प्रत्येक अँगुली में तीन तथा अँगूठे में दो पर्व होते हैं।

सामान्यतः हथेली से जुड़े हुए अँगुलियों के निचले पर्व को प्रथम पर्व तथा नाखून वाले ऊपरी पर्व को तृतीय पर्व कहा जाता है। परन्तु 'हस्त-परीक्षा विज्ञान' में नाखून वाले पर्व को 'प्रथम' तथा हथेली से जुड़े पर्व को 'तृतीय' मानते हैं । इन दोनों के बीच वाले पर्व को 'द्वितीय' अथवा 'मध्यस' कहा जाता है ।

हाथ के सीधे भाग को, जिस पर विभिन्न प्रकार की रेखायें होती हैं, 'हथेली' अथवा 'करतल' कहा जाता है तथा उल्टे (पिछले) भाग को, जिस पर नाखून तथा बाल होते हैं, 'करपृष्ठ' के नाम से पुकारा जाता है।

अँगुलियाँ

हाथ की अँगुलियों की संख्या चार होती है । अँगूठे को उनसे भिन्न

माना जाता है । परन्तु किसी-किसी हाथ में अपवाद स्वरूप पाँच अँगुलियाँ अथवा दो अँगूठे भी पाये जाते हैं । ऐसे हाथ वाले मनुष्य को 'छंगा' कहा जाता है । हस्त-परीक्षा के समय पाँचवीं अँगुली अथवा दूसरे अँगूठे के सम्बन्ध में कोई विचार नहीं किया जाता ।

(करपृष्ठ और उसके भाग)

लम्बाई— कलाई की हड्डी से लेकर मध्यमा (बीच वाली) अँगुली की जड़ की गाँठ तक जितनी लम्बाई हो, उतनी ही लम्बाई यदि मध्यमा अँगुली की भी हो तो अँगुलियाँ 'सामान्य लम्बाई' की मानी जाती हैं । अर्थात् कलाई की हड्डी से मध्यमा अँगुली की जड़ की गाँठ तक जितना विस्तार हो, मध्यमा अँगुली अपनी जड़ की गाँठ से लेकर नाखून के अन्तिम छोर तक आकार में यदि उतनी ही लम्बी हो तो उसे 'सामान्य लम्बी' कहा जायेगा । परन्तु यदि मध्यमा की लम्बाई इससे अधिक हो तो अँगुलियों को 'लम्बा' और कम हो तो 'छोटा' समझा जायेगा । अँगुलियों की लम्बाई का नाप हमेशा करपृष्ठ की ओर से ही लेना चाहिए । यद्यपि अँगुलियों की लम्बाई का करतल से कोई सम्बन्ध नहीं होता, तथापि अँगुलियों की लम्बाई के पारस्परिक अनुपात पर विचार करना आवश्यक है ।

सभी अँगुलियों में बीच वाली 'मध्यमा' नामक दूसरी अँगुली सबसे लम्बी होती है । अँगूठे के प्रास वाली 'तर्जनी' नामक पहली अँगुली तथा मध्यमा से अगली 'अनामिका' नामक तीसरी अँगुली– ये दोनों अँगुलियाँ मध्यमा से आधा पर्व छोटी होती है अर्थात् इनकी लम्बाई मध्यमा के प्रथम पर्व के आधे भाग तक आती है, तथापि अनामिका की लम्बाई तर्जनी के मुकाबिले कुछ अधिक होती है । 'कनिष्ठिका' नामक चौथी अर्थात् अन्तिम अँगुली सबसे छोटी होती है । यह सामान्यतः अनामिका के दूसरे पर्व तक पहुँचती है ।

अँगुलियों की लम्बाई के सम्बन्ध में उपर्युक्त नियम 'सामान्य' है । वे इससे छोटे-बड़े आकार की भी हो सकती हैं । सामान्य से कम अथवा अधिक आकार वाली विभिन्न अँगुलियों का प्रभाव निम्नानुसार निरूपित किया गया है–

(1) तर्जनी— यदि तर्जनी अँगुली मध्यमा के बराबर लम्बी हो तो जातक में हुकूमत करने की भावना प्रबल होती है । यदि अन्य लक्षण भी शुभ हों तो उसे हुकूमत करने का अवसर भी मिलता है । ऐसी अँगुली वाला व्यक्ति हजारों लोगों को अपने अनुशासन में रख सकता है । साथ ही कुछ घमण्डी भी होता है । ऐसी अँगुली वाले लोग प्रायः राजनेता अथवा धर्म-नेता होते हैं ।

यदि तर्जनी मध्यमा से भी अधिक लम्बी हो तो जातक में घमण्ड एवं प्रभुत्व-प्राप्ति की आकांक्षा अत्यधिक बढ़ जाती है और वह स्वयं को विश्व में सर्वश्रेष्ठ समझने लगता है । नेपोलियन बोनापार्ट की तर्जनी अँगुली ऐसी ही थी । ऐसी अँगुली वाले तानाशाह होते हैं ।

यदि तर्जनी की लम्बाई सामान्य से कम हो तो जातक भीरु-स्वभाव का होता है तथा उसमें महत्वाकांक्षा नहीं पाई जाती ।

तर्जनी अँगुली को 'वृहस्पति की अँगुली' भी कहा जाता है, क्योंकि इसके नीचे ही 'वृहस्पति के पर्वत' अर्थात् 'गुरु-क्षेत्र' की अवस्थिति होती है ।

यदि तर्जनी की लम्बाई अनामिका से अधिक हो तो जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी होता है, परन्तु यदि दोनों अँगुलियाँ एक बराबर लम्बी हों, तो यश एवं धन की लिप्सा अधिक होती है । यदि तर्जनी अँगुली अनामिका से छोटी हो तो जातक में कोई महत्वाकांक्षा नहीं पाई जाती । वह प्रत्येक स्थिति में सन्तुष्ट बना रहता है ।

(2) मध्यमा— यदि मध्यमा अँगुली अनामिका से बहुत अधिक बड़ी हो तो जातक महत्वाकांक्षी होने की बजाय निराशावादी होता है, फलतः उसे जीवन में सफलताऐं नहीं मिलतीं । यही अँगुली यदि तर्जनी से बहुत लम्बी हो तो जातक उदासीन एवं दुःखी रहता है । यदि तर्जनी से छोटी हो तो पागल हो जाने की सम्भावना रहती है ।

यदि मध्यमा अनामिका के बराबर की हो तो जातक जुआरी अथवा सटोरिया होता है और यदि अनामिका से छोटी हो तो अपनी बेवकूफियों के कारण व्यवसाय में घाटा उठाता है ।

मध्यमा को शनि की अँगुली भी कहा जाता है, क्योंकि इसके नीचे ही 'शनि के पर्वत' अर्थात् 'शनि-क्षेत्र' की अवस्थिति होती है ।

मध्यमा अँगुली भारी तथा वर्गाकार हो तो जातक अस्वस्थ प्रकार के गम्भीर स्वभाव वाला होता है । यह अँगुली नुकीली हो तो वह छिछोरा एवं निष्ठुर भी होता है । मध्यमा का अग्रभाग चमकदार हो तो जातक ओजस्वी वक्ता, प्रभावशाली धर्मोपदेशक अथवा सफल अभिनेता बनता है।

(3) **अनामिका**— यदि अनामिका अँगुली तर्जनी से अधिक लम्बी हो तो जातक साहित्य एवं कला का प्रेमी होता है, परन्तु उसकी महत्वाकांक्षाऐं कम होती हैं । यदि ये दोनों अँगुलियाँ बराबर की हों तो कलात्मक प्रवृत्ति द्वारा यश एवं धन प्राप्ति की लिप्सा बनी रहती है । यदि अनामिका अँगुली तर्जनी से छोटी हो तो जातक स्वयं को बहुत योग्य समझता है तथा आतंकपूर्ण कार्य भी कर सकता है ।

यदि अनामिका अँगुली मध्यमा के बराबर लम्बी हो तो जातक जीवन को जुए जैसा समझता है तथा कलात्मक-रुचि के साथ-साथ गुणी एवं चतुर भी होता है । वह सफलता-प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाने को तैयार बना रहता है ।

अनामिका को 'सूर्य की अँगुली' भी कहा जाता है, क्योंकि इसके नीचे ही 'सूर्य के पर्वत' अर्थात् 'सूर्य-क्षेत्र' की अवस्थिति होती है ।

अनामिका अँगुली यदि मध्यमा से भी बड़े आकार की हो तो जातक व्यावसायिक-क्षेत्र में भारी जोखिम उठाने वाला होता है, फलस्वरूप उसे कभी लम्बा मुनाफा तो कभी भारी घाटा हो सकता है ।

यदि अनामिका अँगुली मध्यमा से बहुत छोटी हो तो जातक निराशा-वादी स्वभाव का होने के कारण जीवन में उन्नति नहीं कर पाता।

यदि अनामिका कनिष्ठिका अँगुली से तुलनात्मक रूप में अधिक लम्बी हो तो जातक साहित्य, संगीत, कला आदि के क्षेत्रों में यशस्वी तथा उनसे लाभ उठाने वाला होता है । यदि ये दोनों अँगुलियाँ समान आकार की हों तो अपने विषय में दक्ष तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है ।

(4) **कनिष्ठिका**— यदि कनिष्ठिका अँगुली सुगठित, उत्तम आकार की तथा लम्बी हो तो वह अँगूठे के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में सन्तुलन का कार्य करती है । ऐसी अँगुली वाला जातक दूसरों को शीघ्र प्रभावित कर लेता है ।

यदि कनिष्ठिका अँगुली तर्जनी अँगुली के बराबर लम्बी हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ होता है तथा छल-प्रपंच द्वारा अपना काम निकालने में समर्थ हो जाता है ।

यदि कनिष्ठिका मध्यमा के बराबर लम्बी हो तो जातक को विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता प्राप्त होती है । यदि कनिष्ठिका अनामिका के बराबर हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता एवं वाक्पटु होता है ।

कनिष्ठिका को 'बुध की अँगुली' भी कहा जाता है, क्योंकि इसके नीचे ही 'बुध का पर्वत' अर्थात् 'बुध-क्षेत्र' की अवस्थिति होती है ।

यदि कनिष्ठिका अँगुली अनामिका के नाखून तक पहुँचती हो तो जातक ओजस्वी वक्ता अथवा प्रतिभाशाली लेखक होता है । वह सर्वगुण-सम्पन्न तथा प्रत्येक विषय पर बात करने की योग्यता रखने वाला होता है ।

आकृति— प्रत्येक अँगुली की आकृति में मुख्यतः दो बातों को देखा जाता है— (1) पहले अर्थात् नाखून वाले पर्व की बनावट तथा (2) दोनों पर्वों पर स्पष्ट दीखने वाली गाँठों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति ।

आकृति के अनुसार 'अँगुलियों के प्रथम पर्व' अर्थात् अग्रभाग चार प्रकार के होते हैं—(1) नोकीले अथवा शुण्डाकार (Pointed) । इसमें अँगुली जड़ से लेकर प्रथम पर्व के अन्त तक हाथी की सूँड़ की भाँति क्रमशः नुकीली होती चली जाती है । (2) शंक्याकार (Conical) । ऐसी अँगुलियाँ मोमबत्ती की भाँति गोल होती हैं । इनके प्रत्येक पर्व की गोलाई तंग होती चली जाती है और अग्रभाग शंकु (Cone) जैसी आकृति का होता है । (3) चौकोर (Square) । इस प्रकार की अँगुलियों की चौड़ाई जड़ से लेकर प्रथम पर्व तक लगभग एक जैसी होती है तथा इनका प्रथम पर्व का छोर चौकोर अथवा अर्द्धचन्द्राकारयुक्त चौकोर होता है । (4) चमसाकार (Spatulate) । ऐसी अँगुलियों की चौड़ाई जड़ से द्वितीय पर्व तक एक जैसी होती है, परन्तु पहले पर्व पर अधिक चौड़ी हो जाती है, जिसकी उपमा डाक्टरों के यहाँ मरहम बनाने के काम आने वाले 'स्पैचुला' नामक उपकरण अथवा छोटे चौकोर चम्मच के अग्रभाग से दी जा सकती है ।

शुण्डाकार अर्थात् नोकीली अँगुलियों वाले व्यक्ति अत्यधिक

कल्पनाशील होते हुए भी अपनी कल्पना को मूर्त रूप नहीं दे पाते । शंखाकार अँगुलियों वाले मनुष्यों की कल्पनाशक्ति एवं विवेक-बुद्धि– दोनों ही उत्तम होती हैं ।

चौकोर अँगुलियों वाले प्रखर विवेक-बुद्धि-सम्पन्न तथा नियमों के पाबन्द होते हैं, जबकि चमसाकार अँगुलियों वालों में कल्पना-शक्ति तथा तर्क-शक्ति कम पाई जाती है और वे अपने कर्म में ही विश्वास रखने वाले होते हैं ।

लम्बी अँगुलियों वालों की प्रवृत्ति अत्यधिक विश्लेषणात्मक अर्थात् गहराई एवं विस्तार में जाने वाली होती है । छोटी अँगुलियों वाले बहुत जल्दबाज होते हैं । वे तुरन्त निर्णय लेते हैं और बात-चीत में मुँहफट भी होते हैं । मोटी,बेडौल साथ ही छोटी अँगुलियों वाले स्वार्थी तथा क्रूर स्वभाव के होते हैं ।

तनी तथा भीतर की ओर मुड़ी हुई अथवा स्वाभाविक रूप से संकुचित अँगुलियों वाले अल्पभाषी,कायर, अत्यन्त सावधान तथा कम मेज-जोल रखने वाले होते हैं । लचकदार तथा पीछे की ओर धनुषवत् मुड़ी अँगुलियाँ वाले आकर्षक, मिष्ठभाषी तथा चतुर होते हैं । उन्हें हर बात जानने की उत्सुकता बनी रहती है ।

टेढ़ी-मेढ़ी तथा विकृत अँगुलियों वाले धोखेबाज, अविश्वसनीय तथा पर-निन्दक होते हैं । अच्छी हथेली पर ऐसी अगुलियाँ प्रायः नहीं होतीं, परन्तु यदि हों तो ऐसा जातक उपहास का पात्र बना रहता है ।

यदि अँगुली के अग्रभाग पर भीतर की ओर गोल मांसल गद्दी-सी हो तो जातक अत्यधिक सम्वेदनशील, व्यवहार-कुशल तथा दूसरों का भला चाहने वाला होता है ।

यदि अँगुलियाँ अपने मूल-स्थान (जड़) में अधिक मोटी तथा फूली हुई हों तो जातक अच्छे खाने-पीने तथा रहन-सहन का शौकीन होता है । वह अन्यों की अपेक्षा अपना आराम पहले चाहता है ।

यदि अगुलियाँ अपने मूल-स्थान (जड़) में कमर की भाँति पतली हों तो जातक खान-पान में सावधान, अपनी पसन्द की वस्तुओं में रुचि रखने वाला तथा स्वार्थ-हीन होता है ।

यदि सभी अँगुलियों के खोलने पर तर्जनी तथा मध्यमा के बीच

अधिक अन्तर हो तो जातक स्वतन्त्र-विचारक होता है और यदि मध्यमा एवं अनामिका के बीच अधिक अन्तर हो तो स्वतन्त्र रूप से कार्य करने वाला होता है ।

जोड़ और गाँठें— अँगुलियों के पर्व जहाँ परस्पर मिलते हैं, उस स्थान को 'जोड़' कहा जाता है । इन जोड़ वाले स्थानों पर ही गाँठें होती हैं जो कुछ हाथों में तो माँस से ढँकी होने के कारण दिखाई नहीं देतीं और कुछ में दिखाई देती हैं ।

जिन अँगुलियों में गाँठें दिखाई नहीं देतीं, उन्हें 'चिकनी' कहा जाता है । चिकनी अँगुलियों वाले जातक आवेशात्मक-प्रवृत्ति के होते हैं । वे अपने निर्णयों पर विवेचनात्मक-शक्ति का प्रभाव नहीं पड़ने देते और परिणाम पर विचार किए बिना तत्काल ही कोई भी कदम उठा बैठते हैं। वर्गाकार हाथ में यह अवगुण कुछ कम हो जाता है, तथापि पूरी तरह दूर नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी वैज्ञानिक की अँगुलियाँ वर्गाकार हों, परन्तु जोड़ चिकने हों तो वह किसी निष्कर्ष पर तो तुरन्त पहुँच जाएगा, परन्तु कार्य-प्रणाली का पूर्ण विवेचन करने में अक्षम रहेगा । इसी प्रकार चिकित्सक भी रोग का निदान तो तुरन्त कर लेगा, परन्तु औषध के उचित-चयन में प्रायः असमर्थ रहेगा । इसी कारण गाँठदार वर्गाकार अँगुलियों वाले व्यक्तियों की अपेक्षा ऐसी अँगुलियों वाले प्रायः अधिक गलतियाँ करते हैं । नोकीली तथा चिकने जोड़ों वाली अँगुलियाँ
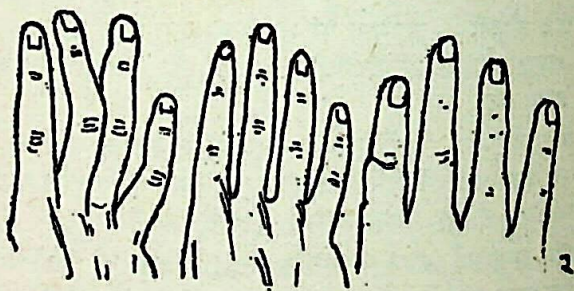
(विभिन्न प्रकार की अँगुलियाँ, उनके जोड़ और गाँठें)

अन्तर्ज्ञान (Intution) की सूचक होती हैं । ऐसे लोग किसी विषय पर

विस्तार से विवेचन करने का कष्ट नहीं उठाते । वे कपड़े पहनने में लापरवाह होते हैं तथा उनके व्यवसाय में भी अव्यवस्था बनी रहती है । उनके आवश्यक कागजात भी यथास्थान नहीं रह पाते । ऐसे लोग स्वयं लापरवाह होते हुए भी दूसरों को व्यवस्थित रूप से काम करते देखना पसन्द करते हैं ।

अँगुलियों के जोड़ यदि गाँठदार हों तो जातक की कार्यप्रणाली व्यवस्थित होती है । वह प्रत्येक बात पर गहराई से विचार करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है । ऐसे लोग विवेकी, विचारवान्, विश्लेषक तथा अधिक यथार्थवादी होते हैं । यदि किसी वैज्ञानिक का हाथ वर्गाकार हो तथा उसकी अँगुलियाँ गाँठदार हों तो वह अपने कार्य का सूक्ष्म-विवेचन करते हुए समय की चिन्ता नहीं करेगा तथा हर प्रकार की अव्यवस्था को नापसन्द करेगा । ऐसे लोग अपनी वेश-भूषा तथा रहन-सहन में भी बहुत सावधानी बरतते हैं । ऐसे लोग ही आवेश पर नियन्त्रण रखने में सक्षम होते हैं ।

झुकाव– यदि अगुँलियाँ दृढ़ तथा सीधी हों तो जातक प्रत्येक कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से करता है । यदि अँगुलियाँ आगे की ओर झुकती हों तो जातक सावधान प्रकृति का तथा नवीन विचारों को बहुत सोच-समझकर ही ग्रहण करने वाला होता है । यदि अँगुलियाँ पीछे की ओर झुकती हों तो जातक खुले स्वभाव का (स्पष्टवादी) होता है, भले ही इस कारण उसे हानि ही क्यों न उठानी पड़े ।

अँगूठा

हस्त-परीक्षा में अँगूठे का अपना महत्वपूर्ण स्थान है । केवल अँगूठे के आधार पर ही जातक के चरित्र, स्वभाव तथा कार्य-शैली का ज्ञान हो सकता है ।

ईसाई धर्म के अनुसार अँगूठा ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है । अँगूठे को प्रथम अँगुली के रूप में 'जीसस क्राइस्ट' भी माना गया है, जो ईश्वर की इच्छा को अभिव्यक्त करती है । अपनी स्थिति के आधार पर अन्य अँगुलियों की अपेक्षा इसकी स्वतन्त्र-सत्ता है । मस्तिष्क में अँगूठे का एक अलग केन्द्र है जिसे Thumb cuntre of the brain कहा जाता है । लोक-प्रचलित मान्यता है कि यदि शिशु जन्म के सात दिन बाद भी

अपने अँगूठे को अँगुलियों के बीच दबाये रहे तो वह शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से निर्बल होता है । कमजोर मन वाले लोगों के अँगूठे निर्बल होते हैं । जो व्यक्ति अपने अँगूठे को अँगुलियों से दबाकर काम करता हो, उसमें आत्म-विश्वास की कमी समझनी चाहिए । अँगूठा जितना ऊँचा तथा अनुपात में अच्छा हो, जातक की बौद्धिक क्षमताऐं उतनी ही अधिक उन्नत होती हैं । इसके विपरीत परिणाम भी उल्टा होता है ।

छोटे, बेडौल, बेढंगे तथा मोटे अँगूठे वाला व्यक्ति उद्दण्ड, असभ्य तथा क्रूर-स्वभाव का होता है । पाशविकता उसकी प्रकृति का प्रमुख अङ्ग होती है । इसके विपरीत लम्बे तथा अच्छे आकार के अँगूठे वाला जातक सुसंस्कृत, सभ्य तथा उच्च बौद्धिक-स्तर वाला होता है ।

छोटे तथा मोटे अँगूठे वाला जहाँ आकांक्षा-पूर्ति हेतु अपनी पाशविक-शक्ति का प्रदर्शन करता है, वहीं लम्बे तथा अच्छे अँगूठे वाला बौद्धिक-शक्ति को उपयोग में लाता है ।

जो अँगूठा लम्बा, हाथ में मजबूती से जुड़ा हुआ तथा हथेली से सीधे कोण वाला हो, उसे शुभ माना गया है । उसका ढलान अँगुलियों की ओर रहे, परन्तु ऊपर गिरे नहीं । यदि अँगूठा हथेली से दूर सीधे कोण में होता है तो जातक सीमाओं का उल्लंघन कर, एकदम स्वतन्त्र स्वभाव का बन जाता है । ऐसे व्यक्ति पर नियन्त्रण पाना कठिन होता है, क्योंकि उसे विरोध कतई बर्दाश्त नहीं होता और वह आक्रामक तथा उद्दण्ड बन जाता है ।

यदि अँगूठा नीचे की ओर गिरा हुआ तथा अँगुलियों की ओर इंठा हुआ-सा हो तो जातक में स्वतन्त्र बनने की क्षमता नहीं रहती । उसके मन पर किन विचारों तथा भावनाओं का अधिकार होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता ।

लम्बा अँगूठा अपने प्रतिस्पर्धी को अपनी बौद्धिक-योग्यता द्वारा पराजित करने का प्रयत्न करता है, परन्तु छोटा एवं मोटा अँगूठा हिंसात्मक योजना बनाकर अवसर की प्रतीक्षा करता रहता है । इन दोनों प्रकारों से भिन्न पुष्ट अँगूठा जातक को गौरवान्वित तथा प्रतिष्ठित बनाता है । ऐसे जातक की इच्छाशक्ति प्रबल होती है तथा उसमें उचित निर्णय लेने की क्षमता भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती है ।
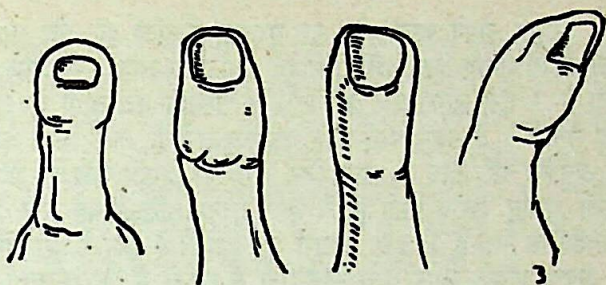
(विभिन्न प्रकार के अँगूठे)

उक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि (1) अच्छी बनावट वाला लम्बा अँगूठा बौद्धिक इच्छाशक्ति प्रधान होता है, (2) छोटा-मोटा अँगूठा पाशविक-शक्ति तथा हठधर्मी का परिचायक होता है एवं (3) छोटा तथा निर्बल अँगूठा इच्छाशक्ति की कमी तथा कार्यशक्ति की अपर्याप्तता का सूचक होता है ।

भाग— अँगूठे का पहला भाग इच्छा-शक्ति का, दूसरा भाग, तर्क-शक्ति का तथा तीसरा भाग, (जहाँ से कि शुक्र-क्षेत्र आरम्भ होता है) प्रेम का सूचक माना गया है। पहला भाग अत्यधिक लम्बा हो तो जातक तर्कशक्ति अथवा युक्तिसंगतता पर तनिक भी निर्भर नहीं रहता, उसे केवल अपनी इच्छाशक्ति पर ही भरोसा होता है, अतः उसी का प्रयोग करता है। दूसरा भाग पहले भाग से अधिक लम्बा हो तो जातक शान्ति-प्रिय होता है एवं प्रत्येक कार्य को युक्ति-संगत ढङ्ग से करने की इच्छा रखते हुए भी दृढ़ निश्चयी तथा इच्छा-शक्ति-सम्पन्न नहीं होता । तीसरा भाग यदि लम्बा हो और अँगूठा छोटा हो तो जातक की प्रवृत्ति विषय-वासना की ओर अधिक रहती है ।

कठोरता एवं लचीलापन— अँगूठे पर विचार करते समय उसके कड़ेपन तथा लचीलेपन पर विचार करना चाहिए । अँगूठा यदि लचीला होगा तो वह पीछे की ओर मुड़कर मेहराब जैसा आकार ग्रहण कर लेगा, परन्तु यदि कठोर हुआ तो पहले पर्व को दबाने पर भी उसे पीछे की ओर नहीं मोड़ा जा सकता । ये दोनों गुण एक-दूसरे से विपरीत स्वभाव के द्योतक हैं ।

अँगूठा अपने पहले जोड़ पर सरलता से पीछे की ओर मुड़ जाने वाला हो तो जातक कल्पनाशील, भावुक तथा उदार स्वभाव का फिजूलखर्ची होता है । ऐसे लोग स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति एवं लोगों के अनुकूल बना लेते हैं । वे सबमें भली-भाँति घुलमिल जाते हैं, अतः किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता । परन्तु जिन लोगों का अँगूठा पीछे की ओर नहीं मुड़ता अर्थात् बेलोच होता है, वे प्रबल इच्छा-शक्ति-सम्पन्न तथा अधिक व्यावहारिक होते हैं । उनमें हठपूर्ण दृढ़ता होती है तथा वे चुप रहते हुए ही अपना प्रत्येक कदम ऐसी सावधानी से उठाते हैं कि सफलता उनके चरण चूमती है । ऐसे अँगूठे वाले लचीले अँगूठे वालों की तरह अपने विचारों में बारम्बार परिवर्तन नहीं करते । जब वे किसी निष्कर्ष पर पहुँच लेते हैं, तब अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हठ-धर्मिता की सीमा तक भी जा पहुँचते हैं तथा विरोधी को कुचल कर ही दम लेते हैं । वे प्राण दे सकते हैं, परन्तु पीछे नहीं हटते । ऐसे लोगे ही शक्ति शाली शासक बन पाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि पीछे की ओर झुकाव वाले लचीले अँगूठे का स्वामी अत्यधिक भावुक, उदार, अपव्ययी तथा कल्पनाशील होने के कारण अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रायः असफल रहता है तथा कठोर अँगूठे वाला परिश्रमी, मितव्ययी तथा सांसारिक-कार्यों में दक्ष एवं सफल होता है । साथ ही उसमें सौन्दर्य अथवा कला के प्रति आकर्षण, प्रेम-प्रदर्शन एवं वैचारिक-व्यापकता आदि गुण नहीं पाये जाते।

विशेष— अँगूठे का पहला पर्व सामान्य से अधिक लम्बा हो तो जातक अपनी इच्छानुसार कार्य करता है । यह पर्व यदि बहुत छोटा तथा कमजोर हो एवं शुक्र का क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो जातक असंयमी एवं विषयी होता है । ऐसी स्त्री पर-पुरुष के बहकावे में शीघ्र आ जाती है । पहला पर्व बलिष्ठ हो तो विचारों में दृढ़ता होती है । पहला पर्व मोटा तथा भारी हो एवं उसका नाखून चपटा हो तो जातक अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है । यदि अँगूठे का अग्रभाग 'गदा' के आकार का हो तो जातक क्रोध के आवेश में उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता । अँगूठे की पहली तथा दूसरी गाँठ सख्त हो तो भी जातक क्रोधी एवं हिंसक स्वभाव का होता है । पहला पर्व चपटा हो तो शान्त प्रकृति का होता है।

अँगूठे का दूसरा पर्व बीच से पतला हो तो जातक नीति-कुशल तथा व्यवहार में चतुर होता है । परन्तु यदि अत्यधिक पतला हो तो उसे अच्छा लक्षण नहीं समझना चाहिए । ऐसे व्यक्ति स्नायविक-दुर्बलता के शिकार होते हैं । यदि द्वितीय पर्व अधिक लम्बा हो तो जातक प्रत्येक विषय पर लम्बी बात करने वाला तथा अविश्वासी-स्वभाव का होता है। यदि लम्बाई सामान्य हो तो तर्क-शक्ति उत्तम होती है । यदि पर्व छोटा हो तो तर्क-शक्ति निर्बल एवं बहुत छोटा हो तो बौद्धिक-क्षमता दुर्बल होती है ।

स्मरणीय है कि अँगूठे की बनावट के साथ ही हाथ कोमलता एवं कठोरता कों भी ध्यान में रखना चाहिये । यदि जातक का हाथ कठोर एवं सुगठित हो और उसमें अँगूठे का पर्व भली-भाँति विकसित भी हो तो ऐसा जातक कोमल हाथ वाले की तुलना में अधिक दृढ़निश्चयी तथा क्रियाशील होता है ।

यदि अँगूठा सब प्रकार से अच्छा हो, परन्तु हथेली कोमल हो तो जातक कभी धीमी और कभी तीव्र गति से काम करता है तथा उसको कार्य-पूर्ति में सन्देह ही रहता है ।

नाखून

नाखून के द्वारा जातक के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है । ये नाखून अँगूठे तथा अँगुलियों के प्रथम पर्व में पीछे की ओर होते हैं । इन्हें चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है—

(1) लम्बे, (2) छोटे, (3) चौड़े तथा (4) संकीर्ण ।

लम्बे नाखूनों की अपेक्षा छोटे नाखून अधिक शारीरिक-शक्ति के प्रतीक होते हैं । अधिक लम्बे नाखून वालों को छाती तथा फेंफड़े से सम्बन्धित रोग होने की सम्भावना रहती है । यदि ऐसे नाखून अपने ऊपरी भाग के पीछे की ओर, अँगुली की ओर अथवा अँगुली के आर-पार टेढ़े (वक्र) हो गए हों तो इस प्रवृत्ति में वृद्धि हो जाती है । यदि नाखूनों पर धारियाँ बन गई हों अथवा वे उभरे हुए बन गए हों तो इस प्रवृत्ति को और भी अधिक समझना चाहिए । इस प्रकार के नाखून यदि कुछ छोटे आकार के हों तो जातक को कण्ठ सम्बन्धी रोग—लेरिन्जाइटिस, दमा एवं श्वास-नली का शोथ आदि होते हैं । लम्बे नाखूनों वालों को शरीर के ऊपरी भागों फेफड़ा, छाती एवं सिर सम्बन्धी रोग होने की अधिक सम्भावना रहती है।

यदि लम्बे नाखून अपने ऊपरी अन्तिम भाग में अधिक चौड़े हों तथा उनमें नीलापन भी हो तो उसे शरीर के रक्त-संचरण में दोष का सूचक समझना चाहिए । ये स्नायु मण्डल की थकान के द्योतक भी हो सकते हैं। स्त्रियों को ऐसी परिस्थिति का सामना प्रायः 14, 21, 42 तथा 47 वर्ष की आयु में करना पड़ता है ।
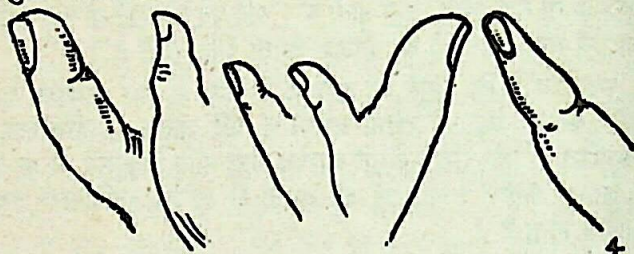
(नाखूनों के विविध प्रकार)

जिन परिवारों में हृदय-रोग की प्रवृत्ति होती है, उनके सभी सदस्यों के नाखून प्रायः छोटे आकार के होते हैं । छोटे नाखून वाले लोग लम्बे नाखून वालों की अपेक्षा हृदय-रोग तथा धड़ एवं निचले अङ्गों को प्रभावित करने वाले रोगों के शिकार अधिक बनते हैं ।

यदि छोटे नाखून अपने मूल स्थान पर पतले और चपटे हों तथा उनमें चन्द्र का आकार बहुत छोटा हो अथवा बिल्कुल ही न हो तो ऐसा व्यक्ति हृदय-रोग से पीड़ित रहता है । परन्तु यदि चन्द्र-चिह्न बड़े हों तो रक्त-संचार की गति ठीक रहती है एवं जातक का हृदय बलवान् होता है।

यदि बहुत चपटे नाखून अपने किनारों पर मुड़े हों अथवा ऊपर की ओर उठे हों तो उन्हें पक्षाघात होने का सूचक समझना चाहिए ।

जिन लोगों के नाखूनों पर स्नायविक-धब्बे होते हैं, वे बहुत शीघ्र घबड़ा जाते हैं अथवा आवेश में आ जाते हैं । पतले तथा छोटे नाखून दुर्बल स्वास्थ्य के सूचक होते हैं । बहुत संकीर्ण, लम्बे, ऊँचे तथा मुड़े हुए नाखूनों को रीढ़ सम्बन्धी रोग का द्योतक समझना चाहिए ।

छोटे नाखून वालों की अपेक्षा लम्बे नाखून वाले अधिक आदर्शवादी, विनम्र, शान्त, मधुर भाषी तथा कम आलोचक प्रवृत्ति के होते हैं । वे विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान कर लेते हैं तथा सामान्य बातों के लिए

विशेष चिन्तित नहीं होते । संगीत तथा कला के क्षेत्र में भी रुचिवान होते हैं । अधिक लम्बे नाखूनों वाले स्वप्नदर्शी, काल्पनिक होते हैं ।

छोटे और चौड़े नाखूनों वाले आलोचनात्मक प्रवृत्ति के होते हैं, परन्तु वे युक्ति संगत होने के साथ ही, शीघ्र निर्णय लेने वाले, कार्य की सम्पन्नता के लिए त्वरित प्रयत्नशील, बहस करने में रुचि लेने वाले तथा स्पष्टवादी होने के कारण मुँहफट भी होते हैं, तथापि अव्यावहारिक नहीं होते ।

लम्बाई की अपेक्षा नाखूनों की चौड़ाई अधिक हो तो जातक अत्यधिक झगड़ालू स्वभाव का होता है । वह दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करने का आदी भी होता है ।

किसी व्यक्ति को नाखून चबाने की आदत हो तो उसे नर्वस स्वभाव का तथा सामान्य-सी बात पर चिन्तित होने वाला समझना चाहिए ।

पूरे नाखून का नीला अथवा काला पड़ जाना आसन्न मृत्यु की सम्भावना का सूचक होता है ।

हथेली

हथेली को 'करतल' भी कहते हैं । हथेली याद पतली, कठोर तथा सूखी हो तो जातक भीरु, शीघ्र घबरा जाने वाला तथा चिन्तित स्वभाव का होता है । यदि मोटी, भारी तथा कोमल हो तो जातक विलासी-प्रकृति का होता है ।

लचीली और दृढ़ हथेली का अँगुलियों से अनुपातिक सन्तुलन हो तो जातक स्थिर-चित्त, स्फूर्तियुक्त, शीघ्र ग्राही तथा सम-स्वभाव का होता है।

हथेली अधिक मोटी न हो, परन्तु कोमल, शिथिल एवं पिलपिली हो तो जातक विषयी, आलसी एवं आरामतलब होता है ।

गड्ढेदार हथेली दुर्भाग्य-सूचक होती है । ऐसी हथेली वाले प्रायः निराशाओं का सामना करते रहते हैं । यदि हथेली का गड्ढा जीवन-रेखा की ओर झुका हो तो पारिवारिक-जीवन की गड़बड़ी बनी रहती है, यदि भाग्यरेखा की ओर हो तो आर्थिक-क्षेत्र में संकट आते हैं और यदि हृदय-रेखा की ओर हो तो प्रेम-सम्बन्ध में निराशा का सामना करना पड़ता है ।

बड़ी हथेली वाले प्रत्येक कार्य का गहराई से विश्लेषण करते हैं जबकि छोटी हथेली वाले इससे विपरीत स्वभाव के होते हैं । वे बड़ी-बड़ी

योजनायें बनाने के बावजूद भी उन्हें क्रियान्वित नहीं कर पाते । प्रबन्ध-व्यवस्था एवं सामाजिक-नेतृत्व में उन्हें सफलता अवश्य मिलती है। छोटी हथेली वालों की लिखावट प्रायः बड़े आकार की होती है ।

कर-पृष्ठ

हथेली के पिछले भाग को 'कर-पृष्ठ' कहा जाता है । हस्त-परीक्षा में इस भाग पर उत्पन्न केशों के सम्बन्ध में विचार करना भी आवश्यक है।

यदि बालों का रंग सुनहरा अथवा सफेद हो तो जातक प्रायः निरुत्साही, निस्तेज, दूसरों से शीघ्र प्रभावित हो जाने वाला तथा विनम्र स्वभाव का होता है । गहरे रंग के बालों वाले व्यक्ति के मिजाज में आवेश तथा जोश की मात्रा अधिक रहती है, जबकि काम करने में वे स्फूर्ति वाले होते हैं।

हल्के रंग के बालों वाले प्रेम-सम्बन्धों में अधिक ओजवान होते हैं। लाल रंग के बालों वाले अधिक उत्तेजनात्मक होते हैं । उन्हें काले अथवा भूरे रंग के बाल वालों की तुलना में किसी कार्य के लिए शीघ्र प्रेरित किया जा सकता है ।

कर पृष्ठ पर बालों का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए– हल्के, भूरे तथा सूक्ष्म बाल-मृदु तथा आलसी- स्वभाव के परिचायक होते हैं । काले बाल स्वभाव में उग्रता बताते हैं, ऐसे लोग असहिष्णु तथा चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं । काले बाल यदि मोटे भी हों तो प्रकृति क्रूर, क्रोधयुक्त तथा अधिक वासनात्मक होती है । कर-पृष्ठ पर बालों का न होना मृदुता का लक्षण है। मोटे बाल हृदय की कठोरता तथा शारीरिक-शक्ति के सूचक होते हैं । पतले तथा विरल बाल वाले कोमल प्रकृति के होते हैं ।

कीरोनोमी का उपयोग

हस्त-परीक्षा के लिए अँगुलियों, अँगूठों तथा हथेली की बनावट पर दृष्टि डालना आवश्यक है । किसी व्यक्ति से भेंट के समय शरीर के इन अङ्गों को आसानी से देखा जा सकता है । इनके सम्बन्ध में ऊपर बताया जा चुका है, तथापि यहाँ इन्हीं से सम्बन्धित कुछ मुख्य बातों का उल्लेख किया जा रहा है–

जिसके अँगूठे का प्रथम पर्व अधिक लम्बा हो, उसे निरंकुश, स्वच्छन्द स्वभाव का तथा मनमानी करने वाला समझना चाहिए । ऐसे व्यक्तियों से काम निकालने के लिए उनकी झूठी-सच्ची प्रशंसा एवं चापलूसी करना लाभप्रद रहता है । प्रथम पर्व यदि मध्यम आकार का हो तो जातक जड़-प्रकृति का होता है । उसे किसी भी कार्य के लिए अन्तःप्रेरणा नहीं मिलती । ऐसे व्यक्ति से निपटने के लिए अन्य अँगुलियों के आधार पर उसकी दुर्बलताओं का पता लगाना चाहिए । यह पर्व यदि छोटा हो तो जातक की इच्छाशक्ति दुर्बल होती है । उसमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती । ऐसे लोग प्रायः निराशावादी एवं उत्साहहीन होते हैं । इन लोगों को अपनी शक्ति, क्षमता एवं कूटनीति से ही प्रभावित किया जा सकता है। यदि यह पर्व छोटा होने के साथ ही चौड़ा भी हो तो जातक दृढ़ निश्चयी होता है, परन्तु यदि बहुत अधिक चौड़ा हो तो वह हठी होता है एवं तर्क की अपेक्षा मूर्खता से अधिक प्रेरित होता है । ऐसे लोगों से काम निकालने के लिए उन्हें यह विश्वास दिलाना आवश्यक होता है कि आपके विचार भी ठीक उन्हीं जैसे हैं । यह यदि चौड़ा तथा काँच की गोली की भाँति गोल आकार का हो तो जातक हिंसात्मक एवं दुष्ट–हठी प्रवृत्ति का होता है । ऐसे लोगों के क्रोध के समय उनके सामने से हट जाना चाहिए और जब वे स्वाभाविक शान्त स्थिति में हों तब युक्ति पूर्वक अपना काम निकालना चाहिए ।

जिसका अँगूठा हाथ फैलाते समय पीछे की ओर मुड़ जाता हो; वह उदार-स्वभाव का होता है तथा किसी की करुण कथा सुनकर द्रवित हो जाता है । परन्तु ऐसा अँगूठा यदि पीछे की ओर अत्यधिक मुड़ता हो तो जातक बहुत फिजूलखर्ची होता है । उसे किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए विशेष तर्क-वितर्क की जरूरत नहीं होती ।

अँगूठे का दूसरा पर्व अधिक लम्बा और मोटा हो तो जातक तर्क एवं सामान्य बुद्धि में सन्तुलन रखने वाले होता है । उससे थोथे तर्क-वितर्क नहीं करने चाहिए । यदि दूसरा पर्व छोटा और पतला हो तथा पहला पर्व बहुत लम्बा हो तो ऐसे जातक को अपनी इच्छाशक्ति द्वारा शीघ्र प्रभावित किया जा सकता है ।

अँगुलियाँ बहुत लम्बी तथा पतली हों, उनके जोड़ों पर गाँठें न हों तथा उनके सिरे नुकीले हों तो ऐसे जातक के विचार रहस्यमय होते हैं ।

वह अलौकिक-शक्तियों में विश्वास रखने वाला तथा गूढ़ विद्याओं का जानकार होता है ।

अत्यधिक नुकीली अँगुलियों वाला जातक मिथ्यावादी होता है तथा उसका स्नेह-प्रदर्शन दिखावाभर होता है । ऐसे व्यक्ति के साथ पाखण्डपूर्ण चापलूसीयुक्त तथा झूठा व्यवहार ही कार्य-साधक सिद्ध होता है ।

यदि अँगुलियाँ छोटी हों तथा नाखून खुरदुरे हों तो जातक शीघ्र ही क्रुद्ध होने वाला, शीघ्र घबरा जाने वाला तथा छोटी-छोटी बातों पर बेसिरपैर की लम्बी-चौड़ी बहस करने वाला होता है । ऐसे व्यक्तियों की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाकर ही अपना काम निकाला जा सकता है ।

यदि अँगुलियों के सिरे वर्गाकार हों तो जातक बुद्धिमान एवं सत्यप्रिय होता है । ऐसे लोग व्यवस्था एवं उचित तर्क के प्रेमी होते हैं ।

सिरों पर अधिक चौड़ी अर्थात् चमसाकार अँगुलियों वाले जातक अत्यधिक स्वतन्त्र-प्रकृति के होते हैं । उनकी गतिविधियों का कोई अन्त नहीं होता । वे खेल तथा यात्रा-प्रेमी भी होते हैं ।

अत्यधिक चमसाकार अँगुलियों वाले जातक नास्तिक अथवा अराजकतावादी होते हैं । यदि दूसरी अँगुली विशेष रूप से चमसाकार हो तो जातक विकृत मनोवृति का होता है । ऐसे व्यक्ति से वार्तालाप करते समय यदि अपनी पीड़ा एवं दुःखों की अभिव्यक्ति की जाय तो उससे मनोरथ सिद्ध हो सकता है ।

यदि प्रत्येक अँगुली के प्रथम पर्व का जोड़ स्पष्ट रूप से गाँठदार हो जो जातक दार्शनिक-स्वभाव का होता है । यदि बीच का पर्व गाँठदार हो तो जातक व्यवस्था-प्रिय होता है एवं अपनी वेश-भूषा के प्रति विशेष सावधान रहता है ।

यदि गाँठदार अँगुलियाँ बहुत अधिक लम्बी हों तो जातक प्रत्येक बात की गहराई में जाना चाहता है तथा छोटी-से-छोटी कमी का पता लगा लेगा।

यदि गाँठदार अँगुलियाँ छोटी हों तो जातक किसी बात के विस्तृत ब्यौरे में नहीं जाना चाहता । ऐसे लोगों से अपनी बात संक्षेप में ही करनी चाहिए ।

यदि छोटी अँगुलियाँ चिकनी तथा बिना गाँठ वाले जोड़ों की हों तो ऐसा जातक शीघ्र प्रभावित हो जाता है तथा दूसरों के अभिप्रायः को तुरन्त समझ लेता है ।

यदि अँगुलियाँ अपने आधार-स्थल (हथेली के समीप) पर भीतर की ओर मोटी हों तो जातक भौतिकवादी, स्वार्थी स्वभाव का तथा उत्तम वस्तुओं को प्रेम करने वाला होता है ।

यदि तीसरी अँगुली चिकनी तथा ऊपरी सिरे पर चमसाकार हो तो जातक सुन्दर वस्तुओं तथा दृश्यों का शौकीन होता है । वह ललित-कलाओं, साहित्य, संगीत तथा शिल्प की चर्चा में रुचि लेता है ।

यदि तीसरी अँगुली की लम्बाई दूसरी अँगुली के बराबर हो तो जातक जुए का शौकीन होता है, साहसिक-यात्राऐं करता तथा व्यवसाय में खतरा उठाने के लिए भी तैयार रहता है ।

यदि अँगूठे की जड़ वाला शुक्र-क्षेत्र सुविकसित तथा थोड़ा उन्नत हो जो जातक उदार-स्वभाव का होता है एवं अन्य लोगों की सहायता के लिए प्रस्तुत बना रहता है । ऐसे व्यक्ति की हथेली कड़ी हो तो वह क्रियाशीलता की सूचक होती है और यदि गर्म हो तो जातक तूफानी गति से काम करने वाला होता है । बहुत गर्म तथा मुलायम हथेली आलसी तथा स्वार्थी स्वभाव की द्योतक होती है । ऐसे लोगों के आश्वासनों पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए ।

विकृत, मुड़ी हुई तथा बहुत छोटे नाखूनों वाली अँगुलियाँ एवं गदा जैसी आकृति का अँगूठा जातक की हिंसा तथा खतरनाक प्रवृति का सूचक होता है । ऐसे लोगों से सामान्य-सम्बन्ध रखना भी दुःखदायी सिद्ध हो सकता है ।

अँगुलियों के संबंध में संक्षेपतः इस प्रकार भी समझा जा सकता है–

छोटी अँगुलियों वाले व्यक्ति जल्दबाज तथा अधिक छोटी अँगुलियों वाले व्यक्ति स्वार्थी, अवसरवादी तथा आलसी होते हैं । लम्बी अँगुलियों वाले बात को स्पष्ट समझकर ही कार्य करते हैं जबकि टेढ़ी-मेढ़ी अँगुलियों वाले उत्तरदायित्वों से बचना चाहते हैं । पतली अँगुलियाँ अक्षमता की व मोटी स्वार्थी स्वभाव की सूचक होती हैं ।

हाथों के वर्ग

यों तो प्रत्येक हाथ की बनावट एक-दूसरे से भिन्न होती है तथापि हस्त-परीक्षकों ने हाथों के 7 मुख्य वर्ग निर्धारित किए हैं, जो निम्नानुसार हैं–

1. निम्न श्रेणी का अथवा सामान्य हाथ (Elementary Hand)
2. वर्गाकार अथवा उपयोगी हाथ (Square Hand)
3. चमसाकार अथवा कर्मठ हाथ (Stapulate Hand)
4. दार्शनिक अथवा गाँठदार हाथ (Philoshic Hand)
5. शंक्वाकार अथवा कलात्मक हाथ (Artistic or Cancial Hand)
6. आध्यात्मिक अथवा नुकीला हाथ (Psychic or Pointed Hand)
7. मिश्रित हाथ (Mixed Hand)

निम्न श्रेणी का अथवा सामान्य हाथ

इस श्रेणी के हाथ की बनावट बेढंगी होती है । वह देखने में मोटा तथा भारी हथेली वाला होता है । अँगुलियाँ तथा नांखून छोटे होते हैं। हथेली पर रेखाएँ भी बहुत कम दिखाई देती हैं । ऐसे हाथ वाले लोगों की मानसिक तथा बौद्धिक-क्षमता बहुत कम होती है तथा उनका झुकाव पाशविक वृत्ति की ओर अधिक होता है । ऐसे लोग अपने भावावेश पर नियन्त्रण नहीं रख पाते । प्रेम तथा सौन्दर्य-भावना की ओर उनमें कोई आकर्षण नहीं होता तथा पाशविक प्रवृत्ति एवं कामवासना की अधिकता पाई जाती है । खाना, पीना, सोना तथा मर जाना ही इनका जीवन है। ये लोग विवेक-बुद्धि-हीन, चालाक, हिंसक तथा शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाले होते हैं, तथापि साहसी नहीं होते ।

इस श्रेणी के हाथों का अँगूठा छोटा तथा मोटा होता है । करपृष्ठ प्रायः घने केशों से आच्छादित रहता है । त्वचा खुरदुरी होती है । सभ्य-
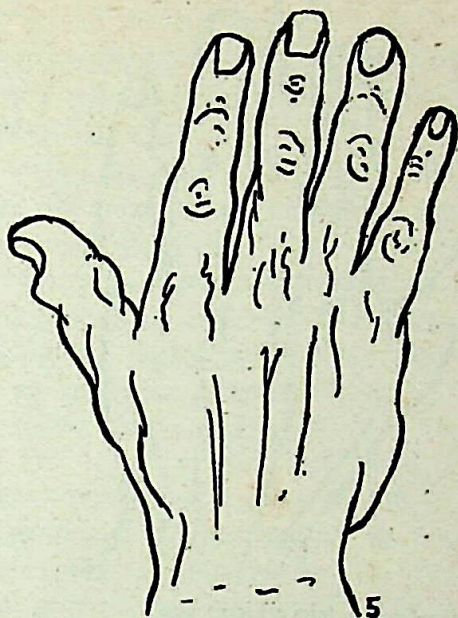
(निम्न श्रेणी का अथवा सामान्य हाथ)

समाज में इस प्रकार के हाथ प्रायः देखने को नहीं मिलते । निम्न वर्ग के अविकसित लोगों तथा जंगली कबीलों के मनुष्यों के हाथ इस श्रेणी के होते हैं । आइसलैण्ड, लैपलैण्ड, रूस के उत्तरी भाग, साइबेरिया आदि बहुत ठंडे स्थानों में रहने वाली आदिम जातियों के लोगों में ऐसे हाथ बहुत पाये जाते हैं । इस श्रेणी के कुछ विकसित हाथ भी होते हैं, जो विभिन्न देशों की सभ्य जातियों में मिलते हैं ।

वर्गाकार अथवा उपयोगी हाथ

इस श्रेणी के हाथ की हथेली लम्बाई-चौड़ाई में समानुपातिक होती है। हथेली की चौड़ाई कलाई के पास भी उतनी ही होती है, जितनी कि अँगुलियों की जड़ के पास होती है । अँगुलियाँ भी वर्गाकार अर्थात् जड़ से लेकर अग्रभाग तक एक जैसी होती हैं तथा उनका सिर भी चौकोर
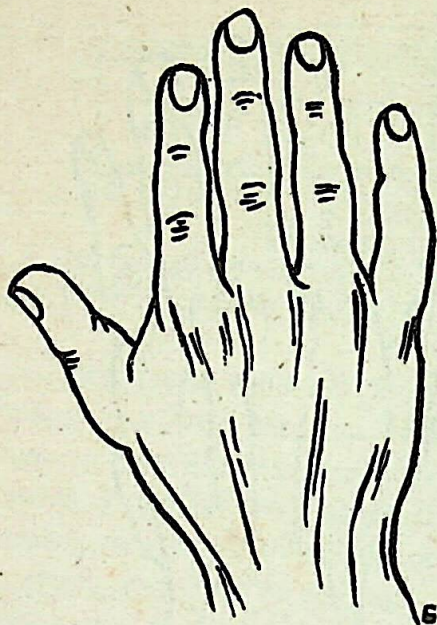
(वर्गाकार अथवा उपयोगी हाथ)

अथवा अर्द्धवृत्ताकार चौकोर होता है । नाखून भी प्रायः छोटे तथा वर्गाकार होते हैं । इस श्रेणी के हाथ वाले लोग प्रत्येक क्षेत्र में पाये जाते हैं । ये कार्य-कुशल, समय के पाबन्द, अनुशासन-प्रिय, कानून-व्यवस्था का पालन करने वाले एवं परम्परा-पोषक होते हैं । ये झगड़ालू नहीं होते, युद्ध की अपेक्षा शान्ति को पसन्द करते हैं, परन्तु जब विरोध करते हैं तो दृढ़-संकल्पी बन जाते हैं । इनमें लगन तथा सन्तोष– दोनों ही गुण प्रभूत मात्रा में पाये जाते हैं तथा सदैव किसी-न-किसी उपयोगी कार्य में लगे रहते हैं । इन्हें दिखावे के स्थान पर वास्तविकता पसन्द होती है । आचरण की दृढ़ता, इच्छा-शक्ति की प्रबलता तथा प्रतिभाशाली प्रतिद्वन्द्विता के गुण प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं, तथापि मौलिकता एवं कल्पना-शक्ति की कमी रहती है । अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों से सच्चा स्नेह करते हैं तथा अपने वचन एवं इरादे के पक्के होते हैं । प्रयेक वस्तु की सूक्ष्म जाँच-पड़ताल करना इनके स्वभाव में होता है । व्यवसाय में ईमानदारी बरतना इनका मुख्य गुण है।

अन्ध-विश्वासी न होते हुए भी ये धार्मिक-परम्पराओं का उल्लंघन नहीं करते । अपने कानों से सुने और अपनी आँखों से देखे बिना ये किसी बात पर विश्वास नहीं करते ।

यदि वर्गाकार हाथ में छोटी वर्गाकार अँगुलियाँ हों तो जातक को हठी, अधिक संकीर्ण विचारों वाला तथा धन-संचय के लिए कठोर परिश्रम करने वाला समझना चाहिए । इन्हें पूरी तरह से दुनियाँदार कहा जा सकता है । ये लोग हर बात का मूल्यांकन व्यावसायिक-दृष्टि से ही करते हैं ।

इस श्रेणी के हाथ की अँगुलियाँ यदि लम्बी वर्गाकार हों तो जातक का बौद्धिक-स्तर छोटी अँगुलियाँ वालों की अपेक्षा अधिक विकसित होता है । ऐसे हाथ वाले पारस्परिक धारणाओं से प्रभावित न रहकर युक्ति संगत एवं वैज्ञानिक निष्कर्षों पर पहुँचने वाले एवं उसी के अनुसार कार्य करने वाले होते हैं । इस श्रेणी के हाथ स्वीडन, डैनमार्क, जर्मनी, इङ्गलैण्ड, हालैण्ड तथा स्काटलैण्ड-वासियों में अधिक पाये जाते हैं ।

इस श्रेणी के हाथों में यदि लम्बी अँगुलियाँ, गाँठदार भी हों तो जातक छोटी-से-छोटी बात का भी सूक्ष्म-निरीक्षण करने वाला होता है। ऐसे लोग कुशल वास्तु-शिल्पी अथवा गणितज्ञ हो सकते हैं । चिकित्सा अथवा विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी इन्हें सफलता प्राप्त होती है ।

इस श्रेणी के हाथ में चमसाकार (आगे से फैली हुई) अँगुलियाँ हों तो वह आविष्कार की क्षमता देती है । ऐसे लोग कुशल इन्जीनियर, उत्कृष्ट यन्त्रों का निर्माण करने वाले तथा लाभप्रद कार्यों में ही अपनी बुद्धि एवं क्षमता का उपयोग करने वाले होते हैं ।

ऐसे हाथ में सामान्य नुकीली अँगुलियाँ हों तो जातक परिश्रमी एवं मननशील होता है । ऐसे लोग साहित्य तथा संगीत के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त करने वाले, कलात्मक प्रवृत्ति के होते हैं ।

वर्गाकार हाथ में अत्यन्त नुकीली अँगुलियाँ हों तो जातक अस्थिरता का शिकार हो जाता है और उसके द्वारा भली-भाँति आरम्भ किए गए कार्य भी अधूरे रह जाते हैं ।

वर्गाकार हाथ में मिश्रित लक्षणों वाली अँगुलियाँ हों तो जातक अनेक विषयों में चतुर होता है । वह अपनी योजनाओं को व्यावहारिक रूप देता है तथा किसी भी विषय पर अधिकारपूर्वक विचार-विमर्श करने में समर्थ

होता है। परन्तु किसी एक काम को जमकर न करने की स्थिति के कारण ऐसे लोग उन्नति के शिखर पर बहुत कम ही पहुँच पाते हैं ।

चमसाकार अथवा कर्मठ हाथ

इस श्रेणी के हाथ में न केवल अँगुलियों के अग्रभाग आगे से चौड़े (फैले हुए) होते हैं, अपितु हथेली भी कलाई के पास अथवा अँगुलियों के उद्गम के समीप फैली हुई होती है । ऐसा हाथ बनावट में प्रायः बड़ा तथा लम्बा होता है एवं अँगुलियाँ भी पुष्ट एवं लम्बी होती हैं । इस श्रेणी के हाथ वाले लोग आत्म-निर्भर, लगनशील तथा कर्मठ होते हैं । ये नवीन आविष्कार तथा मशीनरी के काम में सिद्ध हस्त होते हैं ।
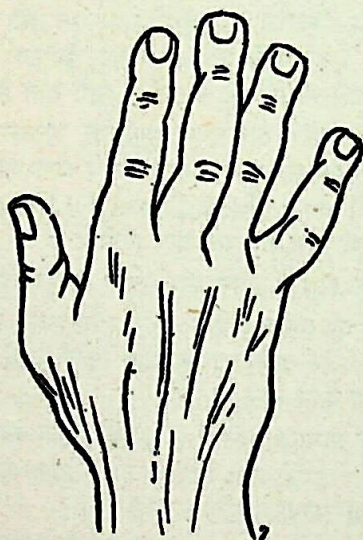
(चमसाकार अथवा कर्मठ हाथ)

इस श्रेणी का हाथ यदि दृढ़ और कठोर हो तो जातक अधीर एवं उत्तेजनापूर्ण स्वभाव का होता है, साथ ही उसमें उत्साह एवं सक्रियता विशेष पाई जाती है ।

यदि हाथ कोमल तथा ढीला-ढाला हो तो जातक अस्थिर एवं चिड़चिड़े स्वभाव का होता है तथा किसी भी काम को लगकर नहीं कर पाता ।

चमसाकार हाथ वाले संकटों की परवाह न करने वाले, नई खोजें करने वाले, स्वतन्त्र वेत्ता तथा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहिचान अलग बनाने वाले होते हैं । इन्हें भविष्यदृष्ठ भी कहा जा सकता है, क्योंकि ये आगे घटने वाली घटनाओं का प्रायः ठीक-ठीक अनुमान लगा लिया करते हैं।

यदि चमसाकार हाथ की हथेली अँगुलियों के मूल में अधिक फैली हो तो जातक आविष्कारक, व्यावहारिक तथा उपयोगितावादी होता है । यदि हथेली मणिबंध के पास अधिक चौड़ी हो तो वह बौद्धिक-क्षेत्र में अग्रणी होता है तथा सूक्ष्म-अन्वेषण सम्बन्धी कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करता है ।

दृढ़ चमसाकार हाथ वाले लोग हर समय कुछ-न-कुछ करते ही रहते हैं । इस प्रकार के हाथ अमेरिका में अधिक पाये जाते हैं । चमसाकार हाथ वाले रूढ़िवादी नहीं होते । ये नवीन खोजें करने के इच्छुक रहते हैं । जोखिम उठाने में इन्हें संकोच नहीं होता । इनका सबसे बड़ा अवगुण परिवर्तनशीलता है । ये लोग एक काम को अधूरा छोड़कर दूसरा हाथ में ले लेते हैं । अपनी सनकों में मदान्ध होते हुए भी ये नये विचार एवं नये आविष्कार देने में अग्रणी रहते हैं ।

दार्शनिक अथवा गाँठदार हाथ

इस श्रेणी का हाथ प्रायः लम्बा तथा नुकीला होता है एवं अँगुलियों में मांस की अपेक्षा हड्डी अधिक होने के कारण उनकी गाँठें उभरी रहती हैं । अँगुलियों के अग्रभाग प्रायः गोल तथा नाखून लम्बे होते हैं । ऐसे लोग बड़े परिश्रमी तथा अध्ययनशील होते हैं । इन्हें एकान्त में बैठकर काम करना अधिक प्रिय होता है । ये पुरातत्वविद् अथवा अतीन्द्रिय-विद्याओं के अन्वेषक भी हो सकते हैं । ये अन्य लोगों से भिन्न रहना चाहते हैं तथा इस हेतु कष्ट उठाने के लिए भी तैयार रहते हैं । ये रहस्य, दर्शन, साहित्य तथा ललित कलाओं के प्रेमी होते हैं । इनमें दुनियाँदारी की भावना देखने को भी नहीं मिलती । ऐसे हाथ प्रायः पूर्वी देशों में अधिक पाये जाते हैं । अपने धार्मिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए ये लोग अपना सर्वस्व समर्पण करने को भी उद्यत बने रहते हैं ।
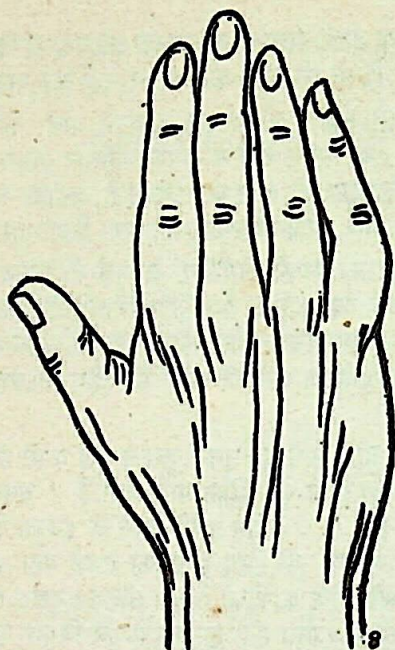
(दार्शनिक अथवा गाँठदार हाथ)

इस श्रेणी के हाथ वाले स्वभावतः चुप रहने वाले तथा अपने विचारों को गुप्त रखने वाले होते हैं । ये छोटी-से-छोटी बात में भी सावधानी बरतते हैं तथा प्रत्येक शब्द को नाप-तौलकर बोलते हैं । वे स्वयं को अन्य लोगों से भिन्न समझने में गर्व का अनुभव करते हैं तथा अपने शत्रु अथवा हानि पहुँचाने वाले को कभी क्षमा नहीं करते, अपितु धैर्यपूर्वक अवसर की प्रतीक्षा करते रहते हैं तथा मौका मिलते ही सारा हिसाब चुका लेते हैं ।

अँगुलियों में गाँठों का होना विचारक-प्रवृत्ति का सूचक होता है । ऐसे हाथ वाले प्रत्येक बात का सूक्ष्म-विश्लेषण करते हैं । ये आत्मिक-स्फूर्ति एवं आत्मत्याग की भावना से सम्पन्न, धैर्यवान्, अध्यवसायी तथा अनुशासन-प्रिय होते हैं । इनका मानसिक-विकास उच्च-कोटि का होता है।

शंकाकार अथवा कलात्मक हाथ

इस प्रकार के हाथ मध्यम आकार के होते हैं । अँगुलियाँ अपने मूल-स्थान में पुष्ट तथा अन्त में कुछ नुकीली होती हैं ।

इस श्रेणी के हाथ वाले मनुष्यों में आवेग तथा मनोवृत्ति की प्रधानता पाई जाती है । ये लोग आवेग की लहर में गुण-दोष की मीमांसा भी नहीं करते ।

इस प्रकार के हाथ योरुप के दक्षिणी भाग में, यूनान, इटली, स्पेन, फ्रांस तथा आयरलैण्ड निवासियों में अधिक पाये जाते हैं ।

ऐसे हाथ मुलायम तथा कुछ नुकीली अँगुलियों वाले होते हैं । नाखून भी लम्बे होते हैं । ऐसे लोग कलाप्रिय, शौकीन-मिजाज, आरामतलब तथा आलसी भी होते हैं । इनमें धैर्य की कमी होती है, अतः ये अपने संकल्प
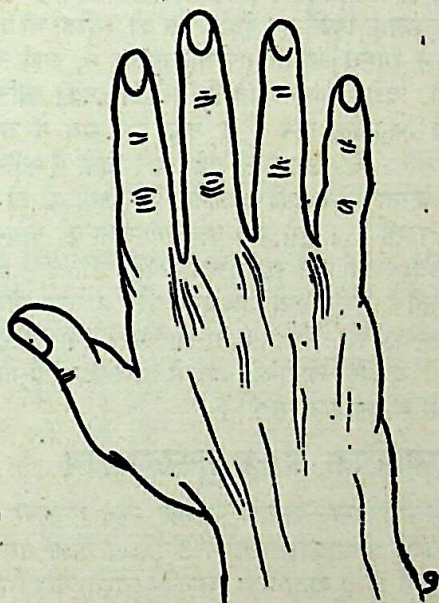
(शंकाकार अर्थात् कलात्मक हाथ)

की पूर्ति करने में कम सफल हो पाते हैं । ऐसे लोग बात-चीत में निपुण, किसी भी विषय को शीघ्र समझ लेने वाले, अपने सम्पर्क में आने वालों से शीघ्र प्रभावित होने वाले, भावुक, शीघ्र तथा क्षणिक क्रोधी, उदार तथा सहानुभूति पूर्ण, मनमौजी तथा प्रेम एवं मैत्री सम्बन्धों के निर्वहन में परिवर्तनशील होते हैं । ये पैसों के मामलों में स्वार्थी नहीं होते तथा यदि इनके पास धन हो तो उदारता से दान भी देते हैं । ये स्वयं कलाकार तो नहीं होते, परन्तु संगीत, चित्रकला, भाषण, काव्य आदि का इन पर प्रभाव अधिक पड़ता है । दूसरों के सहानुभूति पूर्ण व्यवहार से भी ये विशेष प्रभावित होते हैं ।

इन लोगों में धनोपार्जन की अधिक क्षमता नहीं होती तथा व्यावहारिक-कुशलता भी कम रहती है । ये कलाप्रिय होते हैं ।

इस श्रेणी का हाथ सख्त और लचकदार हो तो जातक में सद्गुणों के साथ-साथ कार्यकुशलता-स्फूर्ति एवं इच्छाशक्ति की प्रचुरता भी पाई जाती है । ऐसे हाथ वाले रंगमंच अथवा राजनीतिक-क्षेत्र में, जहाँ लोगों को आकर्षित करना हो, विशेष सफल होते हैं, क्योंकि इनका व्यक्तित्व एवं वाक्शक्ति—दोनों ही आकर्षक होते हैं । यदि ऐसे हाथ में चमसाकार अँगुलियाँ हों और जातक चित्रकार हो तो वह अपने चित्रों में नवीन प्रयोगों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करता है । यदि दार्शनिक अँगुलियाँ हों तो चित्र में रहस्यवाद की छाप रहती है । ऐसे हाथ वाली गायिका को गायन से पूर्व रियाज करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वह अपने व्यक्तित्व से ही दर्शकों को आकर्षित कर लेती है । ऐसे हाथ वाले पुरुष कोई भी काम सोच-विचार कर नहीं करते, वे तात्कालिक प्रेरणा अथवा आवेश के वशीभूत होकर भी कुछ कर बैठते हैं । ये लोग छोटी-सी बात से ही अत्यन्त प्रसन्न अथवा अत्यधिक निराश भी हो जाया करते हैं ।

आध्यात्मिक अथवा नुकीला हाथ

इस श्रेणी का हाथ लम्बा, संकीर्ण, कोमल, नीचे से ऊपर की ओर पतली होती जाने वाली शुण्डाकार मुलायम अँगुलियों वाला तथा बादाम के आकार जैसे नाखूनों वाला होता है । इसकी सुन्दरता देखते ही बनती है परन्तु यही सबसे अभागा हाथ भी माना जाता है ।
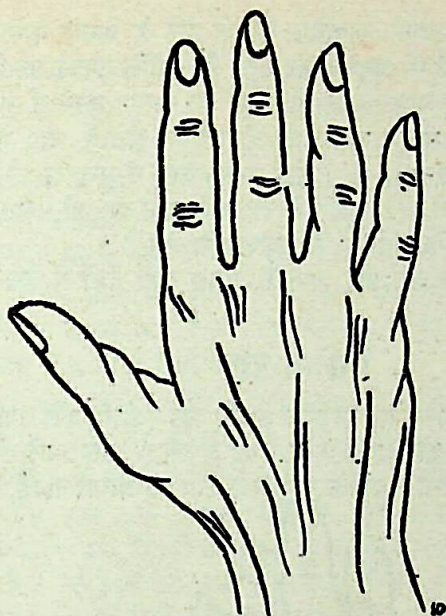
(आध्यात्मिक अथवा नुकीला हाथ)

ऐसे हाथ वाले लोग निष्क्रिय, स्वप्न-लोक में विचरण करने वाले, आदर्शवादी, विनम्र स्वभाव के तथा शान्ति-प्रिय होते हैं । ये किसी पर अविश्वास नहीं करते तथा अपने प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने वालों के गुलाम बन जाते हैं । इन्हें सरलता से प्रभावित किया जा सकता है । सांसारिक-चतुराई, व्यवस्था, अनुशासन, समय की पाबन्दी आदि का इनके लिए कोई अर्थ नहीं होता । ये सत्य तथा यथार्थ की खोज करने में असफल रहते हैं तथा जीवन के रहस्यों को भय एवं आश्चर्य के साथ देखते रह जाते हैं । हर प्रकार के जादू अथवा तमाशे इन्हें आकर्षित करते हैं तथा उनमें धोखा भी खा जाते हैं । तथापि इन लोगों का अतीन्द्रिय-ज्ञान अत्यन्त विकसित होता है । ये सूक्ष्मग्राही तथा परोक्षदर्शी तो होते हैं, परन्तु सांसारिक्ता एवं वास्तविकता से अपरिच्चित ही रह जाते हैं ।

ऐसे हाथों के स्वामी अत्यधिक भावुक होने के कारण कभी-कभी अपने जीवन को व्यर्थ भी अनुभव कर उठते हैं, क्योंकि उनकी मनःस्थिति विकृत हो जाती है । जीवन-यात्रा में संघर्षों का सामना करने में असमर्थ रहते हैं । ये लोग प्रायः धोखा खाते और भ्रमित होते हैं, बाद में इन्हें अपने पर क्रोध भी आता है । ये लोग प्रत्येक वस्तु में सुन्दरता को ढूँढ़ते और उसकी कद्र करते हैं । प्रकृति के रंग, कलात्मक वस्तुओं,संगीत तथा आध्यात्मिक एवं धार्मिक विषयों में विशेष रुचि लेते हैं ।

ऐसे हाथ बहुत कम पाए जाते हैं, परन्तु सभी देशों में देखने को मिल सकते हैं ।

मिश्रित हाथ

जिस हाथ में मिश्रित लक्षणों वाली अर्थात् कोई नुकीली, कोई वर्गाकार, कोई चमसाकार और कोई दार्शनिक श्रेणी की अँगुली हो, उसे 'मिश्रित हाथ' कहा जाता है । इस श्रेणी के वर्गीकरण का कोई निश्चित आधार नहीं है ।
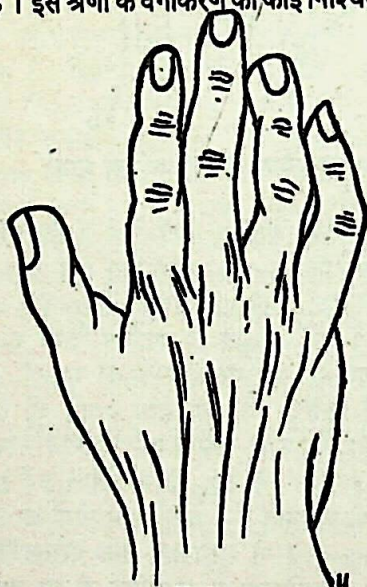
(मिश्रित हाथ)

इस श्रेणी के हाथ वाला मनुष्य अनेक गुणों से युक्त तथा परिवर्तनशील स्वभाव का होता है । वह स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति के अनुकूल ढाल सकता है । वह चतुर होते हुए भी अनिश्चित-स्वभाव का होता है तथा अनेक गुणों से युक्त होते हुए भी अपनी बौद्धिक-शक्ति को विभिन्न कार्यों में लगाने के कारण किसी कार्य में भी पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता । कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी क्षेत्र में उसे दक्षता प्राप्त नहीं होती ।

मिश्रित हाथ वाले जातक यदि किसी कार्य में असफल हो जाते हैं तो निराशा में डूब जाते हैं और आत्मकेन्द्रित हो जाते हैं । इस प्रकार वे सफलता से दूर होते जाते हैं ।

ऐसे हाथ में यदि मस्तिष्क-रेखा बलवान हो तो जातक सुनिर्वाचित-कार्य में अपनी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग करने में समर्थ रहता है । कूटनीतिक एवं चतुराई के कामों में उसे विशेष सफलता मिलती है।

ऐसे हाथ वाले प्रत्येक व्यक्ति से खूब हिलमिल जाते हैं । वे आविष्कारक-बुद्धि के होते हैं तथा उनके मस्तिष्क में नये-नये विचार मंडराते रहते हैं । अपने विचारों, योजनाओं तथा निश्चयों में परिवर्तन करते रहने के कारण ही इन्हें किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती, तथापि हथेली यदि किसी निश्चित आकार की हो तो मिश्रित लक्षणों वाली अँगुलियाँ अधिक सफलता दिलाने में सक्षम हो जाती हैं ।

विशेष– हस्त-परीक्षा करते समय हाथ के वर्ग को निश्चित कर लेना चाहिये और फलादेश के समय इस आधार को ध्यान में रखना चाहिये ।

✪✪✪

ग्रह-क्षेत्र

सम्पूर्ण हथेली को सात विभिन्न भागों में बाँटकर ग्रह-क्षेत्रों का निर्धारण किया गया है । इनमें से कुछ स्थान उभरे हुए होते हैं, अतः इन्हें 'पर्वत' (Mount) भी कहा जाता है । ग्रह-क्षेत्रों के नाम इस प्रकार हैं–

1. शुक्र-क्षेत्र, 2. वृहस्पति-क्षेत्र, 3. शनि-क्षेत्र, 4. सूर्य-क्षेत्र, 5. बुध-क्षेत्र, 6. मंगल-क्षेत्र और 7. चन्द्र-क्षेत्र ।

नीचे दिये गए चित्र में हथेली पर इन ग्रह-क्षेत्रों के स्थान प्रदर्शित किए गये हैं । अन्य विवरण आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

(हथेली पर विभिन्न ग्रह-क्षेत्र)
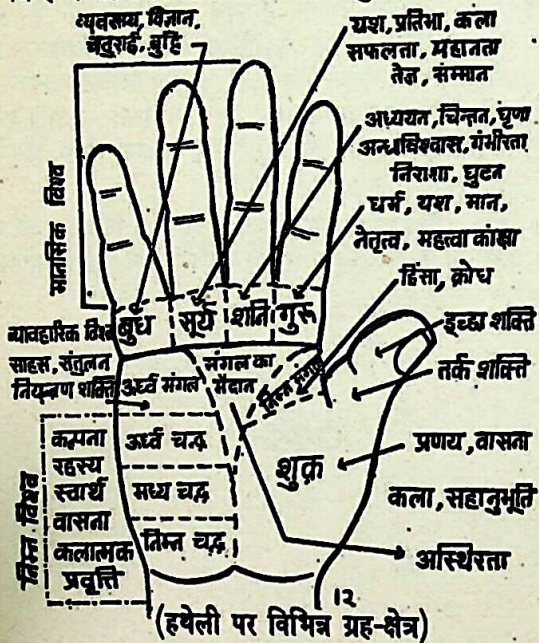
शुक्र-क्षेत्र

यह अँगूठे के मूल-स्थान के नीचे स्थित होता है । इसके आकार को जीवन-रेखा सुनिश्चित करती है अर्थात् जीवन-रेखा की परिधि जितनी बड़ी होती है, यह क्षेत्र उतना ही बड़ा और जितनी छोटी होती है, उतना ही छोटा माना जाता है ।

शुक्र-क्षेत्र द्वारा जातक की सौन्दर्य-प्रियता, प्रेम, अनुराग, मैत्री कामवासना, काव्य-संगीत-प्रेम, दया, सहानुभूति, सन्तानोत्पादकशक्ति तथा स्वास्थ्य आदि का विचार किया जाता है ।

इस क्षेत्र का अत्यधिक उन्नत न होना शुभ लक्षण है । यह समुचित रूप में उन्नत तथा विकसित हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट एवं स्वस्थ शरीर वाला होता है । यह क्षेत्र छोटा हो तो स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा काम-शक्ति में भी कमी रहती है । यह क्षेत्र यदि असाधारण रूप से बड़ा हो तो विपरीत-लिङ्गी के प्रति काम-वासनात्मक आकर्षण अधिक होता है तथा जातक अत्यधिक विषयी होता है । यह क्षेत्र बड़ा तथा उन्नत हो तो पुंसत्व-शक्ति अर्थात् सन्तानोत्पादक-शक्ति अच्छी होती है । बहुत दबा हुआ तथा छोटा हो तो इस शक्ति में कमी रहती है । यह क्षेत्र दोषपूर्ण हो तो जातक को जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग होते हैं । शुक्र-क्षेत्र पर विचार करते समय अँगूठे की स्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए ।

वृहस्पति-क्षेत्र

यह क्षेत्र तर्जनी अँगुली के मूल स्थान के नीचे स्थित होता है । इसी कारण तर्जनी को 'वृहस्पति की अँगुली' भी कहा जाता है । तर्जनी से नीचे मस्तिष्क-रेखा तक इसकी अवस्थिति मानी जाती है । इसके एक ओर अँगूठे की ओर वाला हथेली का पार्श्व भाग तथा दूसरी ओर तर्जनी तथा मध्यमा अँगुली के मूल क्षेत्रों का मध्यभाग होता है ।

इस क्षेत्र के द्वारा जातक की महत्वाकांक्षा, धार्मिक-आस्था, स्फूर्ति, प्रशासनिक योग्यता, आत्म-गौरव आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है ।

यह क्षेत्र यदि समुचित रूप में समुन्नत हो तो जातक महत्वाकांक्षी, आत्म-गौरव,-उत्साही, स्फूर्त एवं शासन करने की इच्छा से सम्पन्न होता

है। यदि अत्यधिक उन्नत हो तो जातक अत्यधिक अहङ्कारी अर्थात् तानाशाही-मनोवृत्ति वाला होता है । यदि यह क्षेत्र चपटा अथवा धँसा हुआ हो तो जातक बड़ों के प्रति श्रद्धालु नहीं होता तथा धर्म के प्रति भी अनास्था रखता है ।

उत्तम वृहस्पति-क्षेत्र वाले जातक अनुशासन-प्रिय, नियमों का कड़ाई से पालन करने वाले तथा अच्छे भोजन के शौकीन होते हैं ।

शनि-क्षेत्र

यह क्षेत्र मध्यमा अँगुली के मूल-स्थान के नीचे स्थित होता है । इसी कारण मध्यमा को 'शनि की अँगुली' कहा जाता है । इसका क्षेत्र गुरु-क्षेत्र की समाप्ति से प्रारम्भ होकर अनामिका अँगुली तथा मध्यमा अँगुली के मूल-क्षेत्रों का मध्यभाग होता है तथा नीचे हृदय-रेखा तक इसका विस्तार माना जाता है ।

इस क्षेत्र के द्वारा जातक के अस्थि-विकार, निराशा, गम्भीरता, सत्यता तथा आत्म-केन्द्रित होने आदि विषयों का विचार किया जाता है। शान्ति-प्रियता, तत्परता, गम्भीर विषयों के अध्ययन की रुचि, संस्कृति एवं संगीत की ओर आकर्षण तथा मितभाषिता के सम्बन्ध में भी इस क्षेत्र से विचार करते हैं ।

यदि यह क्षेत्र उन्नत हो तो जातक आत्म-केन्द्रित, अन्तर्मुखी तथा निराशावादी होते हैं । धर्म, विज्ञान तथा रहस्यवादी विषयों में इनकी विशेष रुचि होती है । ये स्वभाव से अधीर, अविश्वासी, शंकालु, विरक्त-प्रकृति के तथा एकान्त-प्रिय होते हैं । लेखन तथा शोधकार्यों में इन्हें सफलता एवं प्रसिद्धि मिलती है । व्यवसाय में ये कम सफल हो पाते हैं । इन्हें गठिया आदि रोगों का शिकार बनना पड़ता है, तथापि इनकी आयु लम्बी होती है ।

सूर्य-क्षेत्र

यह क्षेत्र अनामिका अँगुली के मूल-स्थान के नीचे स्थित होता है । इसी कारण अनामिका को 'सूर्य की अँगुली' कहा जाता है । इसका क्षेत्र शनि-क्षेत्र की समाप्ति से प्रारम्भ होकर अनामिका तथा कनिष्ठिका में मूल-क्षेत्रों का मध्य भाग होता है तथा नीचे हृदय-रेखा तक इसका विस्तार माना जाता है ।

इस क्षेत्र के द्वारा जातक के नेत्र, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, कला-प्रेम, यश तथा बुद्धि आदि के विषय में विचार किया जाता है ।

यदि यह क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत हो तो जातक सुन्दर एवं स्वस्थ शरीर तथा आकर्षक नेत्रों वाला होता है तथा प्रत्येक सुन्दर वस्तु को प्रशंसात्मक-भाव से देखता है । काव्य, साहित्य, संगीत, चित्रकला आदि ललित कलाओं के प्रति उसमें विशेष रुझान पाया जाता है । ऐसे व्यक्ति उत्साही तथा उल्लासपूर्ण होते हैं । उन्हें अध्ययन में विशेष रुचि रहती है तथा यश, मान-प्रतिष्ठा, धन, धर्म आदि का लाभ होता है, तथापि इन्हें अपने समान-स्तर का जीवन-साथी नहीं मिल पाता, अतः वैवाहिक-जीवन प्रायः सुखी नहीं रहता । यदि यह क्षेत्र धँसा हुआ, अनुन्नत हो तो जातक उत्साहहीन, बुद्धि-विहीन, अध्ययन, साहित्य-संगीत आदि में विमुख तथा केवल खाने-पीने को ही सब कुछ समझने वाला होता है ।

यह क्षेत्र यदि अधिक उन्नत हो तो जातक ईर्ष्यालु, चापलूसी-पसन्द तथा अत्यन्त अहंकारी होता है ।

बुध-क्षेत्र

यह क्षेत्र कनिष्ठिका अँगुली के मूल-स्थान के नीचे स्थित होता है । इसी कारण कनिष्ठिका को 'बुध की अँगुली' कहा जाता है । यह क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की समाप्ति से प्रारम्भ होकर हथेली के अन्तिम बाँये भाग तक होता है तथा नीचे हृदय-रेखा तक इसका विस्तार माना जाता है ।

इस क्षेत्र के द्वारा जातक की कार्यकुशलता, व्यवसाय, उद्योग, विज्ञान, बुद्धि-विवेक, यात्रा, सम्पर्क चातुर्य आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है ।

यदि यह क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत हो तो जातक ओजस्वी वक्ता, कुशल व्यवसायी, आविष्कारक, यात्रा-प्रेमी, बुद्धिमान, चतुर, हाजिर जबाव, हास्य-परिहास में रुचि लेने वाला, वैज्ञानिक-कार्यों में कुशल तथा द्रुतगति से कार्य करने वाला होता है । यदि बुध-क्षेत्र नीचे धँसा हुआ हो तो इन सभी गुणों में कमी पाई जाती है तथा हिसाब-किताब, व्यवसाय, विज्ञान आदि के क्षेत्र में मन नहीं लगता ।

यदि बुध-क्षेत्र अधिक दोषयुक्त हो तो जातक हद दर्जे का चालाक अर्थात् धूर्त, दूसरों को धोखा देने वाला, जालसाज तथा अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करने वाला होता है । बुध-गुण प्रधान व्यक्तियों को पेट के फोड़े

(अल्सर) की बीमारी भी हो सकती है तथा पाचन-यन्त्र भली-भाँति काम नहीं करता ।

मंगल-क्षेत्र

हथेली पर मंगल के दो क्षेत्र माने गए हैं । प्रथम मंगल-क्षेत्र की अवस्थिति वृहस्पति-क्षेत्र के नीचे मस्तिष्क-रेखा के ऊपर तथा जीवन-रेखा के घेरे के भीतर शुक्र-क्षेत्र के ऊपर मानी जाती है । इस प्रकार यह क्षेत्र वृहस्पति एवं शुक्र-क्षेत्रों से जुड़ा रहता है । इसे 'निम्न मंगल-क्षेत्र' भी कहते हैं । इसके द्वारा जातक के साहस तथा शक्ति के सम्बन्ध में विचार किया जाता है ।

द्वितीय मंगल क्षेत्र, जिसे 'ऊर्ध्व मंगल-क्षेत्र' भी कहा जाता है, बुध-क्षेत्र के नीचे तथा चन्द्र के ऊपर अर्थात् इन दोनों ग्रह-क्षेत्रों के मध्य में होता है । इसके द्वारा आत्म-संयम, निश्चेष्ट-साहस तथा प्रतिरोध-शक्ति का विचार किया जाता है ।

प्रथम मंगल-क्षेत्र समुचित उन्नत हो तो जातक साहसी तथा योद्धा होता है । अधिक बड़ा हो तो झगड़ालू-प्रकृति का होता है । ऐसे लोग पुलिस या सेना में अथवा शौर्य, साहस, प्रदर्शन के क्षेत्र में विशेष सफल होते हैं । यह क्षेत्र अशुभ लक्षण युक्त हो तो जातक हिंसक, डाकू या लुटेरा भी बन सकता है । यह क्षेत्र अत्यन्त उन्नत हो तो जातक दुस्साहसी, क्रूर तथा अत्याचारी होता है और दबा हो तो कायर एवं निरुत्साही होता है ।

द्वितीय मंगल-क्षेत्र समुचित उन्नत हो तो जातक असाधारण धैर्यवान, आत्म-संयमी तथा प्रतिरोध-शक्ति सम्पन्न होता है । दबा हुआ हो तो इसके विपरीत प्रभाव समझना चाहिए ।

चन्द्र-क्षेत्र

द्वितीय मंगल-क्षेत्र के नीचे तथा शुक्र-क्षेत्र के बराबर चन्द्र-क्षेत्र की अवस्थिति मानी गई है । इसके द्वारा जातक की सौन्दर्य-प्रियता, आदर्शवादिता, कल्पना-शक्ति एवं काव्य-साहित्य प्रेम आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है ।

यह क्षेत्र यदि समुन्नत एवं श्रेष्ठ स्थिति वाला हो तो जातक काव्य-साहित्य-संगीत आदि कलाओं में सफल होते हैं । यदि दबा हुआ हो तो उनमें कल्पना-शक्ति का अभाव होता है तथा ललित-कलाओं में

कोई रुचि नहीं होती है । ऐसे लोग अधिक परिश्रम नहीं कर सकते तथा अस्वस्थ भी बने रहते हैं ।

यह क्षेत्र सामान्य रूप से उन्नत हो तथा मध्य का तृतीयांश विशेष उभरा हुआ हो तो पाचन-शक्ति की कमी तथा आंत्र-विकार होते हैं । यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी अन्य लक्षण भी शुभ न हों तो जातक को सिर-दर्द, पागलपन आदि रोग होते हैं, स्वभाव चिड़चिड़ा तथा मनोवृत्ति अवसादपूर्ण होती है । ऐसे लोग भावावेश में आत्म-हत्या भी कर सकते हैं ।

यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत न होकर लम्बा तथा संकीर्ण हो तो जातक का मन किसी नये काम में नहीं लगता । वह निरुत्साही, एकान्तप्रिय, शान्तिप्रिय तथा श्रम एवं जिम्मेदारियों से बचने वाला होता है ।

चन्द्र-क्षेत्र जितना अच्छा होता है, जातक की कल्पना, विचार तथा बौद्धिक-शक्ति उतनी ही प्रखर होती है ।

अपने स्थान से हटे हुए ग्रह-क्षेत्र

सभी ग्रहों के क्षेत्र अपने निश्चित स्थान पर ही मिलते हों, यह आवश्यक नहीं । वे अपने स्थान से इधर या उधर थोड़े या अधिक हटे हुए भी हो सकते हैं । उदाहरण के लिए वृहस्पति-क्षेत्र का झुकाव शनि-क्षेत्र की ओर, शनि-क्षेत्र का वृहस्पति अथवा सूर्य-क्षेत्र की ओर, सूर्य-क्षेत्र का शनि अथवा बुध-क्षेत्र की ओर एवं बुध-क्षेत्र का सूर्य-क्षेत्र की ओर झुकाव भी हो सकता है । ऐसी स्थिति में 'मैग्नीफाइंग ग्लास' अर्थात् आतशी शीशे द्वारा देखकर यह पता लगाना चाहिए कि किस ग्रह-क्षेत्र का शिखर कहाँ है ? हथेली की त्वचा पर जो सूक्ष्म धारियाँ होती हैं, वे प्रत्येक क्षेत्र के शिखर पर आकर परस्पर मिलती हैं । ग्रह-क्षेत्र की स्थिति का सही परिज्ञान उन्हीं के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है ।

जिस ग्रह-क्षेत्र का शिखर अपने स्थान से खिसककर दूसरे ग्रह-क्षेत्र की ओर चला जाता है, उसके स्वाभाविक-गुणों में अन्तर आ जाता है । यथार्थ में, उसमें दोनों ग्रह-क्षेत्रों के गुणों का सम्मिश्रण हो जाता है । अस्तु, अपने स्थानों से हटे हुए किसी ग्रह-क्षेत्र के सम्बन्ध में विचार करते समय उसका झुकाव जिस दूसरे ग्रह-क्षेत्र की ओर हो, उसके गुणों को भी सम्मिलित कर लेना चाहिए ।

हाथ की रेखाऐं और चिह्न : एक परिचय

हाथ में सात प्रधान तथा सात गौण– कुल चौदह रेखाऐं होती हैं, जिनके नाम निम्नानुसार हैं, तथापि इन सभी रेखाओं का प्रत्येक हाथ में होना आवश्यक नहीं है । गौण-रेखाऐं तो अधिकांश हाथों में होती ही नहीं, किसी-किसी हाथ में अनेक मुख्य रेखाओं का भी अभाव रहता है।

मुख्य रेखाऐं

1. **जीवन-रेखा**– यह शुक्र क्षेत्र को घेरे रहती है । यह तर्जनी तथा अँगूठे के मध्य क्षेत्र से निकलकर मणि-बंध की ओर जाती है ।

2. **मस्तक-रेखा**– यह हथेली के मध्य भाग में रहती है तथा जीवन-रेखा के उद्गम-स्थल के समीप ही कहीं से आरम्भ होकर द्वितीय मंगल-क्षेत्र अथवा चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती है ।

3. **हृदय-रेखा**– यह मस्तक-रेखा के समानान्तर चलती है तथा हथेली पर बुध-क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होकर गुरु-क्षेत्र की ओर जाती है ।

4. **सूर्य-रेखा**– यह हथेली के मध्यभाग, प्रायः मंगल के मैदान (दोनों मंगल क्षेत्रों के मध्य का स्थान) अथवा मस्तक या हृदय-रेखा के नीचे से आरम्भ होकर, ऊपर चढ़ती हुई सूर्य-क्षेत्र तक जाती है ।

5. **भाग्य-रेखा**– यह हथेली के मध्यभाग में रहती है तथा मणिबंध अथवा उसके समीप कहीं से आरम्भ होकर शनि-क्षेत्र को जाती है ।

6. **स्वास्थ्य-रेखा**– यह बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर शुक्र-क्षेत्र की ओर जाती है ।

7. **विवाह रेखा**– यह बुध क्षेत्र पर आड़ी रेखा के रूप में रहती है । ये रेखायें एक के स्थान पर अनेक भी हो सकती हैं ।

टिप्पणी– 1. उक्त सात मुख्य रेखाओं में से स्वास्थ्य-रेखा अधिकांश हाथों में देखने को नहीं मिलती ।

2. 'जीवन-रेखा' को 'आयु-रेखा', 'मस्तक-रेखा' को 'शीर्ष-रेखा' तथा 'सूर्य-रेखा' को 'सम्मान', 'यश' अथवा 'प्रतिभा-रेखा' भी कहा जाता है।

गौण रेखाऐं

1. **मंगल-रेखा**– यह प्रथम मंगल-क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन-रेखा के भीतरी भाग में शुक्र-क्षेत्र पर रहती है ।

2. **वासना-रेखा**– यह स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर चलती है तथा शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र की ओर जाती है ।

3. **अतीन्द्रिय-ज्ञान-रेखा**– यह एक अर्द्धवृत्त के रूप में बुध-क्षेत्र से चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती है ।
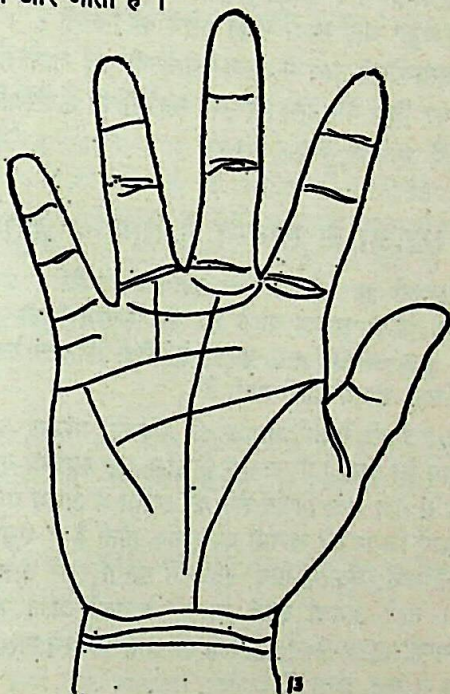
(हथेली पर पाई जाने वाली प्रमुख रेखाएँ)

4. शुक्र-मुद्रिका– यह हृदय-रेखा के ऊपर प्रायः सूर्य तथा शनि-क्षेत्रों को घेरे रहती है ।

5. शनि-मुद्रिका– यह शनि-क्षेत्र को घेरे हुये रहती है ।

6. वृहस्पति-मुद्रिका– यह वृहस्पति-क्षेत्र को अँगूठी की भाँति घेरे रहती है ।

7. मणिबंध रेखाऐं– ये रेखाऐं मणिबन्ध (कलाई) पर प्रायः तीन की संख्या में होती हैं ।

टिप्पणी– 1. उपर्युक्त गौण-रेखाओं में से मणिबन्ध रेखाएँ अधिकांश हाथों में पाई जाती हैं । इनकी संख्या में न्यूनाधिकता भी हो सकती है। अन्य रेखाऐं बहुत थोड़े हाथों में ही देखने को मिलती हैं ।

2. किसी-किसी हाथ में यात्रा-रेखायें भी पाई जाती हैं ।

दिए गए चित्र में हथेली पर उक्त रेखाओं की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है । (देखें चित्र नं० 13)

रेखाओं के सम्बन्ध में सामान्य ज्ञातव्य

1. रेखाओं का सुस्पष्ट होना उत्तम रहता है । अत्यधिक पतली अथवा चौड़ी, पीले अथवा काले रंग की निस्तेज, टूटी-फूटी, लहरदार, द्वीप-चिह्न युक्त अथवा अन्य प्रकार के दोषों से युक्त रेखाऐं प्रभावहीन अथवा हानिकर प्रभाव वाली होती हैं ।

लाल वर्ण की रेखाऐं जातक को उत्साही, सक्रिय, आशावादी तथा स्थिर स्वभाव का बनाती हैं, जबकि निस्तेज रेखा स्वास्थ्य को दुर्बल, स्फूर्ति एवं उत्साह से हीन तथा निर्णय लेने की क्षमता में अक्षम बनाती है । पीले रंग की रेखाऐं जिगर की खराबी की सूचक होती हैं । ऐसी रेखाओं वाला जातक मितभाषी, एकान्त-प्रिय, स्वयं में खोया रहने वाला तथा घमण्डी होता है । गहरे अथवा काले रंग की रेखाओं वाला जातक हठधर्मी, उदासीन, गम्भीर तथा अपने प्रतिपक्षी को क्षमा न करने वाला तथा प्रतिशोध की भावना से युक्त होता है ।

2. बहुत-सी रेखाऐं बनती-मिटती अथवा घटती-बढ़ती भी हैं । कुछ के स्वरूप में भी परिवर्तन हो सकता है । जातक के कर्मानुसार ऐसे

परिवर्तन होते हैं । हस्त-परीक्षा के समय केवल एक ही लक्षण को देखकर शुभाशुभ का निर्णय नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी लक्षणों को ध्यान में रखकर ही फलादेश करना चाहिए । अन्तिम निर्णय लेने से पूर्व दोनों हाथों की परीक्षा करना उचित है ।

3. जब किसी मुख्य रेखा के साथ कोई सहायक रेखा साथ चल रही हो तो वह मुख्य रेखा को अतिरिक्त बल प्रदान करती है । ऐसी स्थिति में यदि मुख्य रेखा कहीं टूटी-फूटी हो तो सहायक-रेखा उस क्षति की पूरक बन जाती है ।

4. यदि कोई मुख्य रेखा अथवा सहायक-रेखा अपने अन्तिम भाग में दो शाखाओं में बँट जाये तो वह उस रेखा के प्रभाव में वृद्धि करती है।

5. रेखा के अन्त में 'गोपुच्छ' जैसा चिह्न कमजोरी का सूचक होता है । यह चिह्न रेखा के सद्गुण को नष्ट कर देता है ।

6. यदि किसी रेखा के ऊपर शाखाऐं उठी हुई हों तो रेखा को बल मिलता है, परन्तु यदि शाखाऐं नीचे की ओर लटकी हों तो विपरीत प्रभाव होता है । हृदय-रेखा के आरम्भ में ऐसी शाखाऐं महत्वपूर्ण होती हैं । ऊपर उठी हुई शाखाऐं प्रेम की गम्भीरता की सूचक होती हैं तथा नीचे जाने वाली शाखाऐं विपरीत फल देती हैं । इसी प्रकार मस्तक-रेखा के ऊपर उठी हुई शाखाऐं चातुर्य, कुशलता एवं महत्वाकांक्षा की सूचक होती हैं एवं भाग्य-रेखा पर ऊपर उठी शाखाऐं व्यावसायिक सफलता की प्रतीक होती हैं ।

7. रेखा का श्रृंखलाकार होना उसे दुर्बल बनाता है तथा किसी स्थान पर टूट जाना असफलता का सूचक होता है । लहरदार रेखा भी निर्बल होती है ।

8. प्रधान रेखा के साथ चलने वाली सूक्ष्म केशकीय रेखाऐं प्रधान रेखा को बलहीन बनाती हैं ।

यदि पूरी हथेली अनेक रेखाओं से भरी हो तो जातक को चिन्तापूर्ण एवं शीघ्र घबड़ा जाने वाला समझना चाहिए ।

नीचे दिए गए चित्र में रेखाओं के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित किया गया है—
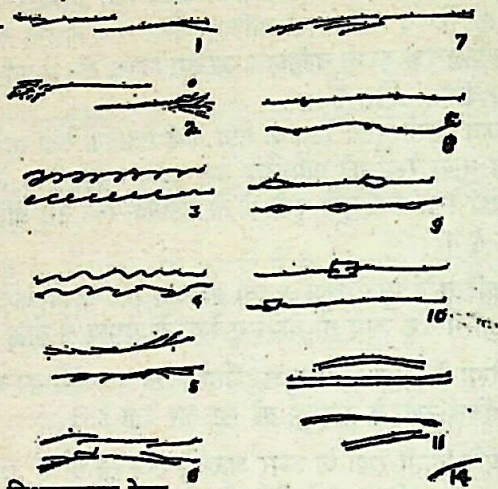
1. द्विशाखायुक्त रेखा
2. गोपुच्छाकृति रेखा
3. श्रृंखलाकार रेखा
4. लहरदार रेखा
5. ऊपर तथा नीचे शाखाओं वाली रेखा
6. टूटी-फूटी रेखाऐं
7. केशकीय रेखाऐं
8. बिन्दु चिह्नयुक्त रेखा
9. द्वीप चिह्नयुक्त रेखा
10. वर्ग चिह्नयुक्त रेखा
11. सहायक रेखायें।

जीवन-रेखा

जीवन-रेखा वृहस्पति-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ होकर, हथेली के मध्य-भाग की ओर होती हुई तथा शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध की ओर जाकर समाप्त होती है । इस रेखा द्वारा आयु, बीमारी तथा मृत्यु का विचार किया जाता है । अन्य रेखाओं द्वारा घटनाओं का जो पूर्वाभास मिलता है, यह रेखा उसकी पुष्टि करती है ।
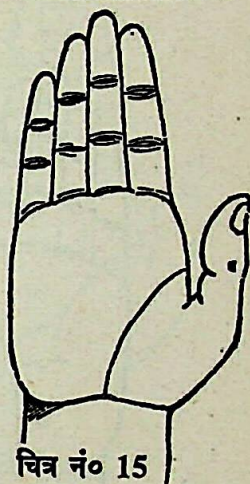
चित्र नं० 15

लम्बी, गहरी, पतली, बिना टूट-फूट की, क्रास-चिह्न रहित तथा दोष-हीन जीवन-रेखा, दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवनी शक्ति की सूचक होती है । (देखें चित्र नं० 15)
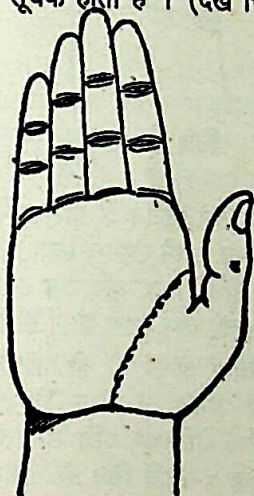
श्रृंखलाकार अथवा जंजीर जैसी जीवन-रेखा निर्बल स्वास्थ्य की द्योतक होती है। यदि हथेली मुलायम हो तो स्वास्थ्य अधिक खराब रहता है ।

(देखें चित्र नं० 16)

चित्र नं० 16

यह रेखा बाँये हाथ में टूटी तथा दाँये हाथ में दोष-रहित सम्पूर्ण हो तो किसी गम्भीर बीमारी की सूचक होती है । यदि दोनों हाथों में टूटी

हो तो मृत्यु का संकेत करती है । इस रेखा का टूटा हुआ एक भाग शुक्र क्षेत्र के भीतर की ओर मुड़ जाये तो मृत्यु निश्चित समझनी चाहिए।

यदि जीवन-रेखा वृहस्पति-क्षेत्र के मूल स्थान से आरम्भ हुई हो तो यह समझना चाहिए कि जातक प्रारम्भ से ही महत्वाकांक्षी है ।

(देखें चित्र नं० 17)
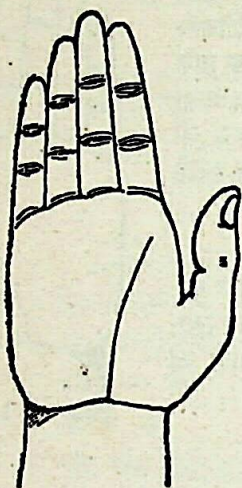
चित्र नं० 17
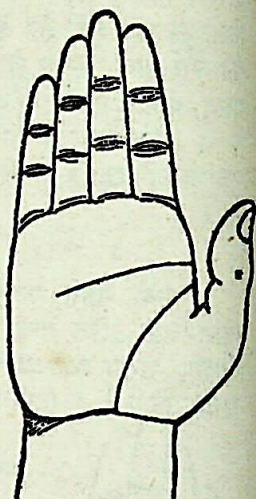
चित्र नं० 18

जीवन-रेखा प्रारम्भ में श्रृंखलाकार हो तो उसे जीवन के प्रारम्भ में अस्वस्थता का सूचक समझना चाहिए । यह रेखा अपने उद्‌गम स्थल पर मस्तक-रेखा से भली-भाँति जुड़ी हो तो जातक युक्ति संगत, बुद्धिमान तथा अपने से सम्बन्धित सभी कामों एवं बातों में सतर्क रहने वाला होता है ।

जीवन-रेखा एवं मस्तक-रेखा के बीच थोड़ा अन्तर हो तो जातक अधिक स्वतन्त्र-विचारों का होता है । यदि अन्तर अत्यधिक हो तो दु:साहसी, जल्दबाज तथा आवेशात्मक होता है । ऐसे लोग युक्ति-संगतता से काम न लेकर प्रायः असफलता प्राप्त करते हैं । (देखें चित्र नं० 18)

यदि जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा एवं हृदय-रेखा-ये तीनों ही एक साथ जुड़ी हों तो उसे अत्यन्त दुर्भाग्य-सूचक समझना चाहिए । ऐसी रेखा वाले आवेश अथवा बुद्धिहीनता के कारण स्वयं को संकटों में डाल लेते हैं, उन्हें आसन्न-विपत्ति का अहसास तक नहीं होता । (देखें चित्र नं० 19)
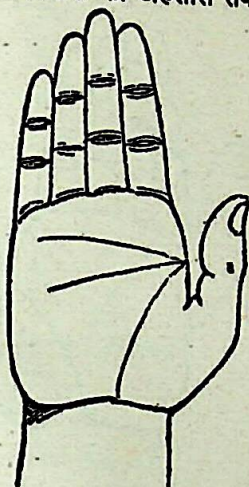
चित्र नं० 19
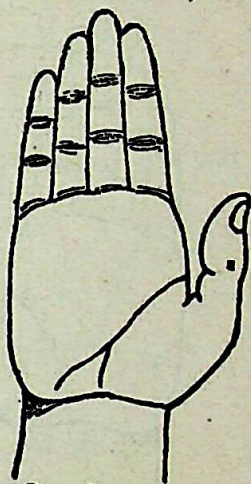
चित्र नं० 20

यदि जीवन-रेखा अपने मध्यभाग में बँट गई हो और उसकी एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र के मूल-स्थान पर जा पहुँची हो, साथ ही हाथ की बनाबट सुदृढ़ तथा अच्छी हो तो जातक अधीर एवं अस्थिर स्वभाव का होता है, साथ ही वह मद्यपान आदि उत्तेजनापूर्ण अवसरों का लालायित रहता है। (देखें चित्र नं० 20)

यदि जीवन-रेखा से निकली छोटी-छोटी सूक्ष्म-रेखाऐं नीचे की ओर गिर रही हों तो जातक की उस आयु में, जीवनी-शक्ति में कमी आती है। ऐसी रेखाऐं प्रायः जीवन-रेखा के अन्तिम भाग में पाई जाती हैं । ऐसी सूक्ष्म-रेखाऐं यदि ऊपर की ओर जा रही हों तो वे जातक को अधिकार, सफलता एवं आर्थिक-लाभ देने वाली होती हैं । (देखें चित्र नं० 21)

जीवन-रेखा से निकली कोई रेखा वृहस्पति-क्षेत्र की ओर चली गई हो तो जातक अपने व्यवसाय अथवा पद में वृद्धि प्राप्त करता है तथा उसकी

महत्वाकांक्षाएें पूर्ण होती हैं । ऐसी रेखा यदि शनि-क्षेत्र की ओर जाकर भाग्य-रेखा के बराबर चले तो धन-लाभ होता है एवं परिश्रम द्वारा सांसारिक इच्छाऐं पूर्ण होती हैं । यदि ऐसी रेखा सूर्य-क्षेत्र की ओर गई हो तो जातक को विशिष्टता एवं यश का लाभ होता है । इस प्रकार की रेखा यदि बुध-क्षेत्र
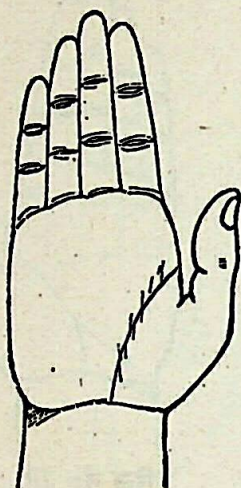
चित्र नं० 21
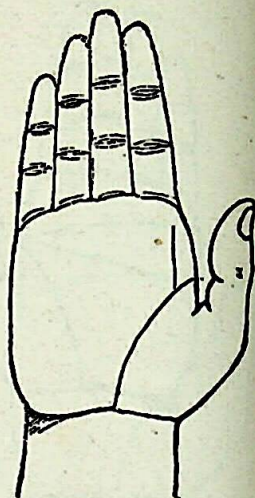
चित्र नं० 22

पर गई हो तो हाथ की बनावट के अनुसार जातक को व्यावसायिक अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है । कोनिक हाथ में ऐसी रेखा हो तो जुए, सट्टे आदि के व्यवसाय से आर्थिक-सफलता मिलती है ।

(देखें चित्र नं० 22)

यदि जीवन रेखा अपने अन्तिम भाग में दो शाखाओं में विभाजित हो गई हो तथा शाखाओं के बीच पर्याप्त अन्तर भी हो तो जातक की मृत्यु अपने जन्म-स्थान से कहीं बाहर होती है । (देखें चित्र नं० 23)

जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न रोग-सूचक होता है । यदि द्वीप-चिह्न रेखा के प्रारम्भ में हो तो जातक के जन्म के सम्बन्ध में कोई रहस्य छिपा होता है । जीवन-रेखा पर वर्ग- चिह्न मृत्यु से रक्षा करता है । यदि

द्वीप-चिह्न वर्ग-चिह्न से घिरा हो तो बीमारी से सुरक्षा होती है ।

(देखें चित्र नं० 24)
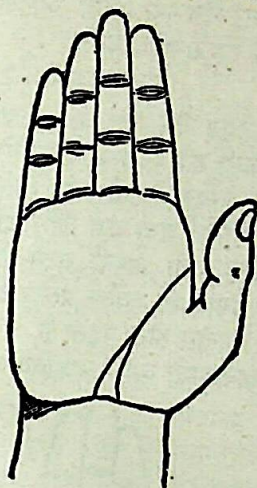
चित्र नं० 23
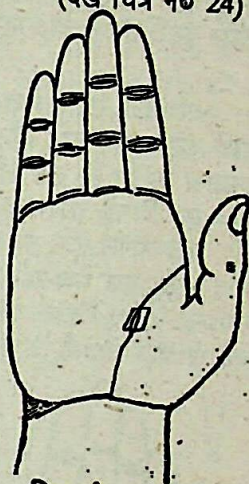
चित्र नं० 24

जो सुन्दर तथा सम-रेखाऐं जीवन-रेखा के साथ चलती हैं, वे जातक के जीवन पर अच्छा प्रभाव डालती हैं तथा जो आड़ी-तिरछी-रेखाऐं जीवन-रेखा को काटती हैं, वे विरोधों, बाधाओं तथा चिन्ताओं की सूचक होती हैं । ऐसी रेखायें यदि केवल जीवन-रेखा को काट रही हों तो यह समझना चाहिए कि जातक के सम्बन्धीजन उसके पारिवारिक-जीवन में हस्तक्षेप करके परेशानियाँ खड़ी कर रहे हैं । यदि जीवन-रेखा को काटकर भाग्य-रेखा पर पहुँच रही हों तो व्यावसायिक अथवा आमदनी के अन्य क्षेत्रों में जातक का विरोध किया जाता है । यदि मस्तक-रेखा तक पहुँच रही हों तो विरोधी जन जातक के मन तथा विचारों पर प्रभाव डालते हैं। यदि हृदय-रेखा को काटें तो यह समझना चाहिए कि उसके विरोधी उसके प्रेम-सम्बन्धी मामलों में हस्तक्षेप कर बाधाऐं उत्पन्न करेंगे । इन घटनाओं का समय जीवन-रेखा के कटने के स्थान से निर्धारित किया जाता है । ऐसी रेखाऐं यदि सूर्य-रेखा को काटें तो जातक की यश-प्रतिष्ठा को हानि पहुँचती है । यदि विवाह-रेखा को स्पर्श करें तो वैवाहिक सम्बन्ध-विच्छेद हो सकता है । इस प्रकार की रेखाऐं यदि द्वीप-चिह्न युक्त भी हों तो

जातक को अपयश, विरोध अथवा अपमान का सामना करना पड़ता है । परन्तु ऐसी रेखाएँ जीवन-रेखा के समानान्तर चल रही हों तो 'जातक का जीवन दूसरों से अत्यन्त प्रभावित हुआ है'– यह समझना चाहिए ।

(देखें चित्र नं० 25)

यदि कोई रेखा 'मंगल-क्षेत्र' से निकलकर नीचे तथा जीवन-रेखा का स्पर्श करे अथवा काटे और यह योग किसी स्त्री के हाथ में हो तो यह समझना चाहिए कि उस स्त्री का अनुचित सम्बन्ध किसी अन्य व्यक्ति के साथ था, जिसके कारण वह अत्यधिक चिन्तित तथा कष्ट की स्थिति में है। यदि मंगल-क्षेत्र से आने वाली उक्त रेखा अपनी सूक्ष्म-शाखायें जीवन-रेखा तक भेज रही हो तो इसका प्रभाव भी पूर्वोक्त प्रकार का ही समझना चाहिए जिसके कारण बार-बार चिन्तित होना पड़ता है । इससे यह भी ज्ञात होता है कि उसे चिन्तित रखने वाला व्यक्ति पाशविक-प्रवृत्ति
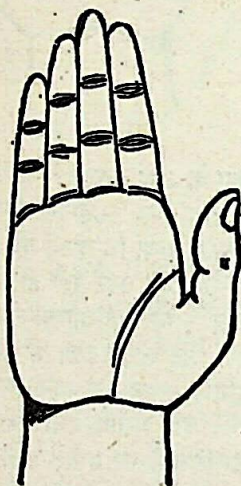
चित्र नं० 25
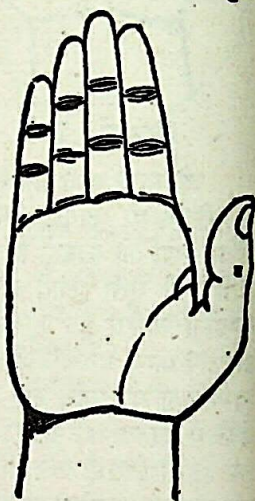
चित्र नं० 26

एवं कामुक-स्वभाव का है परन्तु यदि कोई छोटी रेखा जीवन-रेखा के भीतर की ओर उसके समानान्तर चल रही हो तो समझना चाहिए कि ऐसी स्त्री के जीवन में प्रवेश करने वाला पुरूष नम्र स्वभाव का है तथा उसे विशेष रूप से प्रभावित करने वाला भी है । (देखें चित्र नं० 26)

किसी भी स्थान से आरम्भ होने वाली कोई छोटी रेखा यदि जीवन-रेखा के साथ चलती हुई शुक्र-क्षेत्र के भीतर मुड़ जाये तो यह समझना चाहिए कि वह स्त्री जिस पुरुष से सम्बन्धित है, वह कुछ समय बाद उसे बिल्कुल भुला देगा । यदि ऐसी रेखा किसी द्वीप-चिह्न में प्रविष्ट हो जाये अथवा स्वयं ही द्वीप के रूप में बदल जाये तो यह समझना चाहिए कि स्त्री को उस पुरुष से सम्बन्ध के कारण कलंकित होना पड़ेगा । यदि ऐसी रेखा किसी स्थान पर अलक्षित होने के बाद पुनः उभर आये तो सम्बन्धित पुरुष का प्रेम कुछ समय तक शान्त रहने के बाद पुनः जागृत हो उठता है, परन्तु उक्त रेखा एकदम फीकी पड़ जाये तो या तो प्रेम-सम्बन्ध टूट जाता है अथवा प्रेमी-पुरुष की मृत्यु हो जाती है ।

उक्त प्रकार की रेखाओं में से कोई रेखा यदि जीवन-रेखा को काटती हुई किसी आड़ी रेखा से जा मिले तो सम्बन्धित पुरुष का प्रेम किसी अन्य व्यक्ति के षड़यन्त्र के कारण घृणा में बदल जाता है तथा स्त्री-जातक को उस आयु में क्षति पहुँचती है, जबकि यह जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा का स्पर्श करती है । ऐसी प्रभाव-रेखायें जीवन-रेखा से जितनी दूर हों, जातक पर दूसरों का प्रभाव उतना ही कम पड़ता है । निकट की रेखाऐं ही विशेष प्रभाव डालती हैं । (देखें चित्र नं० 27)
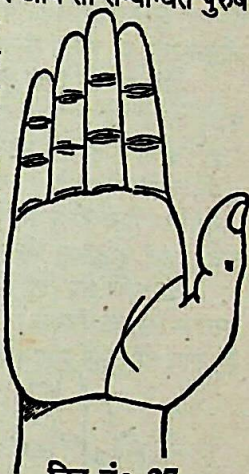
चित्र नं० 27

यदि जीवन-रेखा के दूर तक फैली होने के कारण शुक्र-क्षेत्र बड़ा हो तो जातक दीर्घायु एवं शक्ति-सम्पन्न होता है । परन्तु जीवन-रेखा के कारण शुक्र-क्षेत्र संकीर्ण हो गया हो तो शारीरिक-शक्ति में कमी आती है । जीवन-रेखा जितनी ही छोटी होती है, आयु भी उतनी ही कम होती है ।

जीवन-रेखा सम्भावित आयु का निर्देशन मात्र करती है, मृत्यु का निश्चित समय नहीं बता सकती । दुर्घटना आदि के कारण सम्भावित आयु से पहले भी मृत्यु हो सकती है । अन्य रेखाओं पर जातक-चिह्न भी जीवन-रेखा द्वारा निर्देशित आयु में कमी ले आते हैं । यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा के बराबर लम्बी हो तो यह जिस स्थान पर जीवन-रेखा से मिलेगी, वही मृत्यु का समय होगा ।

मस्तक - रेखा

मस्तक-रेखा अथवा शीर्ष-रेखा द्वारा जातक की बौद्धिक-शक्ति के सम्बन्ध में विचार किया जाता है । यह रेखा तीन स्थानों से आरम्भ होती है–(1) वृहस्पति-क्षेत्र के मध्य से, (2) जीवन-रेखा के आरम्भ से तथा (3) जीवन-रेखा के भीतर मंगल-क्षेत्र से ।

यदि मस्तक-रेखा वृहस्पति-क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन-रेखा का स्पर्श करती हो तथा लम्बी हो तो अत्यन्त सबल मानी जाती है । ऐसी रेखा वाला जातक महत्वाकांक्षी, स्फूर्तिवान्, उत्साही, सुयोग्य तथा दृढ़निश्चयी होता है । वह दूसरों पर शासन करता है तथा स्वयं भी अनुशासन-प्रिय होता है । ऐसा व्यक्ति किसी पर अत्याचार नहीं करता तथा बहुत बुद्धिमान भी होता है ।

वृहस्पति-क्षेत्र से निकलकर जीवन-रेखा से कुछ दूर रहने वाली मस्तक-रेखा के स्वामी में भी उपर्युक्त विशेषतायें कुछ कम मात्रा में होती हैं, साथ ही उसमें प्रशासनिक योग्यता तथा कूटनीतिक गुण भी कम पाये
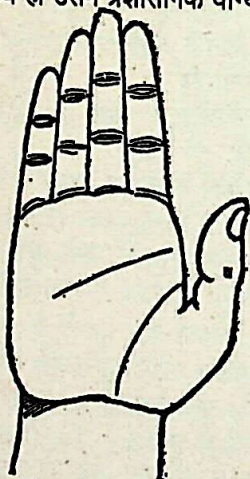
चित्र नं० 28
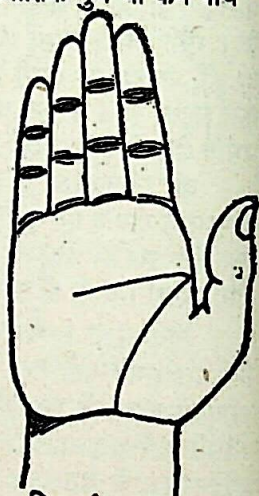
चित्र नं० 29

जाते हैं । ऐसी रेखा वाला जातक निर्णय लेने में जल्दबाजी करता है तथा अधीर होता है, परन्तु संकट-काल में शीघ्र निर्णय लेकर अपनी नेतृत्व-क्षमता से लाभ उठाता है । यदि दोनों रेखाओं के बीच का अन्तर बहुत अधिक हो तो जातक दुःसाहसी, अहंवादी तथा बिना विचारे काम करने वाला होता है। (देखें चित्र नं० 28)

यदि मस्तक-रेखा अपने प्रारम्भ में जीवन-रेखा से जुड़ी हो तो जातक संवेदनशील, सावधान तथा प्रत्येक काम को बहुत सोच-विचार के बाद ही करने वाला होता है । (देखें चित्र नं० 29)

यदि मस्तक-रेखा प्रथम मंगल-क्षेत्र के भीतर से आरम्भ हुई हो तो जातक चिड़चिड़े, अस्थिर तथा चिन्तित स्वभाव का होता है । वह पड़ोसियों से लड़ता-झगड़ता रहता है तथा उसे दूसरों की प्रत्येक बात में कोई न कोई दोष दिखाई देता है । (देखें चित्र नं० 30)
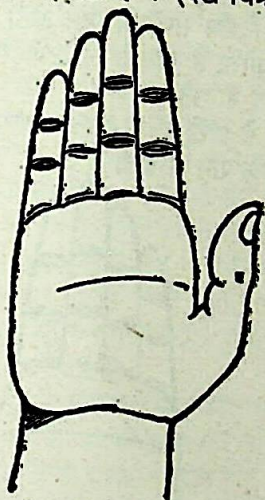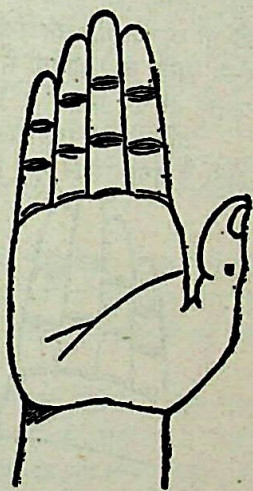
चित्र नं० 30 चित्र नं० 31

यदि मस्तक-रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो तो जातक व्यावहारिक-बुद्धि-सम्पन्न यथार्थवादी होता है ।

यदि मस्तक-रेखा पहले तो सीधी चले, फिर हल्का-सा ढलान ले ले तो जातक व्यावहारिकता एवं कल्पनाशीलता में सन्तुलन स्थापित करने

वाला होता है ।

यदि सम्पूर्ण मस्तक-रेखा ढलान लिए हुये हो तो जातक अधिक कल्पनाशील तथा आविष्कार प्रवृत्ति का होता है, परन्तु अत्यधिक ढलान हो तो जातक रोमांटिक हो जाता है । यदि ढलानयुक्त मस्तक-रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर पहुँचकर दो शाखाओं वाली (द्विजिह्व) हो गई हो तो जातक अपनी कल्पना-शक्ति के सहारे साहित्य-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है ।

(देखें चित्र नं० 31)

यदि मस्तक-रेखा एकदम सीधी तथा लम्बी होकर हथेली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई हो तो जातक में सामान्य से अधिक बौद्धिक-क्षमता होती है, जिसका उपयोग वह अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही करता है । (देखें चित्र नं० 32)

यदि मस्तक-रेखा सीधी जाकर मंगल-क्षेत्र पर कुछ ऊपर की ओर मुड़ गई हो तो जातक को व्यावसायिक-क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है । ऐसा व्यक्ति बड़ी शीघ्रता से धन-संचय करता है तथा अपने अधीनस्थों से कठिन परिश्रम कराता है । (देखें चित्र नं. 33)

यदि मस्तक-रेखा असाधारण रूप से छोटी हो तो जातक अल्पजीवी होता है तथा उसकी मृत्यु किसी मानसिक रोग से होती है ।
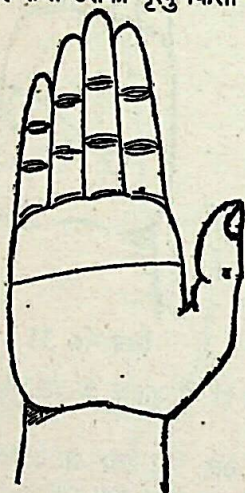
चित्र नं० 32
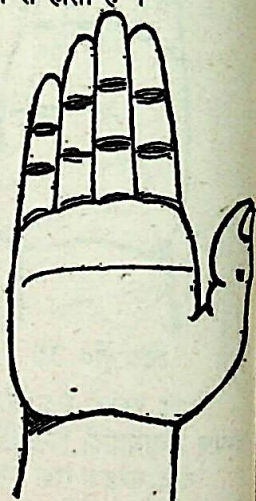
चित्र नं० 33

यदि मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो जातक की युवावस्था में ही आकस्मिक मृत्यु हो जाती है ।

यदि मस्तक-रेखा श्रृंखलाकार हो अथवा छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो तो जातक अस्थिर-बुद्धि वाला होता है ।

यदि मस्तक-रेखा में छोटे-छोटे द्वीप-चिह्न तथा सूक्ष्म-रेखाऐं हों तो जातक के सिर में स्थायीरूप से पीड़ा बनी रहती है अथवा कोई अन्य शिरो-रोग होता है ।

यदि मस्तक-रेखा अपने सामान्य स्थान से ऊँचाई पर हो तथा हृदय-रेखा से उसकी दूरी बहुत कम रह गई हो तो जातक के हृदय पर मस्तिष्क का पूर्ण आधिपत्य रहता है ।

यदि मस्तक-रेखा अपने अन्तिम भाग में मुड़ गई हो अथवा नीचे की ओर जाते समय उसमें से निकली कोई शाखा किसी ग्रह-क्षेत्र में चली गई हो तो वह जिस ग्रह-क्षेत्र में जाती है, उसके गुण भी मस्तक-रेखा में सन्निहित हो जाते हैं । चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाने पर कल्पना-शक्ति एवं रहस्यवादिता की वृद्धि होती है । बुध-क्षेत्र में जाने पर व्यवसाय तथा विज्ञान के क्षेत्र में रुचि बढ़ती है । सूर्य-क्षेत्र में जाने पर दुष्कर्म में प्रवृत्ति होकर अपयश मिलता है । शनि-क्षेत्र में जाने पर धर्म, दर्शन तथा संगीत के प्रति गम्भीर झुकाव होता है । वृहस्पति-क्षेत्र में जाने पर स्वाभिमान की वृद्धि होती है तथा अधिकार प्राप्ति की आकांक्षा बढ़ती है ।

यदि मस्तक-रेखा में से निकली कोई रेखा हृदय-रेखा में जा मिले तो जातक का किसी विपरीत-लिङ्ग के प्रति इतना अधिक आकर्षण होता है कि वह युक्ति-संगतता एवं बुद्धिमानी का परित्याग कर, संकटों का भी वरण कर लेता है ।

दुहरी मस्तिष्क-रेखा बहुत कम हाथों में दिखाई देती है । ऐसी रेखा वाले जातक की मस्तिष्क एवं मानसिक शक्ति दूनी हो जाती है । उसके स्वभाव भी दो प्रकार के होते हैं । एक ओर जहाँ वह नम्र तथा संवेदनशील होता है, वहीं दूसरी ओर आत्म-विश्वासपूर्ण, क्रूर तथा गरिमा-रहित होता है । ऐसे लोग सर्वतोमुखी गुणी होते हैं । इन्हें भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है । ये प्रबल इच्छा-शक्ति सम्पन्न तथा दृढ़निश्चयी भी होते हैं।

(देखें चित्र नं. 34)

यदि मस्तक-रेखा दोनों हाथों में टूटी हो तो सिर में चोट लगती है अथवा कोई अन्य दुर्घटना घटती है । मस्तक-रेखा पर द्वीप-चिह्न निर्बलता

का सूचक होता है । यदि मस्तक-रेखा द्वीप-चिह्न पर समाप्त हो गई हो तो मानसिक-रोग से कभी मुक्ति नहीं मिलती ।

यदि मस्तक-रेखा अथवा उससे निकली कोई शाखा गुरु-क्षेत्र पर किसी नक्षत्र-चिह्न से जा मिले तो जातक की सभी योजनायें तथा कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं । (देखें चित्र नं. 35)

यदि मस्तक-रेखा से निकली अनेक सूक्ष्म रेखाऐं हृदय-रेखा की ओर उठी हों तो जातक प्रेम का ढोंग करता है, सच्चा प्रेमी नहीं होता है । यदि मस्तक-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक अपने साहस द्वारा किसी दुर्घटना या प्रहार से अपनी रक्षा करता है ।
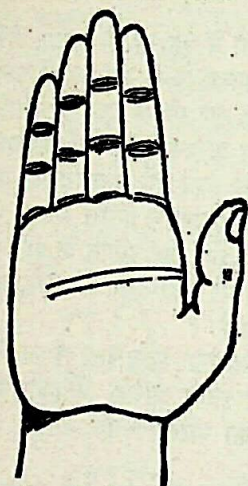
चित्र नं० 34
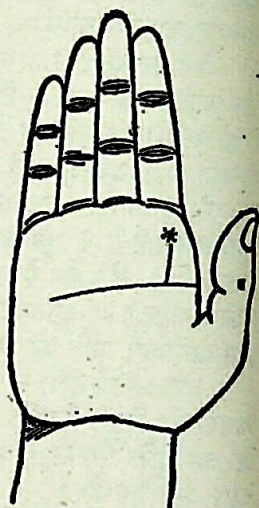
चित्र नं० 35

मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच अधिक अन्तर न होना शुभ माना गया है । मध्यम अन्तर जातक को आत्मविश्वासी तथा स्फूर्तिवान् बनाता है, उसकी विचारशक्ति भी तीव्र होती है, परन्तु उसके स्वभाव में अत्यधिक आत्मविश्वास, अधीरता एवं जल्दबाजी बहुत होती है, जिसके कारण काम बिगड़ भी जाता है । यदि अन्तर बहुत अधिक हो तो जातक अत्यन्त उतावला होता है तथा आत्मविश्वास की सीमा को भी पार कर जाता है ।

यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा के साथ कुछ दूर तक जुड़ी चली गई हो तथा यह जोड़ नीचे की ओर हो तो जातक में आत्मविश्वास की बहुत कमी पाई जाती है । ऐसे व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं तथा छोटी-छोटी बातों से ही दुःखी हो जाते हैं ।

मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में अन्य ज्ञातव्य निम्नानुसार हैं-

यदि मस्तक-रेखा लम्बी परन्तु अस्पष्ट हो तथा बुध-क्षेत्र अधिक उन्नत एवं विस्तृत हो तो जातक धोखेबाज होता है, परन्तु यदि बुध का क्षेत्र उन्नत न हो तो यह दुर्गुण नहीं होता ।

यदि मस्तक-रेखा लहरदार हो और वह सूर्य अथवा बुध-क्षेत्र के नीचे ऊँची होकर हृदय-रेखा के एकदम समीप जा पहुँचे तो उसे पागलपन का लक्षण समझना चाहिए ।

यदि मस्तक-रेखा लहरदार हो और हृदय-रेखा तथा उसके मध्य अन्तर कम हो, साथ ही बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बेईमान होता है ।

यदि मस्तक-रेखा बहुत छोटी हो तथा अँगूठा भी बहुत छोटा हो तो जातक बुद्धिहीन होता है । यदि मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो आकस्मिक मृत्यु की सम्भावना रहती है । यदि मस्तिष्क-रेखा उत्तम स्थिति की न हो तथा स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो जातक का हृदय कमजोर होता है । मस्तक-रेखा लम्बी तथा सुन्दर हो एवं शुक्र-क्षेत्र अधिक उन्नत न हो तो जातक का प्रेम अपनी पत्नी (पति) तक ही सीमित रहता है ।

यदि मस्तक-रेखा लम्बी होकर चन्द्र-क्षेत्र की ओर घूम गई हो तथा वृहस्पति-क्षेत्र उन्नत होने के साथ ही जाल-चिह्न युक्त भी हो तो जातक राजनीतिक क्षेत्र का प्रसिद्ध वक्ता होता है, परन्तु उसके कथन में ढोंग ही अधिक रहता है ।

यदि मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा दोनों ही सुन्दर एवं लम्बी हों तथा जीवन-रेखा के अन्तिम भाग पर त्रिकोण-चिह्न भी हो तो जातक बुद्धिमान एवं नीतिज्ञ होता है ।

यदि मस्तक-रेखा अपने अन्तिम भाग में दो शाखा-युक्त हो तो कल्पना पर व्यावहारिक बुद्धि का नियन्त्रण बना रहता है । यदि द्विशाखायुक्त मस्तिष्क-रेखा की एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र पर जाये और दूसरी हृदय-रेखा से जा मिले तो जातक प्रेम के लिए सर्वस्व समर्पण कर देता है ।

यदि मस्तक-रेखा लहरदार हो पर 'क्रास' का चिह्न भी हो तो सिर पर सांघातिक चोट लगती है । यदि 'क्रास' की जगह एक छोटी, गहरी,

आड़ी रेखा हो तो भी यही फल होता है ।

यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे शीर्ष रेखा पर 'काला दाग' हो तो जातक को नेत्र-रोग होता है । मस्तक-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो तो सिर में चोट लगती है । यदि दोनों हाथों की मस्तक-रेखाएँ नक्षत्र-चिह्न युक्त हों तो सिर की चोट से मृत्यु भी हो सकती है । यदि मस्तक-रेखा पर वृत्त-चिह्न तथा स्वास्थ्य-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक वृद्धावस्था में अन्धा हो जाता है । यदि सीधी मस्तक-रेखा हथेली को पार कर जाये तथा हृदय-रेखा सामान्य हो तो भावनाओं पर मस्तिष्क-शक्ति का अधिकार बना रहता है। ऐसी रेखा वाले जातक व्यावहारिक होते हैं । यदि मस्तक-रेखा पूर्वोक्त प्रकार की हो तथा हृदय-रेखा गायब हो तो जातक क्रूर, कठोर, कंजूस, लालची तथा दूसरों से जबर्दस्ती धन वसूलने वाला होता है । ऐसी रेखा यदि लाल रंग की हो तो जातक अधिक भयंकर होता है और यदि पीले रंग की हो तो नीच प्रकृति का होता है ।

मस्तक-रेखा ऊँची उठकर शनि-क्षेत्र पर जा पहुँचे तो जातक अल्पजीवी होता है, उसकी मृत्यु पक्षाघात आदि से होती है । यदि हृदय-रेखा को काटती हुई सूर्य-क्षेत्र पर जा पहुँचे तो हृदय-रोग का शिकार होता है। यदि बुध-क्षेत्र पर जा पहुँचे तो अर्थोपार्जन की योग्यता में वृद्धि होती है, परन्तु यदि ऐसी रेखा के अन्त में नक्षत्र-चिह्न हो तो सहसा मृत्यु हो सकती है ।

निम्न श्रेणी के हाथ में मस्तक रेखा सामान्यतः छोटी, सीधी तथा भारी होती है। ऐसे हाथ में मस्तक-रेखा चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हो तो जातक में कल्पनाशीलता आ जाती है जिसके कारण वह अन्ध-विश्वासी बन जाता है, फलतः पाशविक-वृत्ति कम हो जाती है ।

वर्गाकार हाथ में मस्तक-रेखा प्रायः लम्बी, सुस्पष्ट किन्तु कुछ झुकाव लिए होती है । इस झुकाव की मात्रा बढ़ जाये तो सक्रियता, स्वतन्त्रता, आत्मनिर्भरता, मौलिकता एवं आविष्कारक प्रवृत्ति में वृद्धि हो जाती है । मस्तिष्क-रेखा सीधी हो तो जातक अधीर, चिड़चिड़ा तथा असन्तुष्ट हो जाता है ।

दार्शनिक हाथ में मस्तक-रेखा स्वाभाविक रूप में लम्बी तथा जीवन-रेखा से जुड़ी होती है और हाथ में कुछ नीचे की ओर स्थित तथा नीचे की ओर ही झुकी भी रहती है । इस हाथ में यदि मस्तक-रेखा सीधी तथा ऊपर की ओर स्थित हो तो जातक प्रत्येक बात में दूसरों की आलोचना करने वाला तथा अनचाहा-विश्लेषक होता है । उसका उद्देश्य दूसरे के

कामों में दोष निकालना ही रहता है । ऐसा व्यक्ति विचित्र स्वभाव का होता है । वह कभी व्यावहारिक तो कभी कल्पनाशील बन जाता है ।

कलात्मक हाथ में मस्तक-रेखा अपने स्वाभाविक रूप में धीरे-धीरे झुकती हुई चन्द्र-क्षेत्र में पहुँचती है । ऐसी रेखा वाले सौन्दर्योपासक, स्वेच्छाचारी तथा रूढ़िमुक्त-स्वभाव वाले होते हैं । इनमें भावुकता, रोमांस तथा आदर्शवादिता भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती है । तथापि कलाकृतियों के प्रति आकर्षण होते हुए भी अपने कलापूर्ण विचारों को साकार कर पाने में असमर्थ रहते हैं । ऐसे हाथ में यदि मस्तक-रेखा सीधी हो तो जातक व्यावहारिक बन जाता है तथा अपने विचारों के क्रियान्वयन में सफल भी होता है । वह कला से अधिक धन की ओर आकर्षित होता है ।

आदर्श अथवा बहुत नुकीले हाथ में मस्तक-रेखा बहुत झुकी हुई होती है । ऐसी रेखा वाले जातक सपनों की दुनियाँ में विचरण करने वाले होते हैं। ऐसे हाथ में यदि मस्तक-रेखा सीधी हो तो कला के क्षेत्र में सफलता मिलती है, यद्यपि व्यवसाय एवं दुनियादारी के क्षेत्र में कमी बनी रहती है।

मस्तक-रेखा के परिवर्तित स्वरूपों को हाथ के अन्य चिह्नों से अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए ।

मस्तक-रेखा यदि चन्द्र-क्षेत्र में असाधारणरूप से झुकी हुई हो तो जातक की कल्पनाशीलता असाधारण एवं अस्वाभाविक रूप ग्रहण कर लेती है । इस प्रकार की मस्तक-रेखा के साथ ही यदि शनि-क्षेत्र असाधारणरूप से ऊँचा हो तो जातक प्रारम्भ से ही कल्पनाशील होता है और उनमें निराशा, चिड़चिड़ापन, उदासी, उत्साहहीनता एवं खिन्नता आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहती है, जिसके फलस्वरूप जातक अन्त में अपना मानसिक-सन्तुलन ही खो बैठता है ।

यदि झुकावदार मस्तक-रेखा के बीच में संकीर्ण द्वीपचिह्न हो तो उन्मादरोग अस्थायी होता है । यदि अँगूठा बहुत छोटा और अविकसित हो तथा मस्तक-रेखा चौड़ी एवं द्वीपों की श्रृंखला जैसी हो जातक जन्म से ही मूर्ख होता है ।

जब मस्तक-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान को छोड़कर ऊपर उठती हुई हृदय-रेखा पर अधिकार कर लेती है अथवा उससे भी ऊपर चली जाती है तो ऐसे जातक में अपराध करने की असाधारण प्रवृत्तियाँ जन्म ले लेती हैं और वे हत्या भी कर सकते हैं । इन रेखाओं के मिलन-वर्ष में ही ऐसी घटनायें घटित होती हैं ।

हृदय-रेखा

यह रेखा कभी वृहस्पति-क्षेत्र के मध्य से, कभी तर्जनी और मध्यमा के बीच से तो कभी शनि-क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र तक हथेली पार कर जाती है ।

यदि यह रेखा वृहस्पति-क्षेत्र से आरम्भ हुई हो तो जातक दृढ़ एवं आदर्श प्रेमी होता है तथा अपने प्रेमपात्र की पूजा किया करता है । अपने से निम्न-स्तर वाला व्यक्ति उसका प्रेम-पात्र नहीं हो सकता । कुलीनता एवं विशिष्टता उसके लिए आवश्यक है ।

यदि रेखा तर्जनी के एकदम नीचे से आरम्भ हुई हो तो जातक प्रेम में अन्धा हो जाता है । अपने प्रेमी के चुनाव में गलती हो जाने का एहसास होने पर ऐसी रेखा वाले लोग मानसिक रूप से अत्यधिक व्यथित हो जाते हैं ।

यदि हृदय-रेखा तर्जनी एवं मध्यमा के बीच से आरम्भ होई हो तो जातक शान्त एवं सच्चे मन से प्रेम करने वाला होता है । वह अपने प्रेमपात्र के लिए बेचैन अथवा अधीर नहीं होता । ऐसे लोग वृहस्पति-क्षेत्र के आदर्श एवं आत्माभिमान तथा शनि-क्षेत्र की उत्तेजना एवं गरिमा के बीच की स्थिति में रहते हैं ।

यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र से आरम्भ हुई हो तो जातक का प्रेम वासनात्मक होता है । वह प्रेम के मामले में स्वार्थी होता है । यदि हृदय-रेखा मध्यमा अँगुली के मूल-स्थान से आरम्भ हुई हो तो जातक की वासनात्मक प्रवृत्ति ओर अधिक तीव्र होती है । ऐसे लोग स्वार्थी भी होते हैं ।

यदि हृदय-रेखा अपनी स्वाभाविक लम्बाई से अधिक लम्बी हो तथा हथेली के एक छोर से दूसरे छोर तक चली गई हो तो जातक की प्रेम-

भावनाओं में अधिकता के साथ ही ईर्ष्या की प्रवृत्ति भी उत्पन्न हो जाती है ।। यदि हृदय-रेखा आरम्भ में उठकर तर्जनी के मूल-स्थान तक पहुँच गई हो तो यह प्रवृत्ति और भी अधिक बढ़ जाती है ।

(देखें चित्र नं० 36)
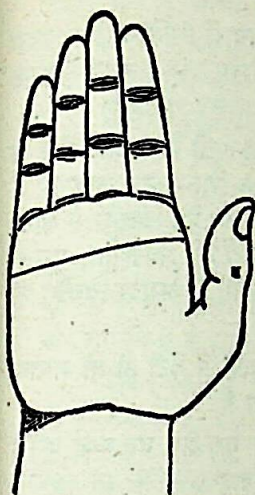
चित्र नं० 36
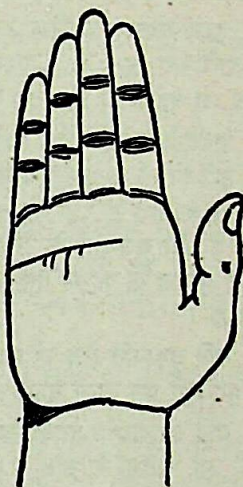
चित्र नं० 37

यदि नीचे से आने वाली अनेक रेखायें हृदय-रेखा पर गिर रही हों तो जातक व्यभिचारी होता है । वह चारों ओर अपने प्रेम का जाल फेंकता है, परन्तु किसी के साथ स्थिर प्रेम नहीं करता । (देखें चित्र नं० 37)

शनि-क्षेत्र से आरम्भ हुई हृदय-रेखा यदि चौड़ी तथा श्रृंखलाकार हो तो जातक का मन विपरीत-लिङ्ग के प्रति आकर्षित नहीं होता । विपरीत लिङ्गी भी उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं । (देखें चित्र नं० 38)
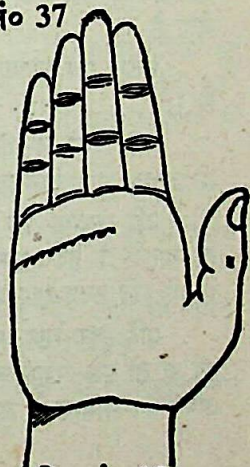
चित्र नं० 38

यदि हृदय-रेखा गहरी लाल रङ्ग की हो तो जातक हिंसात्मक एवं बलात्कारी भी हो सकता है ।

फीके रंग की हृदय-रेखा वाला जातक नीरस स्वभाव का होता है, प्रेम-प्रसंगादि में रुचि नहीं लेता ।

हृदय-रेखा मस्तक-रेखा के निकट हो तो विचारों (मस्तिष्क) पर हृदय का आधिपत्य रहता है । परन्तु यदि मस्तक-रेखा उठकर हृदय-रेखा के समीप जा पहुंची हो तो हृदय पर मस्तिष्क का प्रभाव रहता है ।

हृदय-रेखा छिन्न-छिन्न हो तो प्रेम में निराशा होती है । शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो प्रेम-सम्बन्ध जातक की इच्छा के विरुद्ध टूट जाता है । सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो आत्माभिमान के कारण प्रेम-सम्बन्ध में बाधा पड़ती है और बुध-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो विचारों की संकीर्णता, मूर्खता अथवा लालच के कारण प्रेम-सम्बन्ध में कमी आती है अथवा विच्छेद हो जाता है ।

यदि वृहस्पति-क्षेत्र पर हृदय-रेखा दो शाखाओं में बँटी हो तो जातक सच्चे हृदय से प्रेम करने वाला तथा उत्साही होता है ।

यदि शाखायुक्त हृदय-रेखा की एक शाखा गुरु-क्षेत्र पर तथा दूसरी तर्जनी एवं मध्यमा के बीच में चली गई हो तो जातक अनिश्चित स्वभाव का होने के कारण अपने वैवाहिक-जीवन को स्वयं ही कण्टकाकीर्ण बना लेता है ।

पतली एवं शाखाहीन हृदय-रेखा वाला जातक रूखे स्वभाव का होता है ।

यदि अपने समाप्ति-स्थल (बुध-क्षेत्र) पर हृदय-रेखा शाखायुक्त न हो तो जातक में सन्तानोत्पादन-क्षमता का अभाव होता है ।

यदि मस्तक-रेखा से निकली महीन रेखाऐं हृदय-रेखा का स्पर्श करें तो जातक के हृदय सम्बन्धी विषयों पर उनका प्रभाव पड़ता है । ऐसी रेखाऐं यदि हृदय-रेखा को काट दें तो प्रेम-सम्बन्धों को हानि पहुँचती है।

यदि हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा– तीनों परस्पर जुड़ी हुई हों तो इसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए । ऐसी रेखा वाला जातक अपने प्रेम-सम्बन्ध के कारण कुछ भी करने को तैयार हो जाता है ।

जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय-रेखा न हो अथवा नाममात्र को ही हो, वह घनिष्ठ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाता । यदि हथेली मुलायम हो तो ऐसा जातक अत्यधिक वासनापूर्ण भी हो सकता है । यदि हथेली कठोर हो तो प्रेम के मामले में नीरस होता है ।

यदि समुन्नत हृदय-रेखा आगे चलकर एकदम फीकी पड़ गई हो तो उसे प्रेम-सम्बन्ध में निराशा का सूचक समझना चाहिए ।

विशेष- हृदय-रेखा की परीक्षा करते समय शुक्र-क्षेत्र की स्थिति को भी ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि हृदय-रेखा एवं शुक्र-क्षेत्र– दोनों ही कामुक एवं प्रेम-प्रवृत्तियों से सम्बन्धित होते हैं ।

गहरी, अच्छे रङ्ग की, स्पष्टरूप से उभरी हुई तथा सब प्रकार के दोषों (टूटी-फूटी, श्रृंखलाकार होना आदि) से मुक्त हृदय-रेखा ही उत्तम प्रभाव देती है । हृदय-रेखा का लम्बी होना आवश्यक है, परन्तु उसे वृहस्पति-क्षेत्र के शिरो-बिन्दु से आगे नहीं जाना चाहिए ।

यदि हृदय-रेखा वृहस्पति-क्षेत्र के मूल स्थान पर मुड़कर नीची हो गई हो तो जातक को प्रेम एवं मैत्री-सम्बन्धों में निराशा का सामना करना पड़ता है, जबकि ऐसी रेखा वाले स्वयं तो सच्चे प्रेमी होते हैं, परन्तु उनका प्रेमपात्र ऐसा व्यक्ति होता है जिसका आर्थिक अथवा सामाजिक-स्तर बहुत नीचा होता है ।

यदि हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा– दोनों ही समानान्तर चलती हुई हथेली को पार कर जायें तो जातक स्वकेन्द्रित होता है । ऐसे लोग अपने ध्येय को प्राप्त करने के हेतु किसी भी संकट, विरोध अथवा प्राणों की परवाह भी नहीं करते ।

हृदय-रेखा टूटी हो तो जातक अपने प्रेमपात्र को खो बैठता है । यदि हथेली में 'दो हृदय-रेखाऐं' हों तथा अन्य लक्षण भी शुभ हों तो जातक पवित्र-मन का तथा ईश्वर-भक्त होता है ।

वैसे हृदय-रेखा पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक देखने को मिलती हैं तथा स्त्रियों के हाथ में यह रेखा अधिक स्पष्ट भी होती है ।

हृदय-रेखा का सूक्ष्म परीक्षण करके जातक की मनोवृत्ति एवं संवेदनशीलता का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

सूर्य-रेखा

अच्छी सूर्य-रेखा भाग्य-रेखा की सफलता में वृद्धि करती है तथा जातक को प्रसिद्धि एवं विशिष्टता प्रदान करती है । यह जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, चन्द्र-क्षेत्र, मंगल का मैदान, मस्तक-रेखा अथवा भाग्य-रेखा– इनमें से किसी भी स्थान से आरम्भ होकर अनामिका अँगुली के मूल भाग में सूर्य-क्षेत्र पर जाती है । दार्शनिक, कलात्मक अथवा आध्यात्मिक वर्ग के हाथों में यह रेखा विशिष्ट स्थिति में रहते हुए भी उतनी प्रभावशाली नहीं होती, जितनी कि वर्गाकार एवं चमसाकार हाथों में होती है । इस रेखा द्वारा जातक की कलात्मक-प्रवृत्ति, यश एवं सम्मान का भी विचार किया जाता है ।

यह रेखा यदि जीवन-रेखा से आरम्भ हुई हो तो जातक पूर्णरूपेण सौन्दर्योपासक होता है । यदि अन्य रेखाऐं भी शुभ हों तो उसे कलाक्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है ।

यदि यह भाग्य-रेखा से आरम्भ हुई हो तो राजयोग के समान प्रभावशालिनी होती है । ऐसी रेखा वाला जातक अपने व्यवसाय में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा धन-लाभ में वृद्धि होती है ।
(देखें चित्र नं० 39)

यदि यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ हुई हो तो जातक की सफलता दूसरों की सहायता पर निर्भर करती है तथा सदैव सुनिश्चित भी नहीं रहती। यदि इसके साथ ही मस्तक-रेखा चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हो तो जातक को काव्य-उपन्यास आदि साहित्य-लेखन के क्षेत्र में सफलता मिलती है। (देखें चित्र नं० 40)

यदि सूर्य-रेखा हथेली के मध्य से आरम्भ हुई हो तो संघर्षों एवं कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है । यदि मस्तक-रेखा से आरम्भ हुई हो तो जातक अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अपनी (35 वर्ष की आयु के बाद) बौद्धिक-योग्यता के आधार पर सफलता प्राप्त करता है ।

यदि यह रेखा हृदय-रेखा से आरम्भ हुई हो तो जातक को अपने जीवन के अन्तिम भाग में (50 वर्ष की आयु के बाद) विशिष्टता एवं सफलता प्राप्त होती है ।
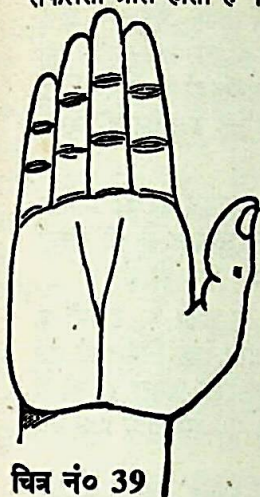
चित्र नं० 39
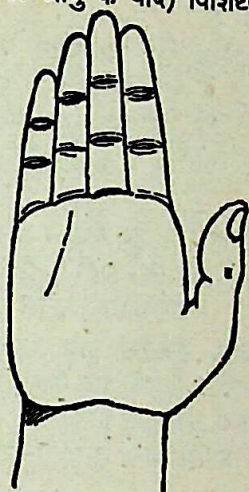
चित्र नं० 40

यदि अनामिका अँगुली मध्यमा के बराबर लम्बी हो तथा सूर्य-रेखा भी लम्बी हो तो जातक अपनी प्रतिष्ठा, धन तथा योग्यता-सम्वर्द्धन हेतु प्राप्त अवसरों के साथ जुआ खेलेगा तथा प्रत्येक कार्य में रिस्क लेने को तैयार रहेगा ।

यह रेखा स्पष्ट रूप में हो तो जातक बहुत सम्वेदनशील होता है । एकदम सीधी हो तो धन-मान तथा सामाजिक-क्षेत्र में प्रतिष्ठा पाने के लिए सदैव प्रस्तुत रहता है ।

यदि सूर्य-क्षेत्र पर अनेक रेखाऐं हों तो जातक अत्यन्त कलाप्रिय होता है तथा अनेक योजनायें बनाते रहने के कारण किसी को भी कार्यान्वित नहीं कर पाता ।
(देखें चित्र नं० 41)
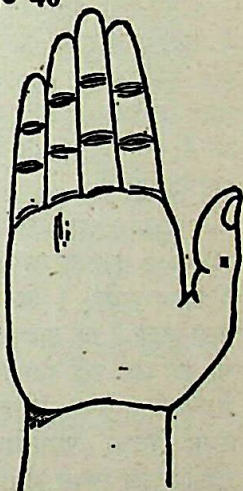
चित्र नं० 41

सूर्य-रेखा पर 'नक्षत्र-चिह्न' का होना अत्यन्त शुभ माना गया है । इससे जातक को स्थायी प्रतिभा, सुख, सौभाग्य, सम्मान एवं सफलता का लाभ होता है ।

सूर्य-रेखा पर 'वर्ग-चिह्न' मान-प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाने वाले प्रतिपक्षियों से रक्षा दिलाता है । यदि द्वीप-चिह्न हो तो मान-मर्यादा को हानि पहुँचती है । द्वीप के अदृश्य हो जाने पर रेखा सबल हो तो मान-प्रतिष्ठा पुनः मिल जाती है । सूर्य-रेखा पर गड्ढा हो तो वह बलहीन हो जाती है।

यदि हाथ में सूर्य-रेखा न हो तो परिश्रम करते रहने पर भी जातक को मान्यता प्राप्त नहीं होती । ऐसे व्यक्ति अपेक्षित सम्मान से भी वंचित रह जाते हैं । मरणोपरान्त उनके गुणों का मूल्यांकन भले ही हो ।

विशेष– सूर्य-रेखा प्रायः भाग्यवानों के हाथ में होती है, ग़रीबों के हाथ में नहीं । जिनके हाथ में मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा निर्बल हों एवं अँगूठा तथा अँगुलियाँ निर्बल हों, उसकी यदि सूर्य-रेखा सबल हो तो वे अपने से अधिक योग्य लोगों से भी अधिक प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त कर लेते हैं ।

सूर्य-रेखा वाले व्यक्ति प्रसन्नचित्त एवं उत्साही होते हैं, उनके व्यक्तित्व में आकर्षण होता है, अतः वे दूसरों के मन को जीत लेते हैं । ऐसे व्यक्ति प्रायः संवेदनशील, उदार-हृदय एवं सौहार्दपूर्ण होते हैं । वह मर्यादा का ध्यान रखते हैं एवं अपने रहन-सहन से एक सभ्य नागरिक होने का परिचय देते हैं । ऐसे लोग यदि कलाकार न हों तो कला-प्रिय एवं सौन्दर्योपासक अवश्य होते हैं ।

सूर्य-रेखा धन की अपेक्षा यश-मान ही अधिक देती है, अतः इसके सम्बन्ध में फलादेश करते समय जातक के सामाजिक-स्तर को भी ध्यान में रखना चाहिए । यह रेखा सफलता एवं समृद्धि भी देती है । यह भी माना जाता है कि हाथ में सूर्य-रेखा न होने पर जातक के योग्य होने पर भी यश प्राप्त नहीं होता । यदि बुध तथा वृहस्पति के क्षेत्र समुचित रूप से विकसित तथा शुभ हों एवं अँगुलियाँ भी ठीक हों तो पूर्ण सूर्य-रेखा वाला जातक असाधारण योग्यता, सद्गुण, निपुणता,बुद्धिमत्ता एवं उच्चाभिलाषा सम्पन्न होता है । यदि शुक्र तथा चन्द्र-क्षेत्र शुभ हों एवं

सूर्य-रेखा बलवान हो तो साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले जातक को विशेष सफलता एवं ख्याति उपलब्ध होती है ।

सूर्य-रेखा का भाग्य-रेखा से निकलना बहुत शुभ होता है । यह रेखा जीवन-रेखा से निकली हो तो भी जातक को असाधारण सफलता मिलती है । मंगल-क्षेत्र से निकलने पर जातक सेना में उच्च पदस्थ होकर मान-प्रतिष्ठा पाता है । स्वास्थ्य-रेखा से निकली हो तो व्यावसायिक-सफलता मिलती है । चन्द्र-क्षेत्र से निकली हो तो प्रायः किसी स्त्री की सहायता से लोकप्रियता एवं उन्नति मिलती है । यदि सूर्य-रेखा त्रिशूल के रूप में सूर्य-क्षेत्र पर ही समाप्त हो तो धन-मान, प्रसिद्धि आदि सबका लाभ होता है । सूर्य-रेखा के समानान्तर दोनों ओर गहरी रेखाएँ चलती हों तो असीमित सफलता प्राप्त होती है ।

यदि अनामिका अगुँली तर्जनी से अधिक लम्बी हो तथा सूर्य-रेखा भी बहुत अच्छी हो तो जातक सफल जुआरी होता है । अँगूठे की ओर शुक्र अथवा प्रथम मंगल-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-रेखा में मिलने वाली सभी रेखाएँ अशुभ फल देती हैं ।

लहरदार एवं द्वीपयुक्त सूर्य-रेखा दुर्भाग्य-सूचक होती है । यदि सूर्य-रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों में सूर्य-क्षेत्र पर समाप्त होती हो तो असफलता मिलती है । रेखा का अन्त लहरदार शाखाओं के रूप में हो तो महत्वाकांक्षायें धूलि में मिल जाती हैं । सूर्य-रेखा पर गड्ढा हो तो वह दुर्बल हो जाती है । सूर्य-रेखा शनि-क्षेत्र पर समाप्त होती हो तो बहुत कम सफलता मिलती है । यदि बुध-क्षेत्र पर समाप्त हो तो प्रत्येक कार्य धनोपार्जन की दृष्टि से करता है । यदि सूर्य-रेखा से ऊपर उठती हुई सूक्ष्म-शाखाएँ एक वृक्ष का रूप धारण किए हों तो असाधारण सफलता मिलती है । यदि ऐसी शाखाएँ नीचे की ओर जा रही हों तो असफलता, निराशा एवं अवनति प्राप्त होती है ।

सूर्य-रेखा जिस स्थान पर हृदय-रेखा को काटती हो, वहाँ यदि काला बिन्दु हो तो जातक उस आयु में दृष्टिहीन हो सकता है ।

यदि शुक्र-क्षेत्र से आई हुई कोई रेखा सूर्य-रेखा के समानान्तर चले तो जातक को विरासत में धन-सम्पत्ति का लाभ होता है ।

भाग्य-रेखा

भाग्य-रेखा का उदय मुख्यतः जीवनरेखा, मणिबन्ध, चन्द्रक्षेत्र, मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा से होता है । इसकी समाप्ति शनि-क्षेत्र पर मानी गई है । दार्शनिक, कलात्मक अथवा आदर्श हाथ में यह रेखा प्रायः लम्बी तथा स्पष्ट रूप में मिलती है और ये लोग भाग्यवादी होते हैं । जबकि इन रेखा-युक्त वर्गाकार अथवा चमसाकार हाथ वाले कर्म-फल में आस्था रखने वाले होते हैं ।

यदि भाग्य-रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर शनि-क्षेत्र तक गई हो तो जातक अत्यन्त सौभाग्यशाली तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु उसकी प्रारम्भिक सफलता परिवार से सम्बन्धित होती है । यह रेखा जीवन-रेखा से निकली हो तो जातक अपनी निजी योग्यता से धन एवं सफलता प्राप्त करता है । (देखें चित्र नं० 42)

यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र से निकली हो तो जातक दूसरों की सहायता
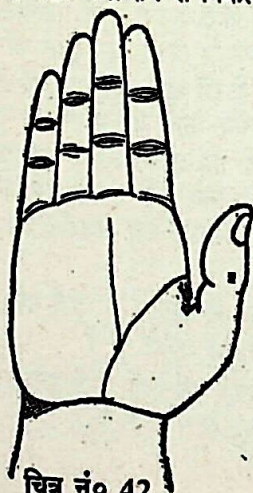
चित्र नं० 42
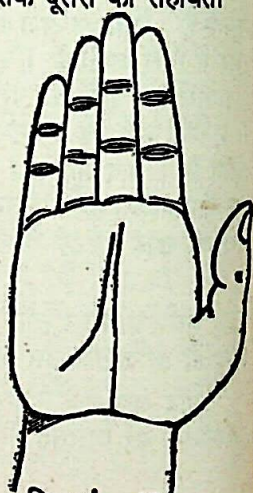
चित्र नं० 43

अथवा प्रोत्साहन से सफलता प्राप्त करता है । यदि भाग्य-रेखा सीधी जा रही हो तथा चन्द्र-क्षेत्र से उठकर कोई रेखा मिल जाये तो कोई अन्य स्त्री अथवा पुरुष जातक की सफलता में सहायक बनता है । चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई रेखा यदि भाग्य-रेखा के साथ-साथ ऊपर की ओर चले तो जातक का किसी धनी-परिवार में विवाह होता है, जिसके फलस्वरूप उन्नति होती है । (देखें चित्र नं० 43)

यदि भाग्य-रेखा में से कोई शाखा रेखा निकलकर शनि के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह पर चली जाये तो जातक के जीवन पर उस क्षेत्र के गुणों का प्रभाव पड़ता है । (देखें चित्र नं० 44)

यदि भाग्य-रेखा वृहस्पति के क्षेत्र पर जा पहुँचे तो जातक को विशिष्टता एवं अधिकार की उपलब्धि होती है । यदि शनि-क्षेत्र पर मुड़कर वृहस्पति-क्षेत्र पर पहुँचे तो इसे जातक की महत्वाकांक्षायें पूर्ण करने वाला उत्तम योग समझना चाहिए ।

यदि भाग्य-रेखा हथेली को पार करती हुई मध्यमा अँगुली तक जा पहुँचे तो इसे अशुभयोग समझना चाहिए । ऐसी रेखा वाला जातक प्रत्येक क्षेत्र में सीमोल्लघंन करता है, जिसके फलस्वरूप उसे स्वयं ही हानि उठानी पड़ती है । (देखें चित्र नं० 45)
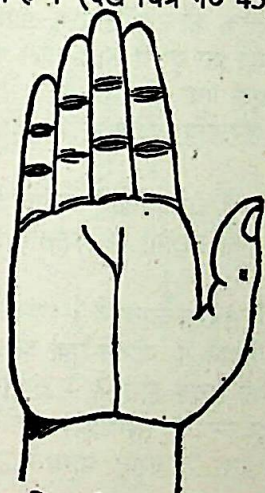
चित्र नं० 44
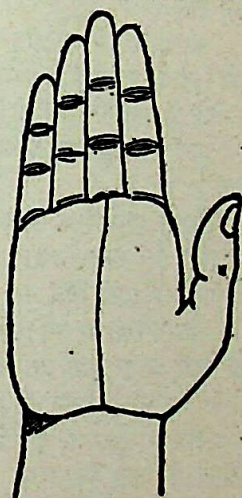
चित्र नं० 45

यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा पर ही रुक जाये तो किसी प्रेम-सम्बन्ध के कारण जातक की सफलता में विघ्न पड़ता है । परन्तु ऐसी रेखा हृदय-रेखा से जुड़कर गुरु-क्षेत्र पर जा पहुँचे तो प्रेम-सम्बन्ध की सहायता से जातक की आकांक्षा पूर्ण होती है ।

यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा पर ही रुक जाये तो जातक की मूर्खता अथवा गलती से ही सफलता में बाधा पड़ती है ।

यदि भाग्य-रेखा का प्रारम्भ मंगल के मैदान से हुआ हो और वह शनि-क्षेत्र पर चली गई हो तो जातक बाधाओं पर विजय पाता हुआ कठिन परिश्रम से सफल होता है । भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा से आरम्भ हो तो जातक 35 वर्ष की आयु के बाद ही अपनी लगन, धैर्य तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है । यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा से आरम्भ हुई हो तो दीर्घकालीन संघर्ष के बाद लगभग 50 वर्ष की आयु में जातक को सफलता मिलती है ।

यदि भाग्य-रेखा के प्रारम्भ में उसकी एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र में तथा दूसरी शुक्र-क्षेत्र में हो तो जातक कल्पनाशीलता एवं प्रेम-भावना– दोनों पर आश्रित रहता है । भाग्य-रेखा छिन्न-छिन्न हो तो जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं ।

भाग्य-रेखा जिस आयु में टूटी हो, जातक को उस आयु में आर्थिक हानि उठानी पड़ती है । परन्तु टूटी हुई रेखा का दूसरा भाग पहले भाग के पीछे से आरम्भ हुआ हो तो जीवन में एक नया परिवर्तन आता है । यदि दूसरा भाग पुष्ट हो तो जातक को वह परिवर्तन विशेष सफलतादायक होता है ।

दुहरी भाग्य-रेखा अत्यन्त शुभ होती है । ऐसी रेखाऐं विभिन्न क्षेत्रों में जाती हैं, फलतः जातक विभिन्न प्रकार के उद्योगों से सफलता प्राप्त करता है । (देखें चित्र नं० 46)

भाग्य-रेखा पर वर्ग-चिह्न आर्थिक-हानि से रक्षा करता है । भाग्य-रेखा को स्पर्श करता हुआ वर्ग-चिह्न मंगल के मैदान में, जीवन-रेखा की ओर हो तो वह घरेलू-जीवन की किसी दुर्घटना का सूचक होता है । वर्ग-चिह्न चन्द्र-क्षेत्र की ओर हो तो किसी यात्रा में दुर्घटना की सम्भावना रहती है। स्थानों पर क्रास-चिह्न भी ऐसा ही फल देता है, परन्तु भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न अशुभ-फलदायक होता है ।

भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न दुर्भाग्य-सूचक होता है। ऐसा चिह्न यदि चन्द्र-क्षेत्र से आने वाली किसी प्रभावरेखा से जुड़ा हो तो विवाह अथवा प्रेम-सम्बन्ध के कारण जातक के जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कलंक भी लगता है ।

हथेली में भाग्य-रेखा के न होने पर भी अन्य लक्षणों के आधार पर जातक काफी सफल अथवा धनी हो सकता है, परन्तु उसके जीवन में कोई चमक अथवा सरसता नहीं होती । ऐसे लोगों को यथार्थ में सुखी नहीं कहा जा सकता ।

भाग्य-रेखा के साथ सूर्य-रेखा भी अच्छी स्थिति में हो तो जातक को विशेष सफलता मिलती है । बिना किसी शाखा वाली भाग्य-रेखा यदि शनि-क्षेत्र पर सीधी गई हो तो वह जातक को भाग्यवादी एवं अकर्मण्य बना देती है । ऐसी रेखा यदि शनि-क्षेत्र को पारकर मध्यमा अँगुली के मूल तक जा पहुँची हो तो उसे अत्यन्त दुर्भाग्य का चिह्न समझना चाहिए। ऐसी रेखा वाला जातक ऐसे गलत काम कर बैठता है, जिनका सुधार होना सम्भव नहीं होता । (देखें चित्र नं० 47)

यदि भाग्य-रेखा, हृदय-रेखा के ऊपर ठहरी हो तो अनुचित प्रेम-सम्बन्ध के कारण जातक का भाग्य चौपट हो जाता है । परन्तु यदि भाग्य-रेखा
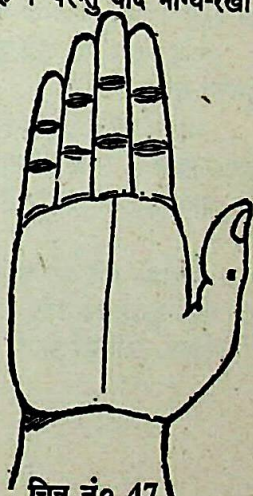
चित्र नं० 46 चित्र नं० 47

हृदय-रेखा से मिल गई हो तो मैत्री अथवा प्रेम-सम्बन्ध के कारण महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होती है ।

चित्र नं० 48

यदि किसी स्थान पर भाग्य-रेखा, जीवन-रेखा को काटे तो आयु के उस भाग में जातक की मृतक के समान स्थिति हो जायेगी। जातक के साथ उस आयु में दुर्घटना घट सकती है या उसका भयंकर अपमान भी हो सकता है।

भाग्य-रेखा मंगल के मैदान से निकली हो तो जातक का प्रारम्भिक जीवन कठिनाइयों से पूर्ण होता है। ऐसी भाग्य-रेखा की एक शाखा सूर्य-क्षेत्र की ओर चली गई हो तो जातक अपने पुरुषार्थ से भाग्य का निर्माण कर, सफलताऐं प्राप्त करता है । (देखें चित्र नं० 48)

यदि भाग्य-रेखा का प्रारम्भ मस्तिष्क-रेखा से हुआ हो तो भाग्योदय 35 वर्ष के बाद होता है । यदि हृदय-रेखा से हुआ हो तो 50 वर्ष की आयु के बाद सफलता है ।

यदि भाग्य-रेखा टूटी-फूटी अथवा टुकड़ों से बनी हो तो परेशानी एवं दुर्भाग्य-सूचक होती है ।

भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न पद की हानि अथवा सौभाग्य-हानि का सूचक होता है । यदि भाग्य-रेखा के आरम्भ में द्वीप-चिह्न हो तो जातक का जन्म रहस्यमय होता है अथवा जातक अवैध-सन्तान भी हो सकता है।

विशेष– यदि भाग्य-रेखा टूटकर आगे बढ़े तो विपत्ति आती है । इसे कोई अवरोधक रेखा काट दे या यह रेखा लहरदार हो अथवा इस पर दीप-चिह्न उपस्थित हों तो ऐसा जातक भाग्यहीन होता है ।
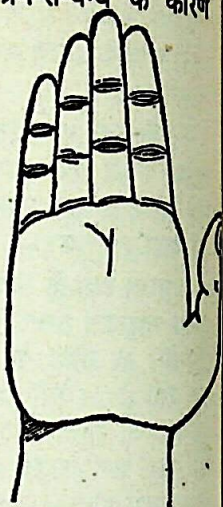
स्वास्थ्य-रेखा

इस रेखा का उद्गम बुध-क्षेत्र है । यह रेखा बुध-क्षेत्र से निकलकर मणिबंध की ओर बढ़ती हुई प्रायः जीवन-रेखा तक जाती है । वह स्वास्थ्य-रेखा शुभ मानी जाती है जो एक सीधी रेखा के रूप में आ जाती हो ।

हाथ में स्वास्थ्य-रेखा का न होना बहुत शुभ माना गया है । इस रेखा के न होने पर जातक का स्वास्थ्य उत्तम तथा शरीर पुष्ट बना रहता है । सामान्यतः इस रेखा द्वारा जातक के स्वास्थ्य एवं रोग के सम्बन्ध में विचार किया जाता है ।

यदि स्वास्थ्य-रेखा भी जीवन-रेखा के समान पुष्ट हो तो जिस स्थान पर इन दोनों रेखाओं का मिलन हो, वह जातक के जीवन का अन्तिम समय होता है । (देखें चित्र नं० 49)

जीवन-रेखा भले ही लम्बी हो, परन्तु स्वास्थ्य-रेखा पर असाधारण लक्षण हों तो वे जातक की मृत्यु का कारण बन जाते हैं ।

यदि स्वास्थ्य-रेखा हथेली को पारकर, किसी स्थान पर जीवन-रेखा का स्पर्श करती हो तो उसे गहरी बीमारी का सूचक समझना चाहिए ।
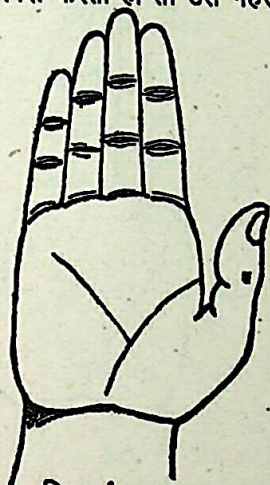
चित्र नं० 49
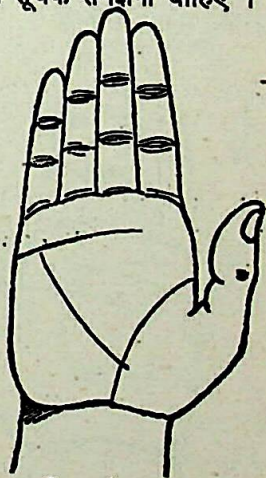
चित्र नं० 50

यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा से आरम्भ हुई हो और जीवन-रेखा को काट दे तो जातक को हृदय सम्बन्धी बीमारी होती है । (चित्र 50)

यदि स्वास्थ्य-रेखा लाल रंग की हो तथा नाखून छोटे और चपटे हों तो जातक को हृदय-रोगी समझना चाहिए । यदि रेखा जगह-जगह लाल रंग की हो तो वह जिगर की खराबी की द्योतक होती है । स्वास्थ्य-रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों तथा नाखून बादाम की तरह उठे हों तो छाती एवं फेफड़ों की कमजोरी समझनी चाहिए ।

यदि स्पष्ट स्वास्थ्य-रेखा मस्तक एवं हृदय-रेखाओं से मिलती हो, अन्य किसी स्थान पर न हो तो मस्तिष्क-ज्वर होने की सम्भावना रहती है । (देखें चित्र नं० 51)

छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी अथवा जंजीरनुमा गहरी स्वास्थ्य-रेखा जातक को आजीवन रोग-ग्रस्त बनाये रखती है । (देखें चित्र नं० 52)

यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के समीप, परन्तु उसके ऊपर कोई द्वीप-चिह्न हो तो नाक एवं गले की बीमारी होती है । यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा के ऊपर तथा नीचे एक द्वीप-चिह्न बनाती हो तो जातक मानसिक रोग का शिकार होता है ।

यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से दूसरी ओर को मुड़ रही हो तो जातक को सम्भावित-रोग से छुटकारा मिल जाता है । ऐसी रेखा दीर्घायु-सूचक होती है ।
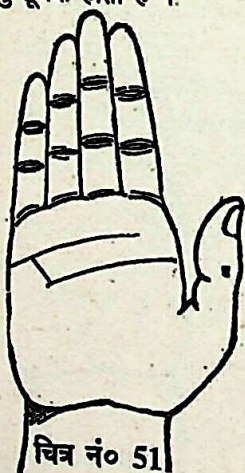
चित्र नं० 51
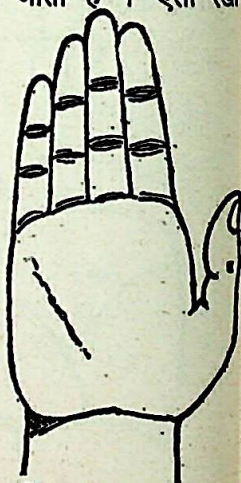
चित्र नं० 52

विवाह एवं सन्तान-रेखाऐं

विवाह-रेखा

बुध-क्षेत्र पर अंकित रेखाओं को विवाह-रेखा कहा जाता है । ये रेखाऐं हथेली के किनारे की ओर से निकलकर आती हैं तथा बुध-क्षेत्र पर ही स्थित रहती हैं । ये रेखाऐं संख्या में अनेक भी हो सकती हैं । उनमें केवल लम्बी रेखाऐं ही विवाह की सूचक होती हैं । छोटी रेखाऐं प्रेमाकर्षण अथवा विवाह की इच्छा मात्र को ही प्रकट करती हैं । इन रेखाओं द्वारा विवाह की संभावित आयु का भी निश्चय किया जा सकता है । (देखें चित्र नं० 53)
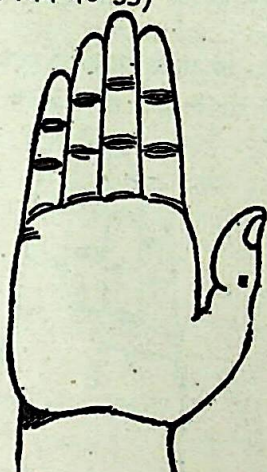
चित्र नं० 53
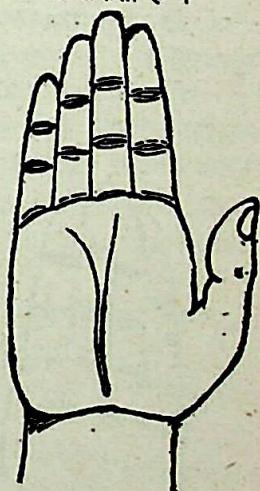
चित्र नं० 54

यदि विवाह-रेखा हृदय-रेखा के बिल्कुल समीप हो तो विवाह 14 से 18 वर्ष की आयु के बीच होता है । यदि विवाह-रेखा बुध-क्षेत्र के मध्य में हो तो 21 से 28 वर्ष के बीच तथा बुध-क्षेत्र से तीन चौथाई ऊँची हो

तो विवाह 28 से 35 वर्ष की आयु में होता है ।

यदि बुध-क्षेत्र पर विवाह-रेखा पुष्ट-स्थिति में हो तथा कोई प्रभाव-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आकर भाग्य-रेखा में मिल जाये तो जातक विवाह के बाद धनवान होता है ।

यदि बुध-क्षेत्र से निकली कोई प्रभावरेखा चन्द्र-क्षेत्र पर सीधी चढ़कर फिर मुड़कर भाग्य-रेखा से जा मिले तो विवाह-सम्बन्ध में सच्चे-प्रेम की भावना नहीं होती, दिखावामात्र रहता है ।

सर्वाधिक वैवाहिक-सुख देने वाली वह प्रभाव-रेखा होती है– जो भाग्य-रेखा के एकदम समीप हो तथा उसके साथ-साथ चलती हो ।

(देखें चित्र नं० 54)

यदि विवाह-रेखा नीचे मुड़कर हृदय-रेखा की ओर चली गई हो तो जातक के जीवन-साथी की मृत्यु पहले होती है । स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा 'वैधव्य' तथा पुरुष के हाथ में 'विधुरत्व' की सूचक होती है ।

(देखें चित्र नं० 55)

यदि विवाह-रेखा ऊपर की ओर मुड़ गई हो तो जातक अविवाहित रह जाता है ।

यदि स्पष्ट विवाह-रेखा से बाल जैसी सूक्ष्म रेखाऐं निकलकर हृदय-रेखा पर गिरती दिखाई दें तो उन्हें जातक के जीवन-साथी की अस्वस्थता का सूचक समझना चाहिए ।
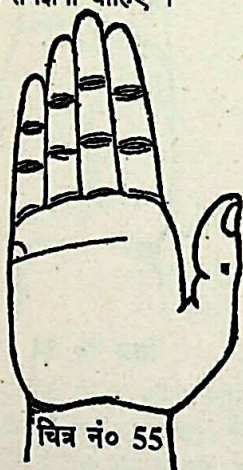
चित्र नं० 55
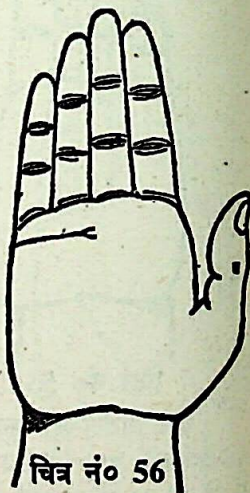
चित्र नं० 56

यदि विवाह-रेखा एकदम नीचे की ओर झुक जाये तथा उसके मोड़ पर क्रास-चिह्न भी हो तो जातक के जीवन-साथी की किसी दुर्घटना के कारण अथवा आकस्मिक-मृत्यु होती है । यह रेखा यदि धीरे-धीरे नीचे मुड़ी हो तो जीवन-साथी की बीमार रहने के बाद मृत्यु होती है ।

यदि विवाह-रेखा के मध्य कहीं द्वीप-चिह्न हो तो वैवाहिक-जीवन में विषम-परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ।

यदि विवाह-रेखा हथेली के मध्य तक पहुँचकर दो शाखाओं में विभक्त हो जाय तो जीवन-साथी से सम्बन्ध-विच्छेद (तलाक) हो जाता है ।

(देखें चित्र नं० 56)

यदि विवाह-रेखा द्वीप-चिह्नों से भरी हो तथा उसमें सूक्ष्म रेखाऐं निकलकर नीचे की ओर गिर रही हों तो वैवाहिक-जीवन दुःखदायी सिद्ध होता है । ऐसी रेखा यदि अन्त में द्विमुखी हो तो कष्ट और भी बढ़ जाता है ।

यदि विवाह-रेखा दो टुकड़ों में बँटी हो तो भी तलाक हो जाता है ।

यदि विवाह-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर गई हो तो जातक का विवाह किसी विशिष्ट व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) से होता है । यदि ऐसी रेखा सूर्य-रेखा को काट दे तो विवाहोपरान्त उच्चपद की हानि होती है ।

यदि बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग से उतरी कोई गहरी रेखा विवाह-रेखा को काट दे तो विवाह होने में बहुत बाधाऐं आती हैं ।

यदि कोई अत्यन्त पतली रेखा विवाह-रेखा के लगभग समानान्तर चलती हो तो जातक विवाहोपरान्त अपने जीवन-साथी को अत्याधिक प्रेम करता है ।

यदि किसी स्त्री के हाथ में विवाह-रेखा के आरम्भ में द्वीप-चिह्न हो तो यह समझना चाहिए कि उसका विवाह धोखा देकर होगा ।

यदि टूटी हुई विवाह-रेखा के दोनों टुकड़े एक-दूसरे के ऊपर हों तो टूटा हुआ विवाह-सम्बन्ध पुनः जुड़ जाता है ।

यदि शुक्र-क्षेत्र से निकली कोई रेखा जीवन-रेखा से उठी एक शाखा को काटती हुई विवाह-रेखा में जा मिले तो वैवाहिक-सम्बन्ध टूट जाता है ।

यदि विवाह-रेखा के आरम्भ में दो शाखाऐं हों तो जातक से दोष होने के कारण ही विवाह-सम्बन्ध टूट जाता है ।

सन्तान-रेखाएँ

चित्र नं० 57

विवाह-रेखा के अन्तिम भाग में स्थित जो सूक्ष्म-रेखाऐं सीधी ऊपर को जाती हैं, उन्हें सन्तान-रेखा कहा जाता है। ये रेखाऐं बहुत हल्की होती हैं, अतः इन्हें मैगनीफाइग ग्लास (आतशी-शीशा) की मदद से देखा जाता है। (देखें चित्र नं० 57)

पुरुष के अपेक्षा स्त्री के हाथों में सन्तान-रेखाऐं अधिक स्पष्ट होती हैं।

उक्त रेखाओं में जो चौड़ी हों वे पुत्र-सूचक तथा जो संकीर्ण एवं पतली हों वे पुत्रियों की सूचक होती हैं।

उक्त रेखाऐं स्पष्ट हों तो बच्चे स्वस्थ होते हैं। यदि वे फीकी तथा लहरदार हों तो इसके विपरीत प्रभाव होता है।

यदि रेखा के प्रथम भाग में द्वीप-चिह्न हो तो बच्चे प्रारम्भ में बहुत दुर्बल होते हैं। यदि अन्त में द्वीप-चिह्न हो तो बच्चा जीवित नहीं रहता। यदि अन्य रेखाओं की अपेक्षा एक रेखा बड़ी हो तो वह बच्चा सभी सन्तानों में अधिक महत्वपूर्ण होता है।

स्त्री के हाथ में सन्तान-रेखा जितनी स्पष्ट हों, उतनी ही स्पष्ट पुरुष के हाथ में हों तो वह अपनी सन्तानों को अधिक प्यार करता है।

यदि किसी व्यक्ति की हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुँचकर दो-तीन शाखाओं में विभाजित हो जाये तो वह निःसन्तान नहीं होता। इसी प्रकार जिस स्त्री के हाथ में मछली का चिह्न स्पष्ट हो वह भी सन्तान-हीन नहीं होती। जिन स्त्री-पुरुषों की हथेली चौड़ी होती है तथा सभी मुख्य रेखाऐं स्पष्ट रूप में अंकित होती हैं, वे भी सन्तान-हीन नहीं होते।

यदि किसी स्त्री के हाथ में मत्स्य-चिह्न न हो, शुक्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो, हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र से आरम्भ हुई हो और नीचे की ओर ढलान लेती हो, शुक्र-मेखला भी हो, अँगुलियाँ नुकीली हों तथा अँगूठा दुर्बल इच्छा-शक्ति का सूचक हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी एवं सन्तान-हीन होती है।
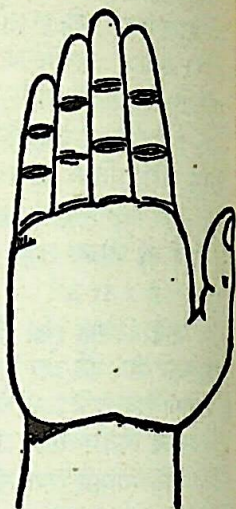
अन्य-रेखायें

मंगल-रेखा

इसे जीवन-रेखा की सहायक रेखा माना जाता है । यह मंगल के प्रथम क्षेत्र से निकलकर नीचे उतरती तथा शुक्र-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के भीतर रहती हुई, उनके साथ-साथ चलती है । (देखें चित्र नं० 58)

यह रेखा वर्गाकार तथा चौड़े हाथों में उत्तम स्वास्थ्य की सूचक होती है तथा ऐसी रेखा वाले लोग बुद्धिजीवी भी हो सकते हैं । पुलिस तथा सेना के कामों में उन्हें रुचि होती है ।

लम्बे संकीर्ण हाथों में पाई जाने वाली मंगल-रेखा प्रायः निर्बल तथा फीकी जीवन-रेखा के साथ पाई जाती है और वह जीवन-रेखा की कमियों की पूर्ति करती है ।

जीवन-रेखा कहीं छिन्न-छिन्न हो तथा मंगल-रेखा उस जगह स्पष्टरूप में उपस्थित हो तो वह जातक को मृत्यु से बचा लेती है ।

यदि मंगल-रेखा से निकली कोई शाखा चन्द्र-क्षेत्र की ओर गई हो तो जातक नशेबाज बन जाता है ।

वासना-रेखा

यह एक छोटी-सी रेखा होती है, जो बहुत कम हाथों में पाई जाती है । यह हथेली के निम्न भाग से निकलकर मणिबंध की ओर जाती है तथा इसे स्वास्थ्य-रेखा की सहायक-रेखा माना जाता है ।
(देखें चित्र नं० 59)

इस रेखा को अच्छा नहीं माना जाता । यह काम-वासना तथा मद्य-पान आदि की प्रवृत्तियों को बढ़ाती है ।

यदि यह जीवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर चली जाये तो जातक अधिक मद्यपान अथवा कामुकता आदि के कारण अपनी आयु को कम कर लेता है । अन्य स्थितियों में यह रेखा कामुकता की वृद्धि किए रखती है ।
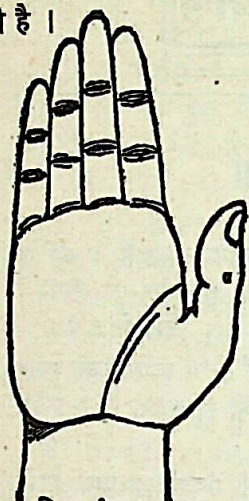
चित्र नं० 58
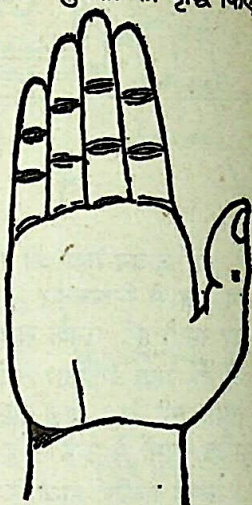
चित्र नं० 59

अतीन्द्रिय-ज्ञान की रेखा

यह रेखा प्रायः दार्शनिक, कलात्मक एवं आदर्श श्रेणी के हाथों में पाई जाती है, अन्य हाथों में कम देखने को मिलती है । यह अर्द्धवृत्त के आकार की होती है तथा बुध-क्षेत्र से निकलकर चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती है । कभी-कभी यह स्वास्थ्य-रेखा के साथ-साथ चलती है और कभी उसे काट भी देती है । यह रेखा यदि हाथ में हो तो स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । (देखें चित्र नं० 60)

यह रेखा अत्यन्त सम्वेदनशील तथा प्रभावकारी स्वभाव की सूचक होती है । इस रेखा वाला जातक अपने चारों ओर के वातावरण को शीघ्रता से अनुभव कर लेता है । किसी अज्ञात-शक्ति अथवा अन्तर्ज्ञान के माध्यम से उसे अन्यों के साथ घटित होने वाली घटनाओं का भी

पूर्वाभास हो जाता है । ध्यानमग्नता अथवा स्वप्न की स्थिति में उसे भविष्य की बातें ज्ञात होती हैं ।

यह रेखा यदि स्पष्ट तथा चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग में अधिक हो तो जातक प्रबल सम्मोहन-शक्ति सम्पन्न होता है ।

यदि रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे समाप्त हो तो उक्त फल अधिक परिमाण में होता है । यदि लहरदार अथवा शाखायुक्त हो तो जातक सदैव अस्थिर एवं अशान्त रहता है । यदि कई स्थानों पर खण्डित हो तो अतीन्द्रिय-ज्ञान अत्यधिक होता है और कभी बिल्कुल नहीं होता ।
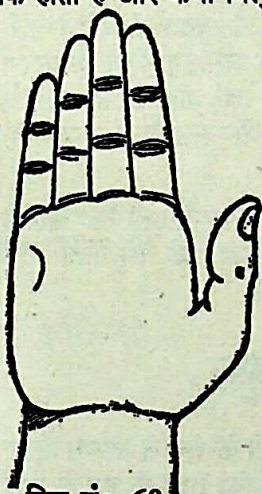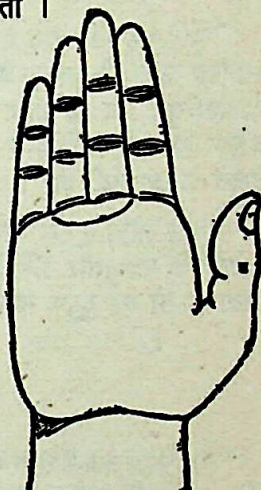
चित्र नं० 60 चित्र नं० 61

यदि भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा एवं इस रेखा द्वारा त्रिकोण बनता हो तो जातक गुप्त-विद्याओं में प्रवीण होता है ।

'कीरो' के हाथ में इस प्रकार की रेखा होने के साथ-साथ दो मस्तक-रेखाऐं भी थीं, इसी कारण उनका 'अतीन्द्रिय-ज्ञान' अत्यन्त तीव्र था और वे विश्व-प्रसिद्ध भविष्यवक्ता बन सके ।

शुक्र-मुद्रिका

यह एक अर्द्धवृत्ताकार रेखा होती है जो तर्जनी एवं मध्यमा के मध्य से आरम्भ होकर अनामिका तथा कनिष्ठिका के मध्य में जाकर समाप्त होती

है । यह रेखा टूटी हुई अथवा सम्पूर्ण– दोनों रूपों में पाई जाती है । इसे 'शुक्र-मेखला' भी कहते हैं । (देखें चित्र नं० 61)

यह रेखा प्रायः कलात्मक तथा दार्शनिक हाथों में दिखाई देती है । यह रेखा जातक की संवेदनशीलता को अत्यधिक बढ़ा देती है । ऐसी रेखा वाला व्यक्ति प्रायः तुनक-मिजाज होता है तथा सामान्य-सी बात का ही बुरा मान जाता है । उसकी मनोदशा (मूड) परिवर्तनशील बनी रहती है।

यह रेखा कभी जोश दिलाती है तो कभी निराश कर देती है । यदि रेखा स्पष्ट रूप में हो तो जातक को उदासीनता हर समय रहती है ।

यदि यह रेखा हाथ के किनारे की ओर बढ़कर विवाह-रेखा से सम्पर्क स्थापित करले तो जातक के स्वभाव की परिवर्तनशीलता के कारण उसका दाम्पत्य-सुख नष्ट हो जाता है । ऐसी रेखा वाले के साथ निर्वाह करना कठिन होता है, क्योंकि ये लोग अपने जीवन-साथी में अपरिमित सद्गुण देखने के आकांक्षी होते हैं ।

कुछ लोगों ने इसे कामुकता में वृद्धि करने वाली रेखा कहा है, परन्तु 'कीरो' के मतानुसार उन्हें ऐसा अवगुण देखने को नहीं मिला । यदि हाथ मोटा हो तो यह दुर्गुण दिखाई देता है ।

शनि-मुद्रिका

यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा अँगुली के बीच से आरम्भ होकर गोलाई लिए हुए, शनि-क्षेत्र को घेरती हुई अनामिका तथा मध्यमा के बीच समाप्त होती है । यह बहुत कम हाथों में पाई जाती है । इसे शुभ नहीं माना जाता । (देखें चित्र नं० 62)

इस रेखा के कारण परिश्रम व्यर्थ होने से आकांक्षायें अतृप्त रह जाती हैं । ऐसी रेखा वाले व्यक्ति योजनाऐं तो बड़ी-बड़ी बनाते हैं, परन्तु विचारों में तारतम्य न होने के कारण प्रत्येक काम को आरम्भ करके उसे बीच में ही अधूरा छोड़ देते हैं ।

शनि-मुद्रिका शनि-क्षेत्र के स्वाभाविक गुणों को नष्ट करती है ।

यदि शनि-मुद्रिका टूटी हुई हो तथा शनि-क्षेत्र को पूर्ण रूप से घेरे हुए न हो तो उसके कुप्रभाव में कमी आ जाती है ।

यदि अँगूठा सुदृढ़ तथा बलवान इच्छा-शक्ति वाला हो तथा मस्तक-रेखा सबल हो तो भी शनि-मुद्रिका का कुप्रभाव कम हो जाता है।
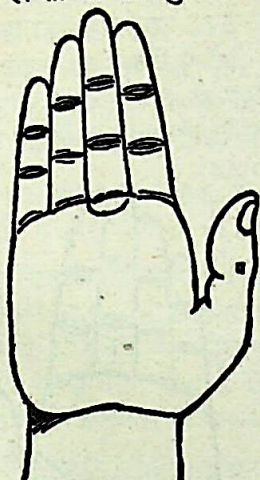
चित्र नं० 62
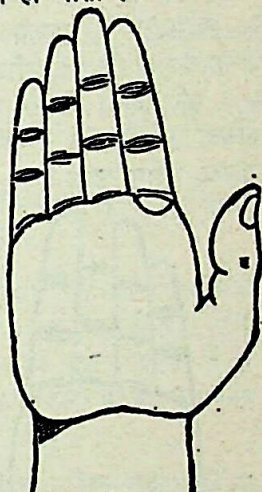
चित्र नं० 63

वृहस्पति-मुद्रिका

यह रेखा तर्जनी और मध्यमा अँगुली के मध्यभाग से आरम्भ होकर, गोलाई लिए हुए, वृहस्पति-क्षेत्र को अँगूठी के समान घेर लेती है । यह रेखा भी हाथों में देखने को नहीं मिलती । (देखें चित्र नं० 63)

यह रेखा जिन लोगों के हाथ में होती है वे गुप्त-विद्याओं के अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्वान होते हैं ।

हिन्दू-मतानुसार इसे 'दीक्षारेखा' कहा जाता है तथा यह समझा जाता है कि इस रेखा वाला जातक सांसारिक-सुखों से विरक्त होता है ।

यदि यह रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो एवं मस्तक-रेखा सबल हो तो जातक सभी विद्याओं में पारंगत होता है ।

मणिबंध-रेखायें

'कीरो' मणिबंध रेखाओं को विशेष महत्वपूर्ण नहीं मानते । ये रेखाएँ कलाई पर पाई जाती हैं तथा संख्या में तीन होती हैं । कीरो का कहना है– 'मणिबंध' की पहली रेखी हथेली के ऊपर उठकर मेहराव का रूप धारण कर ले तो वह शरीर के आन्तरिक-अँगों में विकार की सूचक होती है । यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो उसे प्रसव के समय अधिक कष्ट होता है । यदि तीनों मणिबंध रेखाऐं स्पष्ट एवं निर्दोष हो तो स्वास्थ्य उत्तम रहता है । (देखें चित्र नं० 64)
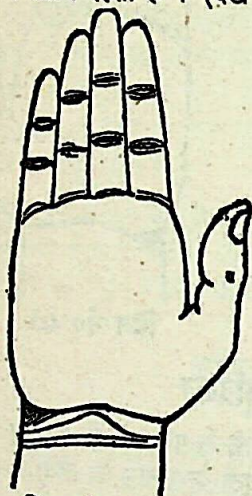
चित्र नं० 64
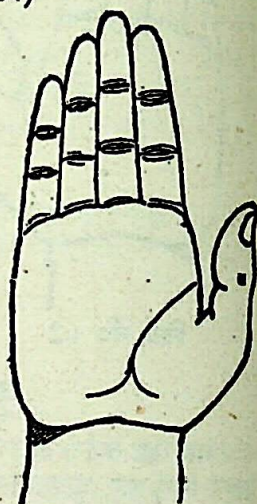
चित्र नं० 65

यात्रा-रेखाऐं

यात्रा-रेखाऐं चन्द्र-क्षेत्र तथा जीवन-रेखा पर पाई जाती हैं । चन्द्र-क्षेत्र पर जो भारी रेखाऐं होती हैं उन्हें यात्रा-सूचक समझना चाहिए । जीवन-रेखा में से निकलकर, उसके साथ-साथ चलने वाली सूक्ष्म रेखाओं को भी यात्रा-रेखा माना जाता है ।

यदि जीवन-रेखा दो शाखाओं में बँट गई हो और उसकी एक शाखा

चन्द्र-क्षेत्र तथा दूसरी शुक्र-क्षेत्र को जाती हो तो जातक परदेस की लम्बी यात्रा करता है । जीवन-रेखा से निकलने वाली रेखाऐं चन्द्र-क्षेत्र की यात्रा-रेखाओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं । चन्द्रक्षेत्रीय रेखाऐं छोटी-छोटी यात्राओं की सूचक होती हैं । (देखें चित्र नं० 65)

मणिबंध की प्रथम रेखा से चन्द्र-क्षेत्र की ओर ऊपर उठने वाली रेखाऐं भी महत्वपूर्ण यात्रा-रेखा होती हैं, यदि जीवन के उसी भाग में भाग्य-रेखा किसी शुभ फलदायक परिवर्तन का संकेत दे रही हो तो ऐसी रेखाऐं भाग्य की वृद्धि भी करती हैं ।

उक्त प्रकार की रेखाओं के अन्त में क्रास-चिह्न हो तो यात्रा निष्फल रहती है । द्वीप-चिह्न हो तो आर्थिक-हानि देती है ।

मणिबंधीय-रेखा पूरे हाथ को पार कर वृहस्पति-क्षेत्र पर जा पहुँचे तो यात्रा बहुत लम्बी होती है तथा उच्चपद, धन तथा यश दिलाती है । ऐसी रेखा यदि शनि-क्षेत्र पर पहुँचे तो कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटती है । सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचे तो यात्रा से मान-प्रतिष्ठा का लाभ होता है और बुध-क्षेत्र पर पहुँचे तो अनायास ही धन-लाभ होता है ।

यदि आड़ी रेखाऐं चन्द्र-क्षेत्र को पार करके भाग्य-रेखा तक पहुँचें तो यात्रायें लम्बी और महत्वपूर्ण होती हैं । छोटी रेखाऐं छोटी-छोटी यात्रायें कराती हैं । ऐसी रेखा यदि भाग्य-रेखा में प्रविष्ट होकर उसके साथ ऊपर की ओर चले तो यात्रा से आर्थिक लाभ होता है । यदि मणिबंध की ओर झुक जाये तो यात्रा दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध होती है । यदि रेखा अन्त में ऊपर की ओर मुड़ जाये तो सफलता मिलती है । ऐसी रेखाऐं एक दूसरी को काट दें तो बार-बार यात्रायें होती हैं । यदि कोई यात्रा-रेखा मस्तक-रेखा से मिलकर उस पर द्वीप अथवा बिन्दु-चिह्न बनाती हो तो यात्रा में दुर्घटना घटती है अथवा कोई शिरोरोग होता है ।

दुर्घटना के चिह्न

दुर्घटनाओं के चिह्न यात्रा-रेखाओं, जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा पर अधिक पाये जाते हैं । जीवन-रेखा पर अँकित चिह्न शीघ्र दुर्घटना कराता है ।

यदि शनि-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न से निकली कोई रेखा नीचे जाकर जीवन-रेखा से जा मिली हो तो वह किसी गम्भीर दुर्घटना की सूचक होती है। इस रेखा के अन्त में छोटा-सा क्रास-चिह्न हो तो दुर्घटना से बाल-बाल सुरक्षा होती है। ऐसा चिह्न शनि-क्षेत्र के मूलस्थान पर हो तो किसी पशु के कारण दुर्घटना होती है।

यदि शनि-क्षेत्र से निकली कोई सीधी रेखा जीवन-रेखा से जा मिले तो संकट आता है। यही नियम मस्तक-रेखा पर भी लागू होता है, परन्तु मस्तक -रेखा के कारण होने वाली दुर्घटना से चोट तो लगती है, प्राण नहीं जाते।

• • •

करतल में अन्य चिह्न और उनका प्रभाव

हथेली में नक्षत्र, द्वीप, बिन्दु, क्रास, त्रिकोण, जाल, वर्ग, वृत्त तथा त्रिशूल-चिह्न भी पाये जाते हैं । ऐसे चिह्नों की आकृति नीचे दिए गए चित्र में प्रदर्शित की गई है । ये चिह्न विभिन्न आकृति की छोटी-छोटी रेखाओं के मेल से बनते हैं ।
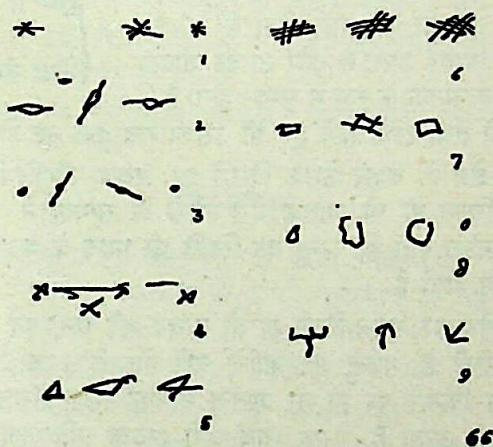
(करतल पर पाये जाने वाले विभिन्न चिह्न)

1. नक्षत्र, 2. द्वीप, 3. बिन्दु, 4. क्रास, 5. त्रिकोण, 6. जाल, 7. वर्ग, 8. वृत्त, 9. त्रिशूल ।

नक्षत्र-चिह्न

इन चिह्नों के प्रभाव के सम्बन्ध में निम्नानुसार समझना चाहिए–

जातक को उच्चाधिकार, पद एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा उसकी महत्वाकांक्षायें पूरी होती हैं । इस चिह्न के साथ यदि मस्तक, भाग्य तथा सूर्य-रेखाऐं भी सबल हों तो अत्यधिक शुभ फल प्राप्त होता है। यह चिह्न प्रायः अत्यधिक महत्वाकांक्षी स्त्री-पुरुषों के हाथ में ही पाया जाता है ।
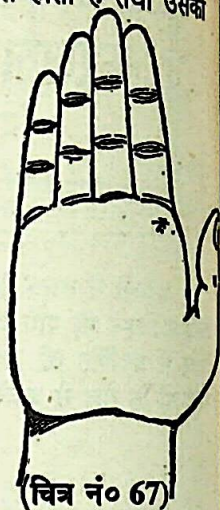
यदि तर्जनी के मूल-स्थान में, हाथ के किनारे पर अथवा उससे कुछ आगे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक महत्वाकांक्षी होता है तथा विशिष्ट व्यक्तियों के साथ उसका सम्पर्क भी होता है । (देखें चित्र नं० 67)

(चित्र नं० 67)

शनि-क्षेत्र के मध्य-भाग में नक्षत्र-चिह्न हो तो ज़ातक होनहार का दास होता है, उसकी विशिष्टता भयावह होती है और उसका जीवन एक दुःखान्त नाटक के रूप में समाप्त होता है। प्रतिभाशाली तथा राजा होते हुए भी उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है ।

शनि-क्षेत्र के बाहर उसके किनारे पर अथवा अँगुलियों को काटते हुए नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक ऐसे लोगों के सम्पर्क में आता है जो इतिहास-निर्माता होते हैं, परन्तु यह स्थिति भी भाग्य के भयानक-खेल के बाद ही प्राप्त होती है ।

सूर्य-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को धन, पद तथा प्रतिभा की प्राप्ति होती है, परन्तु सुख-शान्ति नहीं मिलती । यदि नक्षत्र-चिह्न सूर्य-क्षेत्र के किनारे पर हो तो जातक धनिकों तथा प्रतिभाशालियों के सम्पर्क में तो आता है, परन्तु स्वयं धनी अथवा प्रतिभाशाली नहीं बन पाता। यदि सूर्य-रेखा से जुड़ा हो तो जातक अपनी प्रतिभा एवं कला द्वारा बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करता है, परन्तु इसकी स्थिति सूर्य-रेखा के मध्यभाग के कुछ ऊपर होनी चाहिए ।

बुध-क्षेत्र के मध्य-भाग में नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक व्यवसाय अथवा विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करता है । यदि क्षेत्र के किनारे पर हो तो प्रसिद्धि प्राप्त लोगों के सम्पर्क में आता है ।

प्रथम मंगल-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को योद्धा-जीवन में ख्याति प्राप्त होती है । द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर हो तो जातक धैर्य एवं सहनशीलता से परिश्रम द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है ।

चन्द्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अपनी तीव्र कल्पनाशक्ति के कारण विख्यात होता है । परन्तु यदि मस्तक-रेखा झुककर चन्द्र-क्षेत्र पर आ गई हो तथा उसके अन्त में नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अपना मानसिक-सन्तुलन खोकर पागल हो जाता है । आत्महत्या करने वालों के हाथ में भी ऐसा योग होता है ।

शुक्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न यदि शिखर पर हो तो प्रेम सम्बन्धी मामलों में सफलता मिलती है । यदि क्षेत्र के किनारे पर हो तो जातक ऐसे प्रेम-विजयी लोगों के सम्पर्क में आता है ।

अँगुलियों के प्रथम पर्व (सिरे) पर नक्षत्र-चिह्न हों तो जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है । अँगूठे के प्रथम पर्व में हों तो इच्छा-शक्ति द्वारा सफलता मिलती है ।

अन्य स्थानों पर यह चिह्न असफलता अथवा संकट का सूचक माना जाता है ।

द्वीप-चिह्न

इस चिह्न को अशुभ माना जाता है, परन्तु इसका प्रभाव स्थायी नहीं होता । जिस रेखा पर द्वीप-चिह्न हो, उसका कुप्रभाव उस आयु-भाग पर ही पड़ता है, जिस पर द्वीप-चिह्न की अवस्थिति हो । यह चिह्न प्रायः वंशानुगत दोषों का सूचक होता है । (देखें चित्र नं० 68)

द्वीप-चिह्न जीवन-रेखा पर हो तो बीमारी, भाग्य-रेखा पर हो तो सांसारिक विषयों (धन, सौभाग्य आदि) में हानि, सूर्य-रेखा पर हो तो यश एवं पद की हानि तथा स्वास्थ्य-रेखा पर हो तो गम्भीर बीमारी का सूचक होता है ।

यदि कोई रेखा द्वीप-चिह्न से जा मिले अथवा किसी रेखा के कारण द्वीप बन जाय तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए ।

यदि शुक्र-क्षेत्र में, जीवन-रेखा की किसी सहायक-रेखा के अन्त में द्वीप-चिह्न बने तो अत्यन्त कामुकता एवं अनैतिकता के कारण कलंक लगने का सूचक समझना चाहिए । इसी प्रकार हृदय-रेखा से सम्बन्धित

द्वीप-चिह्न प्रेम-सम्बन्ध में 'व्यवधान', विवाह-रेखा से सम्बन्धित द्वीप-चिह्न वैवाहिक जीवन में अपमान, मस्तक-रेखा पर द्वीप-चिह्न योग्यता में अवरोध एवं भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न सौभाग्य में गतिअवरोध का सूचक होता है।
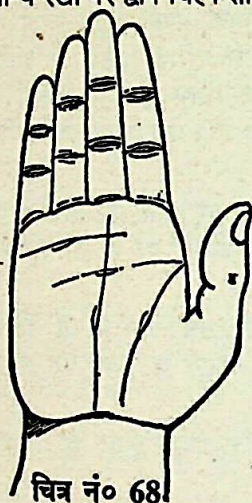
चित्र नं० 68
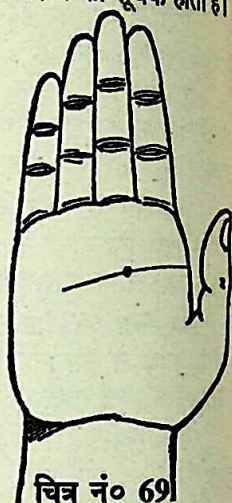
चित्र नं० 69

ग्रह-क्षेत्र पर स्थित द्वीप-चिह्न उस क्षेत्र के गुणों को हानि पहुँचाता है । गुरु-क्षेत्र पर हो तो महत्वाकांक्षा को निर्बल करता है, शनि-क्षेत्र पर दुर्भाग्य लाता है, सूर्य-क्षेत्र पर कला-प्रतिभा को हानि देता है, बुध-क्षेत्र पर व्यवसाय अथवा वैज्ञानिक-क्षेत्र में बाधाऐं देता है, चन्द्र-क्षेत्र पर कल्पना-शक्ति को नष्ट करता है तथा शुक्र-क्षेत्र पर कामुकता की वृद्धि से नैतिक पतन देता है ।

बिन्दु-चिह्न

यह चिह्न सामान्यतः अस्थायी बीमारी को निर्देशित करता है । यदि मस्तक-रेखा पर चमकीला लाल बिन्दु-चिह्न हो तो मानसिक आघात अथवा ऊपर से गिरने के कारण सिर में चोट लगती है । काला अथवा नीला बिन्दु-चिह्न स्नायु-तन्तुओं की बीमारी का द्योतक होता है । स्वास्थ्य-रेखा तथा जीवन-रेखा पर चमकदार लाल बिन्दु-चिह्न ज्वर का पूर्व-सूचक होता है । (देखें चित्र नं० 69)

क्रास-चिह्न

यह चिह्न निराशा, संकट तथा जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन का सूचक माना जाता है, परन्तु यह चिह्न यदि वृहस्पति-क्षेत्र पर हो तो शुभ फल देता है ।

यह चिह्न जीवन पर पड़ने वाले प्रेम-सम्बन्ध के प्रभाव की अवस्था को सूचित करता है । (देखें चित्र नं० 70)
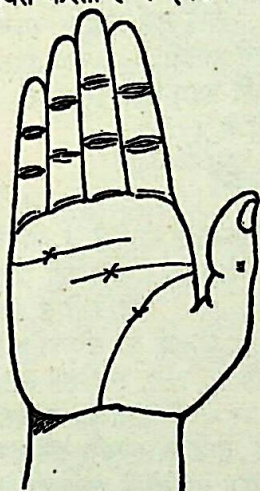
चित्र नं० 70
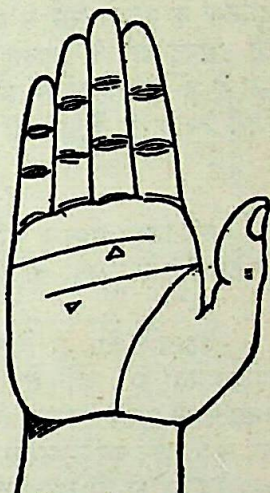
चित्र नं० 71

यह चिह्न शनि-क्षेत्र पर हो और भाग्य-रेखा का स्पर्श करता हो तो जातक का किसी दुर्घटना में हिंसात्मक अन्त होता है । केवल शनि-क्षेत्र पर ही हो तो जातक निराशावादी, उत्साहहीन तथा अत्यधिक भाग्यवादी होता है ।

यह चिह्न सूर्य-क्षेत्र पर हो तो असफलता देता है, बुध-क्षेत्र पर हो तो बेईमान बनाता है । द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर हो तो अनेक शत्रुओं के विरोध का सामना कराता है । प्रथम मंगल-क्षेत्र पर हो तो लड़ाई-झगड़े में जातक की मृत्यु की सम्भावना रहती है । यदि शुक्र-क्षेत्र पर हो तो किसी प्रेम-सम्बन्ध के कारण इतना अधिक कष्ट पाता है कि उससे मृत्यु

होना सम्भव है । यदि चन्द्र-क्षेत्र पर मस्तक-रेखा के नीचे हो तो कल्पना-शक्ति को नष्ट करता है ।

यदि मंगल के मैदान में भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मध्य में हो तो भाग्य में ऐसा परिवर्तन लाता है, जो अच्छा नहीं होता । यदि चन्द्र-क्षेत्र की ओर हो तो किसी यात्रा में हानि अथवा निराशा का शिकार बनना पड़ता है ।

यदि मस्तक-रेखा के ऊपर रहकर रेखा का स्पर्श करता हो तो किसी दुर्घटना के कारण सिर में चोट लगती है । यदि सूर्य-रेखा के बगल में हो तो उच्चपद पाने के प्रयत्नों में निराशा हाथ लगती है । यदि भाग्य-रेखा पर हो तो धन की हानि होती है और यदि हृदय-रेखा पर हो तो जातक जिसे प्रेम करता है, उसकी मृत्यु हो जाती है ।

त्रिकोण-चिह्न

यह चिह्न स्वतन्त्र रूप से हो तो प्रभावशाली होता है । जो त्रिकोण दो रेखाओं के परस्पर काटने से बना हो, वह कोई प्रभाव नहीं रखता । (देखें चित्र नं० 71)

वृहस्पति-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक की संगठन-क्षमता में वृद्धि करता है । शनि-क्षेत्र पर हो तो ज्योतिष, तन्त्र, सम्मोहन आदि गुप्त विद्याओं में पारंगत बनाता है । सूर्य-क्षेत्र पर हो तो कला का व्यावसायिक रूप में उपयोग करके, उससे लाभ उठाता है, तथापि अहङ्कारी नहीं बनाता। बुध-क्षेत्र पर हो तो व्यावसायिक एवं आर्थिक मामलों में सफलता दिलाता है । मंगल-क्षेत्र पर हो तो संकटों का शान्तिपूर्वक सामना करने का साहस देता है । चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो कल्पनाशक्ति का उपयोग कराता है एवं शुक्र-क्षेत्र पर हो तो काम-भावना को नियंत्रित करने की क्षमता देता है।

हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा के मध्य चतुष्कोण में पाये जाने वाले क्रास-चिह्न को 'रहस्यमय क्रास' (La Corix Mystigue) कहा जाता है। यह स्वतन्त्ररूप से भी बनता है तथा भाग्य-रेखा द्वारा हृदय-रेखा के मस्तक-रेखा की ओर आने वाली किसी रेखा के कटने से भी बन सकता है । (देखें चित्र नं० 72)

जिन लोगों के हाथों में इस प्रकार का चिह्न होता है, वह निगूढ़-विद्याओं में विश्वास रखने वाले तथा उनके द्वारा अपने भविष्य को

जानने के उत्सुक होते हैं । यदि यह चिह्न हृदय-रेखा के समीप हो तो जातक अन्धविश्वासी होता है। यदि मस्तक-रेखा नीचे की ओर तेजी से झुकी हुई हो तथा चिह्न उसके मध्यभाग के बिल्कुल ऊपर हो तो अन्धविश्वास की प्रवृत्ति और अधिक होती है । यदि यह चिह्न भाग्य-रेखा को स्पर्श करता हो अथवा उसकी सहायता से बना हो तो जातक पर आजीवन अपना प्रभाव रखता है । यदि स्वतन्त्ररूप से बना हो तो विशेष प्रभावशाली होता है ।
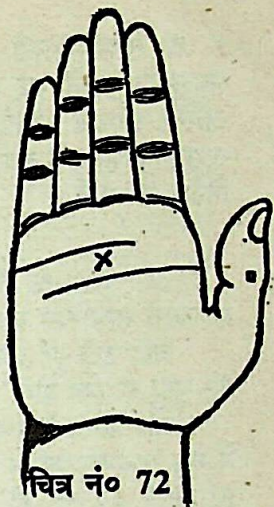
चित्र नं० 72

जाल-चिह्न

यह चिह्न प्रायः ग्रह-क्षेत्रों पर पाया जाता है । यह बाधाकारक माना जाता है । यह चिह्न जिस क्षेत्र पर हो, उसकी सफलताओं में विघ्न उपस्थित करता है । (देखें चित्र नं० 73)

वृहस्पति-क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक अहंकारी होता है । शनि-क्षेत्र पर हो तो निराशावादी एवं दुर्भाग्यशाली होता है । सूर्य-क्षेत्र पर
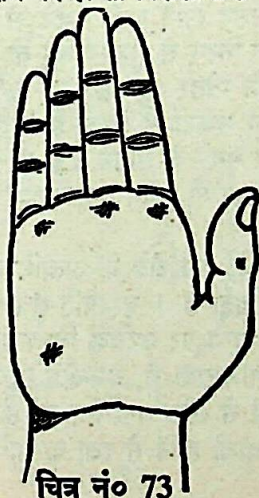
चित्र नं० 73
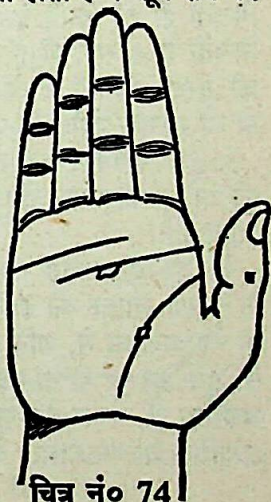
चित्र नं० 74

हो तो मिथ्याभिमानी एवं येन-केन प्रकारेण ख्याति उपलब्ध करने हेतु प्रयत्नशील होने का सूचक होता है । बुध-क्षेत्र पर हो तो जातक अस्थिर-स्वभाव का होता है । चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो अधीर, अशान्त एवं असन्तोषी होता है तथा शुक्र-क्षेत्र पर हो तो प्रेम-सम्बन्धों में अस्थिरता का निर्देश करता है ।

वर्ग-चिह्न

इसे सुरक्षा का चिह्न माना जाता है । यह चिह्न जिस स्थान पर हो उससे सम्बन्धित संकट से जातक को बचाता है । (देखें चित्र नं० 74)

यदि टूटी हुई जीवन-रेखा के टूटे भाग पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक की मृत्यु से रक्षा होती है ।

यदि भाग्य-रेखा वर्ग चिह्न में प्रविष्ट होकर रुक गई हो तो उस आयु में धन सम्बन्धी कठिन आघात लगता है, परन्तु यदि रेखा उसे पार करती हुई आगे बढ़ गई हो तो ऐसे आघात से सुरक्षा हो जाती है । यदि भाग्य-रेखा के किसी टूटे भाग पर ऐसा चिह्न हो तो हानि से सुरक्षा हो जाती है । यह चिह्न यदि भाग्य-रेखा को स्पर्श करता हुआ शनि-क्षेत्र पर हो तो दुर्घटना से रक्षा होती है ।

यदि मस्तक-रेखा किसी वर्ग-चिह्न से गुजरती हो तो मस्तिष्क पर पड़ने वाले दबाव से सुरक्षा होती है । यदि हृदय-रेखा किसी वर्ग-चिह्न से मिलती हो तो किसी प्रेम-सम्बन्ध के कारण आने वाले संकट से सुरक्षा मिलती है । यदि जीवन-रेखा किसी वर्ग-चिह्न से गुजरती हो तो जीवन की सुरक्षा होती है । यदि जीवन-रेखा के भीतर शुक्र-क्षेत्र पर वर्ग-चिह्न हो तो कामुक-प्रवृत्ति के कारण आने वाले संकटों से सुरक्षा होती है ।

यदि वर्ग-चिह्न जीवन-रेखा के बाहर मंगल के मैदान में हो तो जातक को या तो कारावास होता है अथवा परिवार में अलग एकान्तवास करना पड़ता है ।

वर्ग-चिह्न जिस ग्रह-क्षेत्र पर होता है, उस क्षेत्र के अत्यधिक गुणों के कारण जातक को हानि से सुरक्षित रखता है । वृहस्पति-क्षेत्र पर हो तो महत्वाकांक्षा से, शनि-क्षेत्र पर हो तो भाग्य पर अधिक विश्वास करने से, सूर्य-क्षेत्र पर हो तो यश-प्राप्ति की उच्चाभिलाषा से, बुध-क्षेत्र पर हो तो अधीरता से, मंगल-क्षेत्र पर हो तो शत्रुओं से और चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो अत्यधिक कल्पनाशीलता के कारण होने वाली हानि से रक्षा करता है।

वृत्त-चिह्न

'वृत्त' चिह्न केवल सूर्य-क्षेत्र पर ही शुभ माना गया है । इस स्थान पर जातक को सफलता प्राप्त करने में सहायक बनता है ।

(देखें चित्र नं० 75)

चन्द्र-क्षेत्र पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक के जल में डूबने की सम्भावना रहती है । यह चिह्न यदि किसी रेखा को स्पर्श करता हो तो उसके शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है ।

त्रिशूल-चिह्न

यह चिह्न सफलता का सूचक माना जाता है ।

यदि हृदय-रेखा वृहस्पति-क्षेत्र पर त्रिशूल के आकार की हो जाये तो उसे विशिष्ट राजयोग समझना चाहिए । (देखें चित्र नं०76)

यदि भाग्य-रेखा अपने अन्त में त्रिशूल का रूप धारण कर ले और उसकी शाखायें वृहस्पति, शनि एवं सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचे तो इसे भी एक विशिष्ट राजयोग समझना चाहिए ।

यदि सूर्य-रेखा अपने अन्त में त्रिशूल का रूप धारण कर ले तो यह भी एक प्रकार का विशिष्ट राजयोग होता है ।
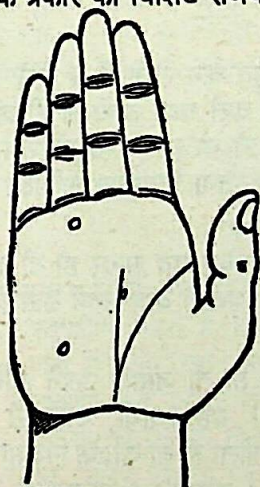
चित्र नं० 75
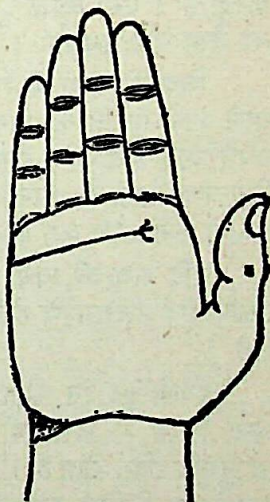
चित्र नं० 76

हस्त-परीक्षा के सम्बन्ध में अन्य ज्ञातव्य

हस्त-परीक्षा से सम्बन्धित अन्य-ज्ञातव्य विषय निम्नानुसार हैं-

हथेली

यदि सम्पूर्ण हथेली पर अनेक रेखाऐं जाल की भाँति फैली हों तो जातक संवेदनशील तथा नर्वस स्वभाव का होता है । वह जरा-जरा-सी बात पर घबड़ा जाता है । मुलायम हाथ में यह प्रभाव और बढ़ जाता है।

कठोर तथा दृढ़ हथेली जातक में स्फूर्ति तथा उत्तेजना का संचार करती है । ऐसा व्यक्ति दूसरों की दृष्टि में सफल होता है, परन्तु वह स्वयं को वैसा नहीं समझता ।

चिकनी हथेली में रेखाऐं प्रायः बहुत कम होती हैं । ऐसी हथेली वाले शान्त-प्रकृति के, कम चिन्ता करने वाले तथा अकारण ही क्रोध न करने वाले होते हैं । ऐसा हाथ सुदृढ़ हो तो जातक अपने ऊपर पूर्ण नियन्त्रण रखता है, परन्तु कोमल हो तो उतना नियन्त्रण नहीं रह पाता, तथापि उन्हें क्रोध कम ही आता है ।

यदि हाथ की त्वचा रेशम जैसी मुलायम एवं सुन्दर हो तो जातक उत्साह एवं उल्लासपूर्ण होता है । खुरदुरी हथेली वाले उतने उत्साही नहीं होते ।

हथेली का रंग फीका या सफेद-सा हो तो जातक अपने अतिरिक्त अन्य किसी में दिलचस्पी नहीं लेता । वह स्वार्थी, अहंकारी तथा सहानुभूति-रहित होता है । हथेली का रंग पीला हो तो जातक निराशावादी, उदास तथा चिन्तित स्वभाव का होता है । हथेली का रंग गुलाबी हो तो जातक आशावादी, स्थिर स्वभाव का तथा उत्साही होता है । रंग गहरा

हो तो शारीरिक गठन अधिक स्वस्थ होता है परन्तु उसमें क्रोध, उत्तेजना एवं काम-वासना की अधिकता पाई जाती है ।

वृहद्-त्रिकोण

जीवन, मस्तक एवं स्वास्थ्य रेखा के सम्मिलन से हथेली पर बनने वाले त्रिकोण को 'वृहद् त्रिकोण' कहते हैं । (देखें चित्र नं० 77)

चित्र नं० 77

यदि हथेली पर स्वास्थ्य-रेखा न हो तो त्रिकोण को पूरा करने के लिए अनुमान से कल्पित स्वास्थ्य-रेखा का सहारा लेना पड़ता है। कभी-कभी स्वास्थ्य-रेखा के अभाव की पूर्ति सूर्य-रेखा से भी कर ली जाती है ।

त्रिकोण जितना बड़ा तथा स्पष्ट होता है, जातक उतना ही उदार तथा परोपकारी होता है । वह अपने सिद्धान्त की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग तक कर सकता है । इसके विपरीत छोटे त्रिकोण वाला अथवा लहरदार एवं अनिश्चित रेखाओं से निर्मित त्रिकोण वाला जातक कायर, संकोची तथा नीच प्रकृति का होता है ।

यदि सूर्य-रेखा द्वारा वृहद् त्रिकोण बनता हो तो जातक दृढ़ निश्चयी, प्रभावशाली, परन्तु संकीर्ण विचारों का होता है ।

वृहद् चतुष्कोण

मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच वाले चौकोर स्थान को 'वृहद्-चतुष्कोण' कहते हैं । यह आकार में समान, दोनों अन्तोपर खुला हुआ, मध्य में चौड़ा तथा भीतरी भाग में चिकना हो तो शुभ होता है । ऐसे चतुष्कोण वाले जातक की बौद्धिक क्षमता उत्तम होती है । वह प्रेम तथा मैत्री का निष्ठापूर्वक निर्वाह करता है । यदि यह स्थान संकीर्ण हो तो जातक संकीर्ण विचारों का 'धर्मान्ध', पूर्वाग्रही तथा अन्यायी होता है।
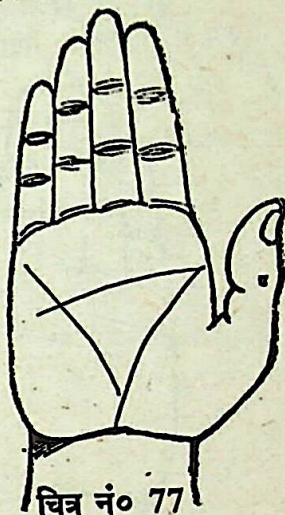
इस चतुष्कोण के भीतर नक्षत्र-चिह्न की उपस्थिति शुभ मानी गई है। (देखें चित्र नं० 78)

मंगल का मैदान

वृहद् चतुष्कोण तथा वृहद् त्रिकोण– इन दोनों के स्थान को सम्मिलित रूप में 'मंगल का मैदान' कहा जाता है । (देखें चित्र नं० 79)

चित्र नं० 78

चित्र नं० 79
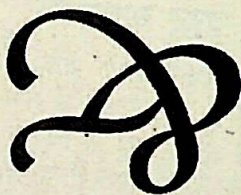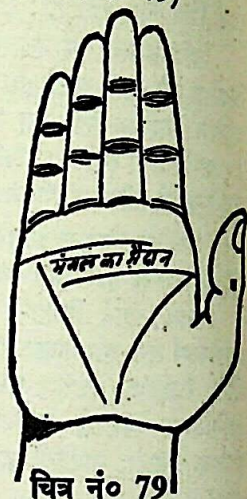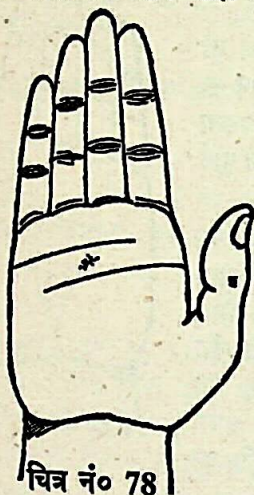
घटनाओं का समय निरूपण

हाथ की प्रत्येक रेखा को सात-सात वर्ष के भागों में विभाजित करके इनके फल का समयांकन बहुत कुछ ठीक-ठीक किया जा सकता है। जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा– इन चार बड़ी रेखाओं के आधार पर काल-विभाजन करने में सुगमता रहती है। स्मरणीय है कि काल-गणना करते समय हाथ की बनावट पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि कलात्मक, वर्गाकार एवं चमसाकार हाथों में बहुत अन्तर पाया जाता है। अतः हथेली की लम्बाई के अनुसार ही पैमाने को घटाना अथवा बढ़ाना आवश्यक होता है।

नीचे दिए गए चित्र में रेखाओं के आधार पर घटना-वर्ष ज्ञात करने का नियम प्रदर्शित है, परन्तु यह भी ध्यान में रखें कि घटना का शुद्ध समय बताने का अनुभव पर्याप्त अभ्यास के बाद ही हो पाता है। (देखें चित्र नं० 80)

प्रत्येक सात वर्षों के बाद पिछली घटनाओं की मिलती-जुलती पुनरावृत्ति होती रहती है, ऐसा हमारा अनुभव है।
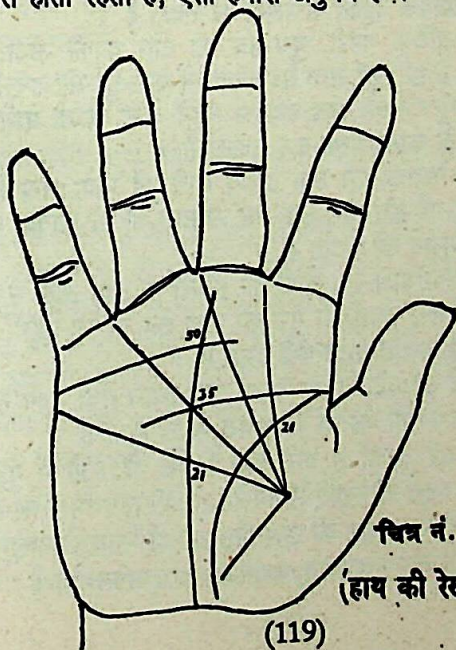
चित्र नं. 80

(हाथ की रेखायें और घटना वर्ष)

विशिष्ट प्रकार के हाथों की बनावट का परिचय

★ **आत्महत्या** की प्रवृत्ति वालों के हाथ सामान्यतः लम्बे होते हैं तथा उनमें मस्तक-रेखा गहरी ढलान लिए रहती है । चन्द्र-क्षेत्र अपने मूल-स्थान पर उन्नत होता है । मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा से भली-भाँति जुड़ी रहती है । किसी **कलात्मक** अथवा **दार्शनिक** हाथ में गहरी ढलान वाली मस्तक-रेखा भी ऐसा ही फल देती है ।

★ **हत्या करने वालों** के हाथ प्रायः निम्न श्रेणी के होते हैं । उनमें मस्तक-रेखा छोटी, मोटी तथा लाल रङ्ग की होती है । नाखून छोटे तथा लाल रंग के होते हैं । हथेली भारी तथा खुरदरी होती है । अँगूठा छोटा तथा मोटा होता है । उसका पहला पर्व गदा जैसे आकार का होता है । शुक्र-क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होता है ।

★ बहुत सख्त, पतली, लम्बी हथेली, अँगुलियाँ हथेली की ओर कुछ मुड़ी हुई, अँगूठा लम्बा तथा उसके दोनों पर्व विकसित, मस्तक-रेखा बहुत पतली, लम्बी तथा कुछ ऊपर की ओर स्थित एवं शुक्र-क्षेत्र धँसा हुआ– ऐसे लक्षणों वाले लोग भी **पैशाचिक प्रकृति के हत्यारे** हो सकते हैं ।

★ मस्तक-रेखा अधिक गहरी, बुध-क्षेत्र की ओर काफी ऊँची, अपने स्वाभाविक स्थान से हटी हुई तथा हृदय-रेखा में घुसी हुई-सी, हथेली प्रायः कठोर हो एवं अँगूठा लम्बा, दृढ़ तथा न मुड़ने वाला हो तो ऐसा व्यक्ति भी किसी **लालच के कारण हत्या** कर सकता है ।

★ चौड़ी हथेली, मस्तक-रेखा तेज ढलान लेती हुई प्रायः चन्द्र-क्षेत्र की समाप्ति तक चली गई हो और शुक्र-क्षेत्र अनुन्नत हो तो जातक धर्मान्ध होकर **मानसिक-संतुलन** खो बैठता है ।

★ चमसाकार अथवा दार्शनिक श्रेणी की हथेली हो तथा तेजी से ढलान लेने वाली मस्तक-रेखा, सहसा ही मुड़ कर चन्द्र-क्षेत्र पर जा पहुँची हो तो ऐसा जातक **सनकी** अथवा **कट्टरपंथी** होता है ।

★ यदि चौड़ी, नीचे की ओर ढलान वाली, द्वीप चिह्न तथा सूक्ष्म रेखाओं से पूर्ण मस्तक-रेखा हो तो जातक जन्मजात **पागल** होता है ।

★ छोटे-छोटे लहरदार टुकड़ों से बनी तथा विभिन्न दिशाओं में मुड़ी हुई मस्तक-रेखा हो तथा बहुत-सी रेखाऐं जीवन-रेखा के भीतर प्रथम मंगल-क्षेत्र से आरम्भ होकर द्वितीय मंगल-क्षेत्र की ओर दौड़ रही हों, साथ ही नाखून छोटे तथा लाल रंग के हों तो जातक **झगड़ालू, बदमिजाज** तथा **पागल** होता है ।

परिशिष्ट :

हस्तरेखा-रोग और होम्योपैथिक उपचार

हाथ पर पाई जाने वाली अनेक रेखाऐं रोग-सूचक होती हैं । यहाँ पर विभिन्न रोग-सूचक रेखाओं के लक्षण तथा उन रोगों के सरल उपचारों का उल्लेख किया जा रहा है । स्मरणीय है कि ये उपचार-विधियाँ निरापद, हानिरहित और लाभकर हैं, तथापि आवश्यकता अनुभव होने पर औषध-सेवन से पूर्व किसी सुयोग्य होम्यो.-चिकित्सक से परामर्श करने में संकोच नहीं करना चाहिए । परन्तु चिकित्सा से पूर्व निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिये–

1. जिस प्रकार 'अंग्रेजी मेडिकल स्टोर' होते हैं, उसी प्रकार बाजार में 'होम्योपैथिक स्टोर्स' होते हैं, जिनसे ये दवायें मिलती हैं ।

2. दवा गोली, चूर्ण (पाउडर) तथा लिक्विड (तरल) रूप में आती है ।

3. दवाओं के पीछे जो गिन्तियाँ होती हैं वे पोटेन्सियाँ होती हैं तथा निम्न तथा उच्च शक्ति को प्रदर्शित करती हैं । Q मूल अर्क तथा 30 शक्ति की दवा प्रतिदिन 3-4 बार तक ली जाती है । 200 शक्ति की दवा सप्ताह में 2 या 3 बार और इससे अधिक शक्ति जैसे 1M तथा 10M आदि की दवा की 15 से 30 दिन में एक खुराक ली जाती है ।

4. दवा को मुख साफ करके लें तथा दवा लेने के लगभग आधा घण्टा पूर्व व पश्चात् तक कुछ न खायें ।

5. दवाओं को धूल, धूप, सीलन, धुँआ आदि से बचायें ।

6. चिकित्साकाल में प्याज, लहसुन, मसाले, लालमिर्च, खटाई, शराब, माँस तथा अण्डे का प्रयोग न करें ।

हृदय के विविध रोग

(1) यदि हृदयरेखा पर काला-दाग चिह्न हो तो जातक को हृदय सम्बन्धी अनेक बीमारियाँ तथा आकस्मिक-मूर्च्छा-रोग होता है ।

(2) यदि हृदयरेखा पर बड़े द्वीप-चिह्न हों तो जातक अनेक हृदय-रोगों का शिकार बनता है ।

(3) यदि हृदयरेखा पर पीले रंङ्ग का दाग-चिह्न हो और वह मध्यमा अँगुली से मंगल के प्रथम-क्षेत्र तक पंखदार आकृति का हो एवं नीचे की ओर झुका हुआ हो तो जातक स्थायी-रूप से हृदय-रोगी होता है ।

होम्यो. - चिकित्सा— विभिन्न प्रकार के हृदय-रोगों में निम्नलिखित होम्यो. - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है-

एबिस नाइग्रा 30 — हृत्पिण्ड में तीक्ष्ण दर्द, हृत्पिण्ड का जोर से धड़कना, जिसकी आवाज पीठ की ओर से भी सुनाई दे तथा गले का किसी के द्वारा जकड़ दिये जाने जैसा अनुभव होने पर लाभ करती है ।

काल्चिकम 1x,6—वात का दर्द हृत्पिण्ड में फैल जाने पर काम करती है।

एब्सिन्थियम 30— हृत्पिण्ड का तेजी से धड़कना, असम गति में व्यवहृत ।

युफोबियम 30— हृत्पिण्ड की क्षीणता, हृत्पिण्ड के भीतर जैसे एक चिड़िया फड़फड़ा रही हो, असम व स्थूल नाड़ी की गति एक मिनट में 120-125 बार तक होने पर इसे देकर रोगी को राहत पहुँचायें ।

मैग-कार्ब 6,30— छाती में दर्द, श्वास-कष्ट, रक्त-मिश्रित बलगम तथा खाँसी रहती हो तो यह अच्छा कार्य करती है ।

आर्सेनिक 30,200— हृत्पिण्ड का काँपना, सामान्य-उत्तेजना से ही छाती के धड़कने की स्थिति में बहुत उपादेय रहती है ।

आर्स-आयोड 30— हृत्पिण्ड की वृद्धि, छाती का धड़कना, दमा जैसा खिंचाव होने पर आराम पहुँचाती है ।

ब्रोनियम 30— हृत्पिण्ड की वृद्धि, थोड़ा चलने अथवा उठकर बैठते ही छाती का धड़कना, नाड़ी धीमी गतिशील, मोटी तथा कठिन होने पर दें।

कैक्टस तथा लिलियम 30— छाती भारी, छाती पर जैसे कुछ चढ़ा दिया है, करवट से सोने में असमर्थता, छाती का धड़कना ठीक करती है।

कैल्केरिया-आर्स 6,30— दर्द, छाती का धड़कना, नाड़ी की गति तेज।

साइक्युटा 200— छाती धड़कने के साथ ही छाती का काँपना ।

डिजिटेलिस 3,30— हृत्पिण्ड के वैल्व के अनेक प्रकार के कठिन रोग, हृत्पिण्ड का बढ़ना, श्वासकृच्छता, हार्ट-फेल्योर में उपयोगी ।

फेरम-मेट 30— नाड़ी खूब मोटी परन्तु कोमल, रक्त-हीनता के कारण छाती धड़कना, हिलने-डुलने पर वृद्धि हो तो इसे दें ।

ग्लोनयिम 200— अत्यधिक छाती धड़कना, जिसका अनुभव अँगुलियों की नोंक तक हो, प्रत्येक धड़कन का कानों से सुनाई देना– लक्षणों में लाभप्रद ।

ग्रिण्डेलिय 30— सोते-सोते अचानक श्वास बन्द हो जाने जैसी स्थिति, साँस फेंकने के लिए घबराहट होने की दशा में व्यवहार करें ।

पिपोनिय 30— बाँई छाती में कोंचने जैसा दर्द, छाती का दर्द जो हृत्पिण्ड में होकर पीठ में जाता हो तो यह अवश्य लाभ करेगी ।

लाइकोपस 30, 200— हार्ट का बढ़ना, बल्ब के रोग, हृत्स्पन्दन की स्थिति में।

फाइजस्टिग्मा 3,6— भयानक रूप से छाती का धड़कना, जिसकी अनुभूति गले, सिर तथा ललाट तक हो ।

थायरॉयडिन 30— दुर्बल, तीव्र गति वाली नाड़ी, सोने में अक्षमता, दिल का संकुचित-सा होना, उद्वेग, हृत्पिण्ड में भयानक दर्द, जैसे कोई छुरी चुभो रहा हो ।

हृत्शूल के दर्द की औषधियाँ— कैक्टस, ग्लोबयिन, कैल्मिया, लैकेसिस, मैग्नोलिया, नैजा, स्पाइजिलिया, लैट्राडेक्टस, आर्सेनिक आदि हैं।

छाती-धड़कना— आर्सेनिक, एब्सिन्थ, एमिल-नाइ, नैजा, लैकेसिस, स्पाइजिलिया, एकोनाइट, आइबेरिस आदि विशेष उपयोगी हैं ।

हृत्पेशी-प्रदाह— एपिस, कैक्टस, डिजि, ग्लोनायन, लैकेसिस, नैजा।

डाइलेटेशन— एमोन-कार्ब, एण्टिम आर्स, कैक्टस, क्युप्रम, एसिड, हाइड्रो, लारोसि, लिलियम, नक्स, फॉस, टैब्केम ।

हार्ट फेलियोर— कॉनूचैले क्रैटीगस, लैके, नैजा, फैसियोलस, स्ट्रोफैन्थस– अच्छी दवाएँ हैं ।

हत्पिण्ड का बढ़ना— आर्स-आयोड, आरम, कैल्मिया, एमिलनाइ, आर्सेनिक, आर्नि, नेट्रम-म्यूर, डिजि, ग्लोनयिन, कैक्टस आदि ।

दिल की बीमारी (हृत्कम्प-रोग)—

(1) यदि जीवन-रेखा के भीतर, शुक्र-क्षेत्र पर कोई 'द्वीप-चिह्न' अथवा 'वृत्त-चिह्न' हो तथा शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा का रङ्ग पीला हो तो जातक को 'हृत्कम्प-रोग' अर्थात् दिल धड़कने की बीमारी होती है।

(2) यदि जीवन-रेखा के समीप प्रथम मंगल-क्षेत्र पर काले रङ्ग का 'बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक को हृत्कम्प-रोग होता है ।

होम्यो.- चिकित्सा— हृत्कम्प-रोग में निम्नलिखित होम्यो. औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

क्रेटेगस Q— कलेजे में धड़कन आरम्भ होने पर किसी अन्य औषध से पूर्व इसकी 5-5 बूँदें नित्य दिन में दो-तीन बार सेवन करानी चाहिए । हत्पिण्ड की तेज गति अथवा धड़कन, श्वास-कष्ट, नाड़ी की अनियमित गति एवं मानसिक-विषण्णता में यह विशेष लाभकर है ।

आइवेरिस Q— यदि 'क्रैटिगस' से लाभ न हो तो इसकी दो-तीन बूँदों की मात्रा दिन में दो-तीन बार देनी चाहिए । थोड़े परिश्रम से अत्यधिक स्पन्दन, हाथ-पावों की अवशता, जल्दी-जल्दी साँस लेना तथा छोड़ना, थोड़ी-सी उत्तेजना से कलेजा धड़कने लगना आदि लक्षणों में हितकर है।

एकोनाइट 6— हत्पिण्ड में दर्द के कारण छाती में कष्ट होने पर ।

डिजिटेलिस 3, 30— अधिक मेहनत तथा अधिक मानसिक-उत्तेजना के कारण हृत्स्पन्दन में लाभप्रद रहती है ।

कैक्टस 3x— हत्पिण्ड को हिलाये अथवा दबाये जाने का अनुभव, थोड़े परिश्रम से ही कलेजे का धड़कना, पुराना रोग, मृत्यु-भय ।

कैनाबिस-इण्डिका— हृत्स्पन्दन के कारण नींद खुल जाना ।

लैकेसिस 30— हत्पिण्ड की क्रिया कभी तीव्र, कभी मन्द होना । स्नायविक-दुर्बलता के कारण हृत्कम्प-रोग, बार-बार पेशाब होना ।

कैमोमिला 6— क्रोध के कारण कलेजा धड़कना ।

ओपियम 6— भय के कारण हृत्कम्प में बहुत उपयोगी रहती है ।

नक्सवोम— अपच के कारण हृत्कम्प में दें ।

आरम मेटालिकम 6x,200—कमजोरी के कारण हृत्कम्प में, विशेषकर वृद्धों के लिए बहुत ही उत्तम औषध है ।

कैल्केरिया फास 12x विचूर्ण— उद्वेग तथा दुर्बलता के साथ हृत्कम्पन, रक्त-संचालन की क्रिया अनियमित, श्वास लेते समय हृत्पिण्ड में अत्यधिक दर्द आदि लक्षणों में इसे देना चाहिए ।

फेफड़ों के या फुप्फुस-रोग

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा श्रृंखलाकार हो तथा मध्यमा अँगुली के नीचे एक मेहराव जैसी आकृति वाली रेखा भी हो तो जातक को फेफड़ों तथा कण्ठ से सम्बन्धित कोई बीमारी होती है ।

होम्यो. - चिकित्सा— फेफड़ों से सम्बन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

फास्फोरस 30— फुफ्फुस (फेफड़े का दाँया भाग) रोगाक्रान्त होने से बाँई करवट लेकर न सो पाने की स्थिति में यह अच्छा काम करती है ।

सल्फर 30— फुफ्फुस का बाँया भाग रोगाक्रान्त होने पर इसे दें ।

एण्टिम-टार्ट 6x— दोनों फुफ्फुस रोगाक्रान्त होने पर फुफ्फुस का शोथ, अत्यन्त श्वास-कष्ट, हृत्पिण्ड की वृद्धि, नाड़ी दुर्बल तथा तेज होने पर लाभकर ।

एसिड नाइट्रिक 6,200— फुफ्फुस का पक्षाघात ।

एकोनाइट 30— श्वासनली में रक्तसंचय के कारण प्रदाह होने पर दें।

ब्रायोनिया 1x, 6, 30, 200— छाती में सुई बिंधने जैसा दर्द, खाँसी कुछ ढीली तथा कम कष्ट-दायक । जिस ओर दर्द होता हो, उसी ओर करवट दबाकर सोने से कुछ आराम का अनुभव, खाँसते समय हाथों से छाती को दबाकर पकड़ना । बाँई ओर का फेफड़ा अधिक आक्रान्त, सिर-दर्द तथा वमन के लक्षणों में ।

एस्किलपियस 6— ब्रांकाइटिस तथा प्लुरिसी में ब्रायोनिया की भाँति छाती के लक्षण हों, फेफड़े के नीचे अधिक दर्द हो । ब्रायोनिया से लाभ न होने पर इसे दें ।

एमोन-कार्ब 200— छाती सर्दी में भरी, गले में सांय-सांय शब्द होना, लगातार खाँसी, परन्तु किसी भी तरह नहीं निकलती, जैसे दम अटक रहा हो । कभी-कभी मुख से रक्तस्राव, तीव्र श्वास की स्थिति में व्यवहृत ।

अन्य औषधियाँ— एमोनम्यूर, चेलिडोन, बैराइटाम्यूर, कैप्सिकम, कोपेवा, फेरम-म्यूर, हिपर-सल्फ, ओपियम, कैलि ब्राइक्रोम, सेनेगा, लाइकोपोडियम, सल्फर, फास्फोरस, रस-टाक्स आदि– इनका लक्षणानुसार प्रयोग किया जाना चाहिए । फेफड़े की बीमारियों में न्युमोनिया, ब्रांको-न्युमोनिया तथा ब्रांकाइटिस का मुख्य स्थान है ।

प्लूरिसी-रोग–

यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा उसमें से एक शाखा-रेखा निकलकर गुरु-क्षेत्र पर गई हो तो जातक को 'प्लूरिसी' नामक रोग होता है।

होम्यो.- चिकित्सा— प्लूरिसी रोग में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

प्रथमावस्था— इसमें एकोनाइट, फेरमफॉस तथा ब्रायोनिया लक्षणानुसार दें । ब्रायोनिया से लाभ न होने पर-- एस्क्लिपि अच्छा कार्य करेगी ।

सुई बिंधने जैसा दर्द होने पर— रैननक्यु, ब्रायो, कैलि-कार्ब, एस्क्लिपि, कार्बो-एनि लाभप्रद रहती हैं ।

नीचे के पंजरों तथा छाती के दोनों बगल दर्द होने पर— रैनानक्युलस 6x, सल्फ देकर रोगी को आराम पहुँचाया जा सकता है ।

दर्द नीचे से ऊपर कंधे में जाता हो— सल्फर 30, 200 दें ।

हिलने-डुलने से दर्द बढ़ता हो— ब्रायोनिया 200 उपयोगी रहेगी ।

हिलने-डुलने से आराम का अनुभव— रसटॉक्स 2, 1M अच्छी दवा है ।

रोगाक्रान्त बगल को दबाकर सोने से कुछ आराम मिले— ब्रायोनिया 200 ।

रोगाक्रान्त बगल को दबाकर न सो सके— बैलाडोना 30, 200 ।

अत्यधिक प्यास लगे— ऐपोसाई, मर्क, रस-टाक्स से लाभ मिलेगा।

प्यास न लगे— एपिस 1M परम उपयोगी ।

गरम के बाद ठंड लगकर रोग हो— रैननक्युलस देनी चाहिए ।

गरम में अच्छा रहे— ऐपोसाई 6,200 परीक्षित है ।

ठण्ड में अच्छा लगे— एपिस 1M से फायदा पड़ जायेगा ।

बांई ओर दर्द हो— एपिस, बैले, बोरैक्स, कैलि-कार्ब, सिना, सल्फ, ब्रायो, एस्क्लिपि-- ये प्रमुख औषधियाँ हैं ।

बांई ओर दर्द हो तब— स्टैनम, एण्टि, आर्स लक्षणानुसार दें ।

पानी जमने पर— एपिस, एपोसाइनम, आर्स, ब्रायो, सल्फर, सेनेगा, कैन्थरिस देना ठीक रहेगा ।

प्लुरा के जल का शोषण करने के लिए— फैसियोलस Q श्रेष्ठतम है।

छाती में सुई बिंधने जैसा दर्द ज्वर सहित— एकोनाइट ।

अन्य औषधियाँ— बोरैक्स, एपिस, एब्रोटेनम, कैलि-कार्ब, एस्क्लिपियस ट्यूबरोसा, कार्बो-एनि, सेनेगा, केन्थर, रैननकुलस, सिना, आर्सेनिक, हिपर-सल्फर तथा नेट्रम सल्फो .कार्बल– इनका लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए ।

टी. बी., तपैदिक या यक्ष्मा-रोग–

(1) यदि अँगुलियों के नाखून ऊँचे और झुके हुए हों एवं मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र से बुध-क्षेत्र के नीचे तक पंखदार आकृति की हो तो जातक को यक्ष्मा (तपैदिक, टी. बी.), थाइसिस, राज्यक्ष्मा अथवा क्षय रोग होता है।

(2) यदि अँगुलियों के नख फावड़े की भाँति चौड़े, टेढ़े तथा झुके हुए हों एवं स्वास्थ्य-रेखा पर समान आकृति के अनेक छोटे-छोटे 'द्वीप-चिह्न' हों तो जातक को यक्ष्मा रोगा होता है ।

(3) यदि अँगुली का नाखून भीतर की ओर अत्यधिक झुका हो तो भी जातक को क्षय-रोग होने की सम्भावना रहती है ।

होम्यो - चिकित्सा— यह अत्यन्त कठिन रोग है । इसकी तीन अवस्थायें होती हैं । अन्तिम अवस्था का रोग प्रायः असाध्य हो जाता है। रोग का पता चलते ही किसी अनुभवी-चिकित्सक द्वारा उपचार कराना चाहिए। निम्नलिखित होम्यो. औषधियाँ लक्षणानुसार प्रयोग करने पर हितकर सिद्ध होती हैं—

प्रथमावस्था में— ट्युबर्क्युलिनम, एमोन कार्ब, आर्स आयोड, ऐसिड गैलिक, एलियम सैटाइवा, फॉस, हिपर तथा थेरिडियम प्रमुख दवाएँ हैं ।

बढ़ी हुई अवस्था में— आर्स आयोड, बैसीलिनम, कार्बो-वेज, कार्बो-एनि, कैप्सिकम, स्टैनम आयोड, ड्रोसेरा तथा चायना लक्षणानुसार दें।

फेफड़ों में पीव पड़ जाने पर— कार्बोवेज, हिपर सल्फ, लैकेसिस, एसिड नाइ, सल्फर, लाइको तथा साइलीशिया देनी चाहिए ।

एकामिका इण्डिका 30— यक्ष्मारोग में फुफ्फुस से रक्तस्राव होना। छाती में दर्द तथा प्रातः काल ताजा रक्त एवं अपराह्न में थका-थका रक्त निकलने के लक्षणों में बहुत लाभ करती है ।

फेरम आयोड 200— फुफ्फुस में पीव एकत्र होने पर दें ।

आर्स आयोड 3x, 30— फुफ्फुस-गह्वर में फोड़ा, हेक्टिक-ज्वर, पीव मिश्रित ढेर का ढेर कफ निकलना, तेजी से बल-क्षय, रात को पसीना, दस्त तथा नाड़ी की क्षीणता-- इन लक्षणों में दें ।

नैप्थूत्माहन 200— कष्टदायक खाँसी, नींद न आना, तन्द्रा के साथ ही खाँसी, अधिक पसीना आना, दुर्गन्धित दस्तों में उपयोगी ।

अन्य औषधियाँ— एसिड नाइट्रिक, लैरेञ्जियल, ड्रासेरा, सेलिनियम, क्रियोजोट, सैल्बिया, मैगेनम, लैकनैन्थिस, ट्रिलियम, हिपर, बैलसमय, आयोडम, स्पांजिया, स्टैनम आयोड, स्टैनम, ऐसिड गैलिक, एलियम सैट, कार्बोएनि, एण्टी मानी ऑक्साइड सॉलिडेगों आदि हैं ।

कास (खाँसी) के कष्ट–

यदि हथेली का मध्यभाग छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा दोषपूर्ण हो और वह मस्तक-रेखा से मिल रही हो तथा शुक्र-क्षेत्र से निकली एक महीन रेखा जीवन-रेखा को पार करती हुई द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर पहुँच रही हो तो जातक को कास (खाँसी) का रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— कास रोग में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

ऐसिड कार्बोल— यह हूपिंग खाँसी की उत्कृष्ट दवा है । रोग की पहली अवस्था में इसके प्रयोग से खाँसी प्रायः घट जाती है, बाद में **कास्टिकम** 200 के प्रयोग से पूर्ण आरोग्य हो जाती है ।

इपिकाक 200— बार-बार खाँसी आना, गले के भीतर घरघराहट, साँय-साँय शब्द, परन्तु निकलता कुछ भी नहीं, वमन होने की दशा में उपयोगी ।

एमोन म्यूर 6,200— चित्त होकर अथवा दाँई करवट सोने से खाँसी बढ़ती हो तब इससे लाभ उठायें ।

कोनियम 200— सूखी, दम अटकाने वाली; जो सोते ही बढ़े । दिन में न रहे, परन्तु सायंकाल अथवा रात को खूब आये ।

स्टैफिसेग्रिया 30,200— केवल दिन के समय, खाना खाने के बाद की खाँसी।

एम्ब्रा 30— कुत्ते की आवाज या ढप-ढप जैसे शब्द वाली खाँसी ।

अर्जेण्ट-मेट— फैरिंग्स, लैरिंग्स, ब्रांकाई के पुराने रोग, जोर से हँसने अथवा पढ़ने से खाँसी आने के लक्षणों में व्यवहृत ।

बेलाडोना 30,200— आक्षेपिक सूखी, दम घुटाने वाली खाँसी ।

बौरैक्स 200— खाँसी के साथ दाँई छाती में दर्द, कफ में सड़ी दुर्गन्ध।

कार्बो-वेज 30,200— खाँसी के साथ छाती का चिपक-सी जाना । गरमी में घटना ।

कास्टिकम 200— गले में दर्द के साथ गले की सुरसुराहट वाली खाँसी।

इपिकाक— ठण्ड लगकर आने वाली, दम अटकाने वाली खाँसी । बच्चा खाँसते-खाँसते खड़ा हो जाये । वमन तथा गले में साँय-साँय होना।

फास्फोरस 30— सायंकाल से आधी-रात तक खाँसी का बढ़ना, बाँई करवट तथा चित्त होकर सोने से वृद्धि होने की स्थिति में हितकारी ।

ड्रॉसेरा 30,200— हूपिंग अथवा उसी प्रकार की खाँसी, बहुत जल्दी-जल्दी खाँसना पड़े तब अचूक औषध है ।

अन्य औषधियाँ— काईुअस, रियुमेक्स, क्रॉकस, क्रोटोन, डल्कामारा, एण्टिम-क्रूड, लैकेसिस, बैराइटा कार्ब, एण्टिम सल्फ, इयुकैलिप्ट्स, कोडिनम, रियुमेक्स, क्यूप्रम-मेट आदि हैं ।

अस्थमा, दमा की पीड़ा—

यदि हथेली में वृहद् चतुष्कोण का आकार छोटा हो तथा दोषपूर्ण स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा से मिल गई हो एवं शुक्र-क्षेत्र से निकली एक महीन रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई मंगल क्षेत्र पर पहुँच रही हो तो जातक को दमा अर्थात् श्वास की बीमारी होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— दमा अर्थात् श्वास-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

स्ट्रैमोनियम 30,200— यह स्पैज्माडिक-दमा की उत्तम औषध है ।

ब्लाटा ओरियेण्टा— इसके मदर-टिंक्चर की 5-6 बूँदें थोड़े से पानी में मिलाकर प्रत्येक घंटे बाद सेवन करें ।

कैनाविस इण्डिका 30,200— आक्षेपिक दमा, छाती का घड़घड़ाना, हृत्पिण्ड में यन्त्रणा, बांई करवट से न सो पाना, छाती दबाकर पकड़ना तथा केवल हवा चाहना– इन लक्षणों में दें ।

कैलेडियम 30,200— अत्यधिक खाँसना, कफ का न निकलना तथा कफ निकल जाने पर तनाव घट जाने के लक्षणों में लाभ करेगी ।

आर्सेनिक 200— दमा का खिंचाव आधी रात से बढ़ना, सो न सकना, सिर झुकाकर बैठे रहना, दम बन्द होने का भाव, छाती में दबाव, साँय-साँय शब्द होना तथा कफ न निकलना– इन लक्षणों में दें ।

एरालिया Q, 30— सिर झुकाकर, घुटने तथा कुहनी के ऊपर रखकर बैठना, श्वास लेने में बहुत कष्ट, परन्तु छोड़ने में सरलता महसूस होने पर हितकर ।

काक्सिनेला Q, 30— आक्षेपिक-दमा में खाँसी तथा श्वास-कष्ट घटाने के लिए इसे देना चाहिए ।

एस्पिडसपर्मा 30— दमा का प्रबल खिंचाव, कार्डियक-ऐज्मा ।

लैकेसिस 30, 200— सोते-सोते अचानक खिंचाव बढ़ जाना, छाती अथवा शरीर पर कपड़े न रख सकना, मुँह के पास हवा नहीं सुहाती, बहुत खाँसने पर थोड़ा बलगम निकलता है, तब खिंचाव कुछ घट जाता है ।

अन्य औषधियाँ— कार्बो-वेज, हिपर-सल्फ, मास्कस, नैजा, नैफ्थलाइन, इपिकाक, कैलिबाइक्रोम, कैलि-आयोड, बैडियागा, सैम्बुकस, एम्ब्राग्रिसिया, लोबेलिया आदि का लक्षणानुसार प्रयोग किया जाता है ।

उदर की विविध व्याधियाँ

यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक उदर-रोगों (पेट सम्बन्धी बीमारियों) का शिकार बना रहता है ।

होम्यो - चिकित्सा— उदर-रोगों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

पेट फूलना, पेट में वायु जमना— कार्बोवेज, लाइकोपोडियम, चायना, ऐसाफिटिडा, रैफेनस, कैलि-कार्ब, नक्सवोमिका लाभ करती हैं ।

खाई हुई वस्तु का पेट में जाते ही वायु हो जाना— कार्बो-वेज, कैलिकार्ब, लाइको, नक्स-मस अच्छी औषधियाँ हैं ।

आहार करने की खूब इच्छा, परन्तु एक-दो कौर खाते ही मानो पेट भर जाये— लाइकोपोडियम 30, 200 दें ।

आहार करने के समय पेट पूरा भरा हुआ अनुभव होना— चायना 30।

आहार के समय पेट भरा अनुभव होना— कैलि-कार्ब, नक्स-मस, सल्फर, लाइकोपोडियम, साइक्लामेन ।

आहार शेष होने पर ही पेट भरा लगना— ग्रैफ, नैट-कार्ब, नक्स, आर्जेण्ट, चायना।

आहार करने के एक-दो घंटे बाद पेट भरा लगना— पल्सेटिला 200।

दो घंटे बाद पेट भरा अनुभव होना— एनाकार्डियम 200, 1M ।

पेट में अम्ल संचय होना— नक्स-वोमिका, आइरिस, ऐसिड-सल्फ, रीबिनिया ।

पेट में जलन होना— आर्सेनिक, बिस्मथ, कार्बोवेज, आइरिस, लाइकोपोडियम फॉस, ऐसिड सल्फ, रोबिनिया ।

पेट भरते ही वमन होना— बिस्मथ 200 देकर लाभ उठायें ।

खाने-पीने के बाद पेट में दर्द होना— स्टैफिसेग्रिया 30 श्रेष्ठ दवा है।

स्पर्श सहन न होने वाला दर्द होना— आर्स, बेले, कैलि-बाई, फॉस दें।

पेट में गोला अथवा थक्का जैसा अनुभव होना— चायना, पल्सेटिला, एबिस बिस्मथ, कैल्केरिया-कार्ब परम उपयोगी दवाएँ हैं ।

पाकस्थली में घाव— अर्जेण्ट, आर्स, हाइड्रैस्टिस, कैलि-वाइ फॉस, सैम्बुकस, यूरेन-नाइ लक्षणानुसार व्यवहृत ।

पाकस्थली की गड़बड़ी के कारण छाती में जलन— कैल्केरिया-कार्ब, चायना, ग्रैफाइटिस, कैलिकार्ब, नेट्रम-म्यूर, लाइको, नेट्रम-सल्फ, पल्स, सिपि अचूक औषधियाँ हैं ।

पाकस्थली एवं अन्त्र की वृद्धि— जैन्थोरिया एपिकोलिया 30 ।

पाकस्थली में भयानक रक्तस्राव में— हाइड्रैस्टिन सल्फ काम करेगी।

तिल्ली सम्बन्धी विविध रोग—

यदि मस्तक-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचकर 'क्रास-चिह्न' बनाती हो, द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा शुक्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक को प्लीहा-वृद्धि (तिल्ली बढ़ जाना) रोग होता है । साथ ही उसे संतप्त विषम-ज्वर-रोग भी हो सकता है ।

होम्यो - चिकित्सा— निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करने से तिल्ली-रोग में लाभ होता है–

सिएनोथस 30— तिल्ली- प्रदेश में बाँई ओर गहराई में दर्द, सुई जैसी चुभन, बढ़ी हुई तिल्ली, वर्षा-ऋतु में कष्ट का बढ़ना एवं झिल्ली के पुराने रोग में हितकर है । तिल्ली की जगह दर्द होने के साथ रक्त की घातक कमी में विशेष लाभकर है ।

चायना 30, 200(सिनकोना)— बढ़ी हुई तिल्ली, धीरे चलने से तिल्ली में सुई चुभने जैसा दर्द, स्पर्श करने से दर्द तथा जोर से दबने पर आराम का अनुभव तथा हवा के झोकों का अच्छा न लगना– ये लक्षण प्रकटने पर उपयोगी ।

ऐरैनिया डायडेमा 30— क्विनीन के प्रयोग से मलेरिया के रुक जाने के फलस्वरूप तिल्ली का बढ़ना, बरसाती मौसम में रोग बढ़ना, ढीलापन, सुस्ती, प्रति दूसरे दिन निश्चित समय पर रोग में वृद्धि, रोगी को लगातार ठण्ड लगे तब दें ।

इग्नेशिया 30, 200— तिल्ली का सूजकर कड़ा पड़ जाना, दबाने से पेट तथा तिल्ली में दर्द, पेट के बाँये भाग में दर्द, रोगी का दर्द वाले पार्श्व में लेटना, उद्वेग की प्रधानता, दुःख तथा चिन्ता में घिरना ।

आर्टिका युरेन्स 30— मलेरिया के कारण तिल्ली का बढ़ना ।

रेननक्युलस बल्बौसस 30— तिल्ली-प्रदेश में दुखन, चुभन तथा धड़कन का अनुभव हो तब व्यवहृत ।

नेट्रम-म्यूर 200, 1M— मलेरिया के कारण तिल्ली का सूजना, तिल्ली-प्रदेश मे चुभन, रोगी का रक्तहीन हो जाना, शरीर के ऊपरी भाग का दुर्बल हो जाना ।

अर्निका 1M— गम्भीर रोग होने पर भी रोगी यह कहे कि 'कुछ नहीं है।'

ब्रायोनिया 30,200— जिगर तथा तिल्ली में सुई चुभी जैसी टीस, तिल्ली का सूजकर कड़ा पड़ जाना, जरा-सी हरकत से कष्ट बढ़ना, शारीरिक तथा मानसिक विश्राम से आराम का अनुभव, दर्द वाली जगह की ओर लेटना ।

जलोदर (पेट में पानी भर जाना)–

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक को जलोदर रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— जलोदर रोग (जिसमें पानी भर जाने के कारण पेट नगाड़े की भाँति फूल जाता है) में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है—

एपिस Q, 1x या 6— इस औषध के रोगी को प्यास नहीं लगती, पेशाब बहुत कम आता है, गर्मी से कष्ट बढ़ता है । सूजन, जलन और डंक लगने जैसी टीस के अनुभव वाले जलोदर-रोगी के लिये यह विशेष हितकर है ।

ऐपोसाइनसा कैन्नेबिनम Q— पेट में जल संचय तथा सम्पूर्ण शरीर में शोथ की यह मुख्य औषध है । इस औषध के रोगी को प्यास भी लगती है।

आर्सेनिक-एल्ब 30— मसाना, हृदय तथा जिगर में जल-संचय होने पर इसका प्रयोग किया जाता है । त्वचा का पारदर्शक होना, बेहद प्यास लगना, परन्तु पानी पीते ही वमन हो जाना– इस औषध का लक्षण है ।

ऐसेटिक ऐसिड 3, 30— जब चेहरे तथा शरीर के निचले भाग में सूजन हो जाये तथा पेट में पानी भर जाये, तब यह उपयोगी सिद्ध होती है । प्यास की दृष्टि से यह औषध एपिस तथा आर्सेनिक के बीच की है। इस औषध के जलोदर-रोगी को खट्टी डकारें आती हैं । पेट में खट्टा पानी उछलकर मुँह में भर जाता है तथा दस्त आदि आते हैं ।

लियैट्रिस स्पाईकेटा Q—सम्पूर्ण शरीर का शोथ, जिसमें पेशाब खुल कर आता है । औषध के मूल-अर्क की 10-10 बूँदें दिन में कई बार देनी चाहिए ।

औक्सीडेनड्रोन Q— शरीर के स्थान में जल-संचय होने पर यह औषध लाभ करती है । यदि पूर्वोक्त किसी भी औषध से लाभ न हो, पेशाब का अभाव दिखाई दे, बैठने पर भी श्वास कठिनाई से आये तथा लेटना असम्भव हो जाये, तब इसका प्रयोग हितकर रहता है ।

गुर्दे के रोग–

(1) यदि दोनों हाथों में हृदय-रेखा टूटी हो तथा प्रंथम मंगल-क्षेत्र पर, मस्तक-रेखा के ऊपर, श्वेत-बिन्दु अथवा दाग-चिह्न हो तो जातक को गुर्दे की बीमारी होती है ।

(2) यदि मंगल-क्षेत्र के समीप मस्तक-रेखा पर सफेद रंग का 'दाग' हो तो जातक को गुर्दे से सम्बन्धित कोई रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— गुर्दे से सम्बन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो - [illegible]यों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

मूत्र-ग्रन्थि-शोथ (नेफ्राइटिस की मुख्य औषधियाँ)— एपिस मेल, ए[illegible]ोनाइट, कैनेबिस सैटाइवा, कैन्थरिस, आर्सेनिक, सल्फर, मर्क-कोर तथा कोक्स-लिम्फ हैं ।

मूत्राशय-प्रदाह— एपिस, कैन्थरिस, बरबेरिस, टैरिबिन्थना, नक्सवोमिका, कोपेबा, फेरम-फास, सेनेगा, बेलाडोना, कास्टिकम, लौलिडैगो हैं ।

मूत्राशय का पक्षाघात— ओपियम, कैन्थरिस, सिकेल कौर, बेलाडोना, एकोनाइट अच्छा कार्य करती हैं ।

मूत्राशय का पुराना शोथ— कैन्थरिस, पल्सेटिला, बेन्जोइक एसिड, चिलेफिला के परिणाम उत्तम रहे हैं ।

मूत्राशय का अर्बुद— कैल्केरिया-कार्ब 1M उपयोगी है ।

गुर्दे की पथरी में— हाइड्रैन्जिया, सोलिडैगो, लाइकोपोडियम, अर्टिका यु[illegible]न्स, कल्केरिया कार्ब, ओसिमम केंनम, सासपैरिला, डायस्कोरिया ।

मूत्रकृच्छता— स्पिरिट आफ कैम्फर, कैन्थरिस, कोपेवा, ऐपिस, टे[illegible]बिन्थना, क्लेमेटिस, बोरैकन ।

इन्युरेसिस (पेशाब निकल पड़ना)— बेलाडोना, सल्फर, सीपिया, का[illegible]स्टिकम, पल्सेटिला, रस-टाक्स, क्रियोजोट, पैट्रोसि ।

हेमेच्यूरिआ (पेशाब में रक्त आना)– अर्निका, टैरेबिन्थि. चिचिनम सल्फ, हैमामेलिस, थ्लैस्पी, कैनेबिस-सैटाइवा ।

मूत्र-ग्रन्थियों में रक्त-संचय— बेलाडोना, टैरिबिन्थना, बेसिकेरिया, चिमेफिला ।

गुर्दे का मूत्र निकालना बन्द कर देना— आर्सेनिक, एकोन, क्युप्रस, टैरिबिन्थना ।

आँतों के रोग—

यदि हथेली मुलायम हो, हाथ की रेखाऐं पीले रंग की हों, नाखून लाल रंग के तथा धब्बेदार हों एवं स्वास्थ्य-रेखा टूटी हुई हो तो जातक को आँतों से सम्बन्धित कोई बीमारी होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— आँतों से सम्बन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो.- औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

बेलाडोना 30, 200— आँतों का प्रदाह, पाकस्थली अथवा उदर का प्रदाह, ठण्ड लगकर एण्टेराइटिस, पेरिटो नाइटिस, रोगाक्रान्त-स्थान की पीड़ा, थोड़ा भी हिलने-डुलने अथवा स्पर्श करने पर तकलीफ का बढ़ना– इन लक्षणों में प्रयोग करें ।

लैकेसिस 200— पेट में तनावपूर्ण दर्द, हाथ न लगा पाना, शरीर के कपड़ों का बोझ भी नहीं सुहाता, श्वास-कष्ट, पेट फूला हुआ, अजीर्ण, क्षीण-नाड़ी, दस्त-वमन, पेट में जंलन तथा अत्यन्त दुर्गन्धित पाखाना आदि लक्षणों में हितकर है ।

हाइड्रोस्टिक 30, 200— बड़ी आँत के बहुत समय तक प्रदाहित रहने पर, उससे आँव अथवा श्लेष्मा का निकलना, पाकाशय में दर्द, पेट में खालीपन, मुँह का स्वाद तीता-- इन लक्षणों में दें ।

आर्सेनिक एल्ब 1M — छोटी आँत के प्रदाह में नाभि के चारों ओर जलन जैसा तीव्र दर्द, अत्यधिक कमजोरी तथा सुस्ती, खाने-पीने के बाद वमन, पानी जैसा अथवा रक्त-मिंश्रित वमन, लगातार तीव्र प्यास एवं थोड़ा पानी पीने पर थोड़ी देर के लिए तृप्ति का अनुभव होना– इन लक्षणों में दें।

एकोनाइट 30, 200 1M— छोटी आँत के प्रदाह में ज्वर तथा प्रदाह घटाने के लिए इसका प्रयोग करें ।

बैलाडोना 30, 200— ज्वर, प्रदाह, शीत, लाल चेहरा, सिर में दर्द तथा पतले दस्त के लक्षणों में दें ।

कोलोसिन्थ 200— छोटी आँत में दर्द के साथ ज्वर, पाखाने का वेग, पेट का बहुत फूलना, नाभि के चारों ओर सिकुड़ने जैसा दर्द, सम्पूर्ण पेट में दर्द तथा मिचली के लक्षणों में ।

पोडो फाइलम 200— छोटी आँत में सामान्य प्रदाह के साथ अतिसार, प्रातःकाल रोग बढ़ना, सम्पूर्ण शरीर का रंग पीला तथा पेट फूलना आदि लक्षणों में श्रेष्ठ औषध है ।

अन्य औषधियाँ— पल्सेटिला, इपिकाक, विरेट्रम-ऐल्ब, पाइरोजेन, मैग्नेशिया फॉस आदि औषधियों का भी लक्षणानुसार प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है ।

अम्ल-पित्त रोग–

यदि चन्द्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक को अम्लपित्त रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— अम्ल-पित्त रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभकर सिद्ध होता है–

अर्जेण्टम नाइट्रिकम 200— पेट में अत्यधिक अम्ल, पाकाशय के रोग के साथ डकार आना, जी मिचलाना, पेट में इधर-उधर दर्द फैलना, पेट में हवा भरना, अपच, भोजन के कारण छाती में जलन, मीठा, नमक तथा पनीर खाने की विशेष इच्छा हो तो अच्छा काम करती है ।

लाइकोपोडियम 200— पेट में वायु, कब्ज, जीभ पर सफेदी– इन लक्षणों के साथ छाती में जलन, दर्द, खट्टी डकार, पेट फूला हुआ ।

पल्सेटिला 200— फीका स्वाद, दस्त, मैली जीभ– इन लक्षणों के साथ छाती में जलन होने पर देनी चाहिए ।

नक्स-वोमिका 30— खाने के बाद भोजन-नली में जलन, डंकार आने में कठिनाई, भोजनोपरान्त भोजन-नली में पानी उठ-उठकर आना, पनीले डकार, साँस में खट्टापन तथा बुसे डकार आने के लक्षणों में उपयोगी है।

ब्रायोनिया 30, 200— खाने के बाद कड़वे-खट्टे डकार आना और उनमें भोजन का स्वाद भी रहना, पेट में भारीपन का अनुभव होने पर दें।

कार्बोवेज 200— बुसे तथा खट्टे डकार आना, पाचन-क्रिया का अत्यन्त शिथिल हो जाना, पेट के ऊपरी भाग में हवा भरी रहना, कब्ज की अपेक्षा दस्तों की अधिक प्रवृत्ति होने पर देकर लाभ उठावें ।

चायना 30, 200— सम्पूर्ण पेट में हवा भरी रहना, फीके अथवा खट्टे डकार, पेट की हवा से दर्द, डकार आने पर कुछ हल्केपन का अनुभव, भोजन-नली में वक्षोस्थि के पीछे भोजन पड़े रहने की अनुभूति, सब कुछ कड़वा लगना।

ऐसिड लैक्टिक 30— खाई हुई वस्तु का हजम न होना । गरम, कड़वी तथा तीती डकार आना । गले में जैसे एक गोला-सा अड़ा हो ।

एसिड-सल्फ 30— वमन, दाँत खट्टे होना, छाती में जलन की दशा में।

फेरम-सल्फ 30— डकार के साथ खाई हुई वस्तु का मुँह में, पानी के रूप में भर आना, इन लक्षणों के प्रकट होने पर देनी चाहिए ।

मैग्नेशिया-कार्ब 200— वायु जमना, खट्टी डकारें आना, छाती में जलन, स्टार्च या दूध नहीं सुहाता तो तब दें ।

आइरिस वर्स 30— मुख, पाकस्थली तथा आँतों में आग की लपट जैसी जलन, मुँह से लार बहना, गोंद जैसा गाढ़ा वमन, पित्त की वमन, सारा कफ अम्ल हो जाना ।

मस्तिष्क सम्बन्धी विविध रोग

यदि मस्तक-रेखा पर अनेक छोटी-छोटी रेखाऐं आर-पार हों तथा उस पर दाँत जैसे चिह्न बना रही हों तो जातक को सिर-दर्द तथा मस्तिष्क सम्बन्धी अन्य रोग होते हैं—

होम्यो - चिकित्सा— मस्तिष्क सम्बन्धी विभिन्न रोगों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

साइक्लेमेन 30— मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण स्थिर-मन से चिन्ता करने में असमर्थ तथा कष्ट से नींद आना आदि लक्षणों में ।

आर्निका 30— सिर गरम तथा शरीर ठण्डा रहे— इन लक्षणों वाले रोगों में लाभप्रद रहती है ।

ऐसड कार्बोल 200— सिर के मध्य भाग में जलन होने पर दें ।

ग्लौनायिन 200— मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के कारण रोना-चिल्लाना तथा इसके साथ ही सिर में टपकनमय दर्द तथा वमन के लक्षणों में ।

ऐस्टीरियस 200— सिर के ऊपर आग रखी हुई जैसी अनुभूति, मस्तिष्क में रक्ताधिक्य, सिर-दर्द का प्रातः-सायं होना, दोपहर में न रहना ।

कैलि ब्रोम 3x, 200— मस्तिष्क में रक्त शून्यता, हाथ-पाँव ठण्डे, अच्छन्नाभाव, मस्तिष्क की दुर्बलता, स्मृति-शक्ति का लोप, सिर चकराना, हाथ-पाँव काँपना एवं अधिक इन्द्रिय-सेवन, परिश्रम, शोक अथवा चिन्ता के कारण उत्पन्न मस्तिष्क के रोगों में ।

इरिडियम क्लोराइड 30— मस्तिष्क में गलाई हुई धातु के भरे रहने जैसी अनुभूति, सिर भारी, दाँई ओर का सिर-दर्द बना रहता हो तब उपयोगी ।

निकोलम मेट 3x, 6— निर्दिष्ट समय के अन्तर से आक्रमणशील सिर-दर्द, निरन्तर सिर-दर्द बना रहना, प्रातः से दोपहर तक वृद्धि ।

कार्बो-सल्फ— सिर में अनेक प्रकार के शब्द, कान मानों बन्द हो गए हैं ।

ऐकोनाइट 30— ठण्ड लगने के कारण सिर में दर्द, टपकन, आँखों तथा जबड़ों में दर्द की दशा में हितकर ।

आर्जेन्ट नाई 200— सिर चकराना, बीच-बीच में भयानक अधकपारी का दर्द, ऋतुकालीन तथा बाद में सिर-दर्द के लक्षणों में दें ।

ब्रायोनिया 30, 200— सामने की नसों, कपाल तथा गर्दन में दर्द । हिलने-डुलने, खाने तथा आँखें खोलने पर वृद्धि की स्थिति में व्यवहृत ।

अन्य औषधियाँ— इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार– एण्टिम-टार्ट-कैक्टस, कैड्मियम, कैनाबिस इण्डिका, कैल्केरिया ऐसेट सिङ्कन, निकोलम, फेरम, क्लोरेल, चायना, काक्युलस, कार्बोनियम, सल्फ, नैट्रम कार्ब मास्कस, ऐसिड-कार्ब, क्युप्रम सल्फ, जेलीमियम, बैलाडोना, इग्नेशिया, इपिकाक आदि औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है ।

मृगी (अपस्मार) रोग–

यदि हाथों की अँगुलियाँ टेढ़ी और नुकीली हों तथा ग्रह-क्षेत्र दबे हुए निम्न हों तो जातक को 'मृगी-रोग' होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— मृगी-रोग में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करने से लाभ होता है–

आर्टिमिसिया 3, 200— दौरों का बार-बार रुक-रुककर आना, मासिक-स्राव की अनियमितता, शुक्र-क्षय के कारण मृगी-रोग तथा प्रथम रजोदर्शन की आयु में रोग होना आदि लक्षणों में दें ।

एब्सिन्थ 30— पहले सिर चकराना, फिर अकड़न के साथ दाँती लगना या दाँत किटकिटाना, जीभ काटना । सम्पूर्ण ज्ञान का लोप न होना। शिशुओं पर दौरा अधिक समय तक रहना । दौरे के समय इस औषध के मूल-अर्क की 2-1 बूँदें जीभ पर रखने से दौरा (फिट) दूर हो जाता है।

एमिल नाइ Q, 3— अज्ञानभाव के साथ शारीरिक अकड़न में ।

कैलिब्रोम 3x से 200— इस औषध की मात्राएँ क्रमशः बढ़ाकर देते रहने से बीमारी में लाभ होता है ।

एडोनिस वर्नेलिस— इसके मदर-टिंक्चर को 4-5 बूँद की मात्रा में नित्य 3-4 बार देते रहने से लाभ होता है ।

एसिड हाइड्रो 30— फिट आरम्भ होने से पूर्व मुँह में पानी भर आना, वमन, मिचली तथा मृगी-जैसी (वास्तविक मृगी नहीं) अकड़न में दें ।

फेरम सियानेटम तथा एस्टिस्यिस— ये दोनों भी मृगी-रोग की उत्तम औषधियाँ मानी जाती हैं ।

ब्यूफो 200— फिट आरम्भ होने से पूर्व जोर से चिल्लाना । जननेन्द्रिय की उत्तेजना ही रोग का कारण हो । फिट के बाद सोना अथवा ऋतुकालीन फिट में हितकर है ।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है– क्यूप्रममेट, जिंकम, हायोसियामस, सोलेनम, कैरोलन, बर्बेना, अर्जेण्टनाइ, इनैन्थि, प्लम्बम, सल्फर, आर्टिमिसिया, कास्टिकम, बैलाडोना, गयोनायिन, कैल्केरिया, काक्युलस, साइलीशिया आदि हैं ।

उन्माद-रोग–

(1) यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न' हो, मस्तक-रेखा ढलावदार तथा लम्बी हो, चन्द्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा अथवा बहुत नीचा हो, शनि-क्षेत्र दबा हुआ तथा मध्यमा अँगुली टेढ़ी हो तो जातक को उन्माद-रोग (पागलपन) होता है ।

(2) यदि मस्तक-रेखा हथेली के आर-पार चली गई हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो भी जातक को उन्माद-रोग होने की सम्भावना रहती है ।

होम्यो - चिकित्सा— उन्माद-रोग में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभ करता है–

प्लैटिना 30, 200— प्रसूता, गर्भवती तथा कुमारी (अविवाहिता) स्त्रियों के कामोन्माद में विशेष उपयोगी है ।

पैरिस क्वाड्रि 3— रोग निरन्तर बढ़ते रहना इस दवा का लक्षण है ।

कैन्थरिस 30— स्त्रियों की संगमेच्छा की प्रबलता, कामोन्माद में दें।

एक्टिया-रेसि 30— प्रसूति-गृह में कामोन्माद । प्रलाप, चिल्लाना, भूत का भय हो तो यह दवा बहुत अच्छा कार्य करेगी ।

कैलि-फास 200x— उन्मत्तता एवं मानसिक-विकृति, सूतिकोन्माद में उत्तम।

हायोसियामस 200— प्रसूतावस्था अथवा प्रेम में निराशा के कारण उन्माद। सभी पर अविश्वास, विष खिला देने के भय से हल्के ढंग का उन्माद, कभी हँसना, कभी गाना-नाचना आदि । कामोन्माद, निर्लज्जता का प्रदर्शन आदि लक्षणों में अत्युत्तम औषध है ।

सल्फर 200— सामान्य वस्तु अथवा व्यक्ति को महत्वपूर्ण ससमझना, सभी वस्तुऐं सुन्दर दिखाई दें ! पुराना उन्माद-रोग । कलह-प्रियता, धर्मोन्मत्तता, अहंकार, भ्रांत विश्वास, गन्दा रहना इस दवा के प्रमुख लक्षण हैं।

स्ट्रैमोनियम 200— लज्जाशील साध्वी स्त्री का अचानक ही निर्लज्ज हो जाना, बकवास करना, कामोन्मत्तता के लक्षण, शरीर से एक प्रकार की गन्ध निकलना । अत्यन्त क्रोध का भाव, डराने वाला उन्माद रोग ।

बेलाडोना 30, 200— तीव्र प्रलाप के लक्षण, आँख की पुतली फैली हुई तथा निश्चल भयानक दृष्टि, बीच-बीच में क्रोध प्रकट करना ।

कैनाबिस इण्डिका Q, 3x— भ्रमपूर्ण अविश्वास अथवा काल्पनिक वस्तुऐं देखना आदि इस दवा के प्रमुख लक्षण हैं ।

अन्य औषधियाँ— इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है- विरेट्रम-एल्ब, क्युप्रम, फास्फोरस, टेरेण्टुला, ऐबिसिन्थिम तथा साइक्यूटा आदि ।

आन्तरिक पित्तज पीड़ाऐं

यदि हथेली की त्वचा तथा रेखाओं का रंग पीला हो तो जातक पित्त-प्रकृत्ति का होता है तथा उसे आन्तरिक कष्ट बने रहते हैं ।

होम्यो - चिकित्सा— पित्त-प्रकृतिजन्य भीतरी कष्टों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है-

एसिड लैक्टिक 30— खाई हुई वस्तु का हजम न होना । गर्म, तीती तथा कड़वी डकारें आना । पेट से मुँह तक जलन । गले में गोला-सा

अड़े होने का अनुभव होने पर परम उपयोगी ।

ऐसिड-सल्फ 200— वमन, उबकाई, दाँत खट्टे होना, छाती में जलन।

ऐसिड सैलिसाइलिक 200— पेट में वायु एकत्रित होने के साथ क्रमशः डकारें आना ।

फेरम-सल्फ 30— अम्ल-पित्त, डकार के साथ मुँह में पानी भरना अथवा खाई वस्तु का उठना ।

मैग्नेशिया-कार्ब 200— खट्टी डकारें आना, छाती में जलन, वायु जमना, स्टार्च तथा दूध न सुहाना की स्थिति में हितकर ।

नेट्रम-फास 6x, 30— खट्टी डकारें, खट्टी वमन, खट्टा स्वाद, पेट-फूलना, खट्टी गन्धयुक्त पाखाना होने पर दें ।

एबिस नाइग्रा 30— वायु तथा अम्ल, वृद्धों का अम्ल-रोग, अजीर्ण तथा उसके साथ हृत्पिण्ड की कोई बीमारी ।

नक्स-वोमिका 30 खाना भली-भाँति हजम न होना, पेट में नोचने, चबाने जैसा दर्द, खट्टी वमन, कब्ज, थोड़ा-थोड़ा पाखाना होना, गले में अँगुली डालकर वमन करने की कोशिश करना ।

रोबिनिया Q— मुँह में खट्टा पानी भर आना, खट्टी वमन, दाँत खट्टे हो जाने की दशा में ।

आइरिस-वर्स 30— मुख, पाकस्थली तथा आँतों में आग की लपट जैसी जलन, मुँह से लार बहना, अम्ल की वमन आदि में हितकर ।

लाइकोपोडियम 200— पेट में वायु जमना, खट्टी डकारें आना, खट्टी वमन, मुँह का स्वाद खट्टा, शिशु को हरे रंग का पाखाना, दूध तथा दही जैसी वमन होने पर देना ठीक रहेगा ।

हिपर-सल्फ 200— कोई भी पदार्थ हजम नहीं होता । सावधानीपूर्वक खाने पर भी पेट का गड़बड़ हो जाना, मुँह में खट्टापन, पेट में ऐंठन जैसा दर्द एवं कुछ खाने पर दर्द का घटना आदि लक्षणों में प्रयोग करें।

अन्य औषधियाँ— एसिड हाइड्रो, काक्युलस, लैकेसिस, चेलिडोन आदि।

पीलिया अथवा पाण्डु-रोग

यदि स्वास्थ्य-रेखा पर कहीं नक्षत्र-चिह्न तथा द्वीप-चिह्न– दोनों ही

हों तथा उसी जगह एक काले रंग का 'तिल' जैसा दाग-चिह्न भी हो तो जातक को पाण्डु अर्थात् पीलिया रोग होता है ।

होम्यो - उपचार— पाण्डु अर्थात् पीलिया रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

क्रोटेलस 6— खतरनाक स्थिति का रोग, रक्त-विषाक्तता होने पर दें।

चेलिडोन 30— शरीर की त्वचा, मुँह, आँख, पेशाब आदि सभी का पीले रंग का हो जाने की दशा में बहुत लाभ करती है ।

डिजिटेलिस 200— लिवर-रोग के साथ पीलिया, लिवर का कड़ापन, बड़ा, तनावपूर्ण, धीमी नाड़ी, पेशाब थोड़ा तथा पाखाना सफेद फीके रंग का होने के लक्षणों में इसे देकर लाभ उठायें ।

डॉलिकस 6— आँखों का पीला होना तथा पाखाना सफेद होने पर।

हाइड्रैस्टिस 30— लिवर में दर्द, आँखों तथा पेशाब में पीलापन ।

बर्बेरिस Q, 30— चमकदार पीला अथवा खून जैसे लाल रंग का पेशाब होने पर ।

नक्स-वोमिका 30— अत्यधिक क्विनीन के सेवन के कारण अथवा शराबियों के कामला रोग में देवें ।

फास्फोरस 30— लिवर सिरोसिस की अन्तिम दशा में शोथ, कामला तथा उदर व लिवर में तनावपूर्ण दर्द होने पर उपयोगी ।

एमोन बेंज 30— पित्त की क्रिया रुकी रहने के कारण होने वाले कामला रोग में देना चाहिए ।

माइरिका Q, 3— लिवर की विकृति के कारण पित्त उत्पन्न होकर कामला।

नेट्रम-सल्फ— मिचली,खट्टी वमन, मुँह में खट्टा-तीता स्वाद एवं कामला ।

मर्कसॉल 200— लिवर में प्रदाह, तनाव, दर्द, पित्त निकलने में कमी, लिवर में कड़ापन, बड़ा शोथ की दशा में कामला की अच्छी दवा है ।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की आवश्यकता भी पड़ सकती है– पोडोफाइलम, आयोडम तथा कार्डुअस आदि ।

विविध प्रकार के वात-रोग

(1) यदि जीवन-रेखा से एक शाखा-रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तो जातक को वात (गठिया) रोग होता है ।

(2) यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकली कोई रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई आगे निकल गई हो तो जातक को गठिया-वात रोग होता है ।

(3) यदि स्वास्थ्य-रेखा घिसी हुई-सी दिखाई दे तो जातक को गठिया-वात होने की संभावना रहती है ।

(4) यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तो भी गठिया-वात रोग होने की सम्भावना रहती है ।

होम्यो - चिकित्सा— गठिया-वात रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो - चिकित्सा का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

कैलि आर्क्ज 30— लम्बेगो तथा कमर के दर्द में अत्यधिक यन्त्रणा होने पर ।

कैलफ्लोर 6 से 200— पहले चलते समय दर्द । थोड़ा चलने के बाद दर्द के न रहने के लक्षणों में देना चाहिए ।

फेरम-मेट 200— कमर में वात रुके दर्द में हितकर है ।

मैक्रोटिन 1M— प्रायः सभी प्रकार के कमर-दर्द में लाभकर है ।

आर्टिका युरेन्स 200— इसके मदर-टिंक्चर को 5 बूँद की मात्रा में गरम पानी के साथ 4-5 घण्टे के अन्तर से दिन में 3-4 बार लेते रहने से हर प्रकार के वात-रोग में लाभ होता है ।

रसटाक्स 200— जवड़े का वात, अन्य प्रकार के शरीर में वात-दर्द में ।

ऐब्रोटेनम 30, 200— कन्धे, कलाई, एड़ी का वात । आक्रान्त-स्थान फूलने के पहले दर्द, जो छाती तक जाता हो, तब दें ।

ऐसिड लैक्टिक 30— कलाई, कुहनी, अँगुलियों की गाँठों का रोगाक्रान्त हो जाना । गाँठों तथा संधि-स्थलों के वात में हिलने-डुलने पर दर्द की वृद्धि ।

एंगस्टुरा 3x, 6— दोनों घुटनों तथा प्रत्यंगों की गाँठों के भीतर मरमर शब्द। गाँठ तथा पेशी के कड़ी तथा जकड़ी रहने की स्थिति में दें ।

अन्य औषधियाँ— इस रोग में लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ सकती है-- एमोनबेंज, कॉल्चिकम, ऐसिड लैक्टिक, कैलिहाइ, एमोन फॉस, पेट्रोलियम, ऐब्रोटेनम, एण्टिम क्रूड, एसिड बैन्जो, ब्रायोनिया, रेडियम, केल्केरिया फास, कास्टिकम, कोलोसिन्थ, इलाटिरियम, फेरममेट, बर्बेरिस गुयेकम, एमोन फास, कैलि-हाइड्रो, मैग कार्ब, पैट्रोलियम, स्ट्रिक्निनम तथा स्पाइजेलिया आदि ।

पक्षाघात (लकवा) रोग–

(1) यदि शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो, हृदय-रेखा पर आड़ी रेखाऐं हों, हथेली की त्वचा कोमल हो तथा नाखून चिपटे हों तो जातक को पक्षाघात (लकवा अथवा फालिज) रोग होता है ।

(2) जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा से मिलती हो, वहीं यदि लाल रंग का तिल अथवा तिल जैसा चिह्न हो एवं स्वास्थ्य-रेखा विभिन्न रंगों वाली हो तो जातक को पक्षाघात-रोग होता है ।

(3) मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल पर लाल रंग का चिह्न हो तो भी जातक पक्षाघात का शिकार बनता है ।

(4) स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के मिलन-स्थल पर लाल रंग का चिह्न हो, साथ ही शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो एवं जीवन-रेखा के समाप्ति-स्थल पर भी नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक की पक्षाघात-रोग के कारण मृत्यु की सम्भावना रहती है ।

(5) यदि जीवन-रेखा पर एक 'द्वीप-चिह्न' हो, शनि-क्षेत्र पर एक 'जाल-चिह्न' हो तथा शनि-क्षेत्र से एक द्वीप-चिह्न युक्त रेखा निकलकर जीवन-रेखा से जा मिली हो, साथ ही मस्तक-रेखा पर भी द्वीप अथवा बिन्दु-चिह्न हो तो जातक पक्षाघात का शिकार बनता है । ऐसी रेखाओं वाले जातक की अँगुलियों के नख भी शीघ्र टूटने वाले हों तो प्रबल पक्षाघात होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— पक्षाघात रोग में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है--

कास्टिकम 200— मुँह, जीभ, मुँह के एक ओर अथवा अर्द्धाङ्ग का पक्षाघात, ठण्ड लगकर हुआ पक्षाघात ।

एन्हेलोनियम Q, 6— अर्द्धाङ्ग तथा निम्नांग का पक्षाघात ।

सेलेनियम अर्जेण्ट— स्वर-यन्त्र का पक्षाघात, भाषण देने अथवा गाने के बाद गला बैठ जाने की स्थिति में यह अवश्य लाभ करेगी ।

अन्य औषधियाँ— इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ सकती है— लोलियम, एनाकार्ड, इलैप्स, काक्युलस, काल्चिकम, कोनियम, नक्स मस्केटा, जेल्सीमियम, एस्ट्रैगेलस, प्लम्बम, फाइजस्टिग्मा, मेजेरियम, बैराइटा-कार्ब, एसिड-म्यूर, लैथाइरस, मैगेनम, तथा मेजेरियम आदि ।

हिस्टीरिया-रोग—

(1) यदि स्त्री के हाथ की त्वचा कोमल हो तथा हथेली में जंजीर जैसी आकृति की अत्यन्त महीन, अनेक छोटी-छोटी रेखाऐं हों तो उसे 'हिस्टीरिया' की बीमारी होती है ।

(2) यदि स्त्री के हाथ का बाहरी आकार अत्यधिक सिकुड़ा हुआ हो तो भी उसे 'हिस्टीरिया' नामक रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— हिस्टीरिया में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

काक्युलस30— ऋतु-दोष के कारण उत्पन्न हिस्टीरिया, फिट के समय अत्यधिक श्वास-कष्ट । ऋतुस्राव बन्द होकर मानसिक-विकार उत्पन्न होना।

इग्नेशिया 200— मूर्च्छावायु, पाकस्थली से किसी पदार्थ के ऊपर उठकर गले में घूमने-फिरने जैसी अनुभूति ।

नक्स-मस्केटा6, 200— कभी हँसना-कभी रोना, अत्यधिक अवसाद, केवल सोने की इच्छा, फिट (दौरे) आना ।

मॉस्कस 30, 200— अचानक ही छाती में अकड़न जैसा अथवा गलनली में संकुलन जैसा एक तरह का दर्द, रुग्णा की साँस बन्द होकर दम अटकने जैसी अनुभूति। परिवर्तनशील मिजाज । अनियमित ऋतु जन्य हिस्टीरिया।

एसाफिटिडा30— हिस्टीरिया, पेट में वायु जमना, पेट फूलना, पुराना उदरामय अचानक बन्द होकर हिस्टीरिया हो जाना ।

बैलेरियाना30— वायु तथा स्नायुप्रधान धातु, परिवर्तनशील मिजाज, कभी उद्धत, कभी विनम्र, कभी हँसना, कभी रोना ।

टैरेण्टुला हिस्पैनिया 30— फिट का बहुत देर तक रहना अथवा बार-बार आना ।

एक्विलेजिया 3— फिट आने से पूर्व पेट में एक गोला-सा उठकर ऊपर को ठेलता है ।

अन्य औषधियाँ— इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार सिमिसिफ्यूगा, कॉलोफाइलम, पल्सेटिला, अर्जेण्ट, प्लैटिनम, सीपिया, लिलियम ट्रिग आदि औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है ।

रक्ताल्पता (खून की कमी)

यदि हथेली की रेखाएँ चौड़ी, मलिन तथा पीले रंग की हों तो जातक को 'रक्ताल्पता' (खून की कमी) की बीमारी होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— रक्ताल्पता-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

ऐसिड एसेटिक 30— दस्त, खाँसी, रात को पसीना आदि रोगों के कारण तथा प्रसूति की रक्तहीनता में हितकर है ।

साइक्लामेन 30— शरीर में हवा लगने से भय, अनियमित-ऋतु, सिर चकराना, भोजन हजम न होना, धुँधली दृष्टि तथा शरीर में रक्त की कमी।

ग्रैफाइटिस 200— स्त्री देखने में मोटी, थुलथुल शरीर वाली, बलिष्ठ-सी प्रतीत हो, परन्तु यथार्थ में बल-हीन, रक्त-हीन, मलिन-मलिन-मुख, चेहरा फीका अथवा पीली आभायुक्त एवं पलकें फूली-फूली-सी हों तो इसका प्रयोग हितकर रहता है ।

अस्ट्रिया वर्जिनिया 3 — मलेरिया के कारण उत्पन्न रक्तहीनता में ।

नेट्रम-म्यूर 30 से 1000— ऋतु की गड़बड़ी, अत्यधिक शुक्र-क्षय, शरीर के किसी तेजपूर्ण पदार्थ के क्षय होने से उत्पन्न रक्तहीनता, दुर्बलता, फीका चमड़ा, सूखा चेहरा, थोड़े परिश्रम से ही छाती धड़क उठे एवं रुकावट आ जाये– इन लक्षणों में हितकर है ।

लेलिथिन Q से 30— अधिक समय तक कोई रोग भोगने के बाद की रक्तहीनता में हितकर है ।

फेरम-मेट 200— चेहरे का रंग फीका अथवा पीलापन लिए । थोड़ी-सी उत्तेजना से ही चेहरे का लाल हो जाना, बाहर से देखने में मोटा-ताजा, परन्तु यथार्थ में रक्तहीन होने पर दें ।

कैलि-कार्ब 200— फीकी त्वचा, दुर्बल शरीर, मुँह-आँख फूले हुए तथा शरीर में रक्त-शून्यता के लक्षणों में हितकर है ।

मैगेनम ऐसेट 3— स्त्रियों में ऋतु का शीघ्र होना तथा उसका दो दिनों से अधिक न रहना । फेरम के बदले भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

रक्त-विकार

यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तथा नखों के ऊपर लाल रंग के छोटे-छोटे अर्द्धचन्द्र-चिह्न हों तो जातक को रक्त-विकार से सम्बन्धित कोई रोग होता है ।

होम्यो - चिकित्सा— रक्त-विकार से सम्बन्धित रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

हिपर-सल्फ 6, 30, 200— सड़ने वाले जख्म, जिनके चारों ओर छोटी-छोटी फुन्सियाँ बन जाती हैं । फोड़े आदि की पकने की प्रवृत्ति ।

एचिन्नेशिया Q— फोड़े-फुन्सी, गन्दे, ठीक न होने वाले जख्म, मुँह तथा नाक एवं अन्य अङ्गों से बेहद दुर्गन्ध आना । प्रसूत-ज्वर में स्त्रियों के शरीर का खून बिगड़ जाने में हितकर है । कार्बकल, गैंग्रीन तथा बारम्बार फोड़ा होने की प्रवृत्ति ।

बैप्टीशिया 12— रक्त-विकार के कारण होने वाला टाइफाइड-ज्वर, श्वास तक में दुर्गन्ध, फोड़ों में संड़ांध की बू, दुर्गन्ध के कारण रोगी का तन्द्रा में रहना ।

ऐन्थ्रैसीनम 200, 1M—मुँहासे, विषैले फ़ोड़े, सड़ने वाले फोड़े तथा जख्म, अँगुल हाड़ा, कान की जड़ के जख्म, असह्य जलन तथा दुर्गन्धित स्राव में हितकर है ।

पाइरोजेन 200— सड़ांध, विषाक्त-गैस से उत्पन्न कोई रोग तथा प्रसूत-ज्वर में हितकर है ।

गन-पाउडर 3x— दूषित-भोजन के कारण होने वाले रक्त-विकार में अत्यधिक उपयोगी है । इसका प्रयोग करने से दो दिन पूर्व यदि 'हिपर सल्फर 200' की एक मात्रा ले ली जाये तो रक्त-दोष दूर करने में इससे बहुत सहायता मिलती है । सामान्यतः हर प्रकार के रक्त-विकार में यह हितकर है।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है— आर्सेनिक, सिकेल कौर, कार्बोवेज, लैकेसिस, बैलाडोना, ऐन्थ्रैक्सीनम, ऐकोनाइट, चायना, आर्निका, रसटाक्स, ब्रायोनिया, मर्क-सोल आदि ।

रीढ़ (मेरुदण्ड) के रोग

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे, हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को रीढ़ से सम्बन्धित कोई बीमारी होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— रीढ़ से सम्बन्धित बीमारियों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है–

सिमसिफ्यूगा 30— जरायु-सम्बन्धी शिकायतों के परिणामस्वरूप होने वाले मेरुदण्ड-प्रदाह में हितकर है ।

नेट्रम-म्यूर 30— कशेरुकाओं के बीच दुखन, छूने तथा दबाने में दर्द का अनुभव, किसी कड़ी वस्तु पर लेटने से आराम एवं मेरुदण्ड की शिथिलता के कारण होने वाला पक्षाघात ।

फाइजोस्टिग्मा 3— मेरुदण्ड से टीस प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है । प्रत्येक स्नायु में उत्तेजना, हाथ-पाँवों का सो जाना, अकड़न के साथ दर्द तथा कशेरुकाओं के बीच दबाने जैसा दर्द ।

एगैरिकस 3, 30, 200— मेरुदण्ड में टीस तथा जलन का अनुभव, शरीर के विभिन्न अङ्गों में फड़कन, त्वचा में बर्फ की सुइयाँ चुभने जैसा अनुभव, मेरुदण्ड को छूने में दर्द, कमर में दर्द तथा खुली हवा में घूमने से दर्द ।

जिंकम मेट 6— कमर के अन्तिम कशेरुका में ऐसा दर्द कि बैठा नहीं जाता, परन्तु चलते समय उतना कष्ट नहीं होता । मेरुदण्ड में जलन एवं अँगों का काँपना ।

कौल्युलस 3, 30— मेरुदण्ड में कोमलता पाये जाने के साथ कमर में कमजोरी और दर्द, बार-बार सिर चकराना तथा पेट में खालीपन का अनुभव ।

नक्स-वोमिका 30— कामाधिक्य (सैक्स-सेवन) के कारण मेरुदण्ड का प्रदाह, हाथ-पाँव तथा मेरुदण्ड में सूनापन तथा उनमें कोड़ियाँ रेंगने जैसा अनुभव ।

टेल्यूरियम 6, 30— गले की अन्तिम हड्डी से लेकर मेरुदण्ड की पाँचवी कशेरुका तक के हिस्से में दर्द ।

वैसीलीनम 200— तपेदिक के अंश के साथ मेरुदण्ड का प्रदाह होने पर सप्ताह में एक बार इसकी एक मात्रा देते रहें ।

थूजा 6— अधिक बार टीका लगवाने के कारण उत्पन्न मेरुदण्ड के प्रदाह में हितकर है ।

विविध प्रकार के ज्वर

(1) यदि हथेली का मध्य भाग मुलायम तथा खुश्क त्वचा वाला हो तो जातक को ज्वर-पीड़ा होती है ।

(2) यदि अनामिका अँगुली के पृष्ठभाग में, किसी भी पर्व पर 'काला-दाग-चिह्न' हो तो जातक ज्वर-पीड़ित रहता है ।

होम्यो - चिकित्सा— ज्वर-पीड़ा में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ऐसिड कार्बोलि 30— सैप्टिक, सूतिका, मोरी की गैस से उत्पन्न ज्वर, मलेरिया, सविराम ज्वर, प्लीहा-संयुक्त ज्वर तथा धीमी प्रकृति आदि के सभी ज्वरों में हितकर है ।

एमोन-म्यूर 200— मज्जागत ज्वर एवं किसी भी प्रकार न छूटने वाला ज्वर।

अर्जेण्ट-मेट 30, 200— दोपहर को 1 बजे आकर एक घंटे बाद हट जाने वाला ज्वर ।

आर्स-आयोड 3x— पुनः पुनः ज्वर तथा पसीना आने पर ।

एक-ज्वर तथा रेमिटेण्ट ज्वर— में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है-- एकोनाइट, बैलेडोना, ब्रायोनिया, जेल्सिमियम, फेरम-फॉस, एण्टिम क्रूड, एण्टिम टार्ट, आर्सेनिक, यूपेटोरियम पर्स, इपिकाक आदि।

सर्दी के ज्वर— में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है— एकोनाइट, इपिकाक, एण्टिम-टार्ट, आर्सेनिक, आर्स-आयोड, जेल्सीमियम, कैम्फोरा, एलियम सिपा, ब्रायोनिया, रस-टाक्स, मर्कसाल तथा पल्सेटिला आदि ।

सूतिका-ज्वर— में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है– एसिड कार्बोल, सिकेल, पाइरोजेन, सल्फर, ओपियम, कैलि-म्यूर, एचिन्नेशिया ।

ठंड लगकर आने वाले ज्वर— में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है— एकोनाइट, डल्कामारा, नक्स-मस्केटा, बैलाडोना, मर्कसॉल, नेट्रम-सल्फ, ब्रायोनिया, नक्स-वोमिका ।

अन्य औषधियाँ— ज्वर के विभिन्न प्रकारों में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है– मेलिलोटस, ऐसिड-म्यूर, बैप्टीशिया, रसटाक्स, हायोसियामस, ओपियम, स्ट्रैमोनियम, हैलिबेरिस, लाइकोपोडियम, क्रियोजोट, इपिकाक, ऐसिड नाइ, सिकेलि, टेरिबिन्थिना, एकोनाइट, चेलिडोनियम, चिनिनम, आर्स आदि ।

मस्तिष्क-ज्वर–

यदि मस्तिष्क-रेखा टूटी हो अथवा द्वीप-चिह्नयुक्त हो तो जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी ज्वर की शिकायत बनी रहती है ।

होम्यो - चिकित्सा— मस्तिष्क-ज्वर में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर होता है–

जिंकम-मेट 30, 1M— मस्तिष्कावरण-झिल्ली का प्रदाह, सम्पूर्ण अज्ञान, टेढ़ी दृष्टि, अकड़न तथा अचानक ही पाखाना बन्द होकर मस्तिष्क के लक्षणों में ।

ग्लोनायिन 30, 200— मेनिन्जाइटिस, सिर में टपकमय दर्द, वमन, रोग के आरम्भ में ही फिट आना, सिर का गरम तथा हाथ-पाँवों का ठंडा रहना आदि लक्षणों में विशेष हितकर रहती है ।

जिंकम सल्फ 30, 200— यह मेनिन्जाइटिस अर्थात् मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह की श्रेष्ठ औषध है ।

मेडोरिनम 30— सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिंजाइटिस में इसका प्रयोग करें। पहले सिमसिफ्यूगा, उसके बाद मेडोरिनम देनी चाहिए । आरोग्य के लक्षण प्रकट होने पर लाइकोपोडियम विशेष फायदा करेगी ।

सल्फर 200— मुँह का रंग लाल, नींद आती है परन्तु सो नहीं सकता।

आर्निका 200— चोट लगने से रोग की उत्पत्ति होने पर ।

सिम्पल मेनिञ्जाइटिस— इनमें लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है-- आर्निका, ऐपिस, बेलाडोना, सिक्युटा, जेल्सिमियम, ग्लोनायिन, कैलिब्रोम, विरेट्रम-विर, जिंकम ।

ट्युवर्क्युलर मेनिञ्जाइटिस— ऐपिस मेल, सिक्युटा, कैल्क आयोड, लाइकोपोडियम, अर्जेण्ट नाई लक्षणानुसार दें ।

सेरिब्रो स्पाइनल— ग्लोनायिन, हेलिबोरस, सिक्युटा, हायोसियामस, जिंकम, जेल्सिमियम, एगारिकस, सिमसिफ्यूगा, फाइजस, कैनाबिस-इण्डिका, सल्फर तथा जिंकम– इन्हें लक्षणानुसार दें ।

विशेष— मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के रोगी की गर्दन तथा सिर पर 'आइसवैग' रखा जाता है, परन्तु इसकी अपेक्षा लाभ होने तक सिर पर निरन्तर ठंडा पानी डालने अथवा ठण्डे पानी का 'डूश' देने से विशेष लाभ होता है ।

लाल-ज्वर–

यदि जीवन-रेखा पर 'क्रास' अथवा 'वृत्त' चिह्न हो तो जातक को 'लाल-ज्वर' की बीमारी होती है ।

होम्यो-चिकित्सा— 'लाल-ज्वर' को हिन्दी में 'आरक्त-ज्वर' तथा अँग्रेजी में Scarlation कहते हैं । यह खसरे की भाँति ही एक प्रकार का तरुण तथा फैलने वाला रोग है । खुजली तथा गले में जख्म इस रोग के विशेष लक्षण हैं । यह बीमारी छोटे बच्चों (शिशुओं) को अधिक होती है। इसमें शरीर का तापमान 105 डिग्री तक बढ़ जाता है तथा नाड़ी की गति 100 से 160 तक हो जाती है । प्यास, सिर में दर्द, वमन, गले में जख्म आदि इस रोग के पूर्व लक्षण हैं । फिर 24 घण्टों के भीतर शरीर पर चमकीले लाल रंग के खुजली भरे दाने निकल आते हैं । ये दाने पहले कंधे और छाती पर निकलते हैं फिर शीघ्रता से सम्पूर्ण शरीर पर फैल जाते हैं । तेज सिर-दर्द, प्रलाप, जीभ पर मैल चढ़ जाना, जीभ के अगल-बगल तथा आगे का भाग लाल होना एवं जीभ पर लाल रंग के काँटे से उभर जाना-- इस रोग के उपसर्ग हैं । यह रोग प्रायः दो सप्ताह से अधिक नहीं ठहरता । इस ज्वर में पहले दिन से ही सम्पूर्ण शरीर लाल हो जाता है। यह रोग (1) सरल, (2) गले में जख्म वाला तथा (3) सांघातिक– तीन

प्रकार का होता है । इसमें लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए–

बैलाडोना 30— ज्वर, गले में घाव, लाल रंग के दाने तथा प्रलाप के लक्षणों में दें ।

मर्क-कोर 3— गले में जख्म, गाँठें सूजी हों, मुँह से बहुत राल गिरे, श्वास में बदबू तथा सुस्ती के लक्षणों में । यदि गुर्दा भी आक्रान्त हो तो इससे विशेष लाभ होता है ।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार– फाइटोलक्का, एपिस, एकोनाइट, आर्सेनिक, सल्फर, एइलैन्थस, क्युप्रम ऐसेट, एसिडम्यूर, क्रोटेलस, एचिन्नेशिया तथा हिपर सल्फर आदि औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है । सांघातिक ज्वर के लिए-- एइलेन्थस 1x, क्युप्रम ऐसेटिकम 3x, आर्सेनिक 3x तथा एसिड म्यूर 6 का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है ।

दाँतों की विविध व्याधियाँ

यदि शनि-क्षेत्र उन्नत हो और उस पर अधिक रेखाऐं हों, स्वास्थ्य-रेखा तथा भाग्य-रेखा लहरदार एवं लम्बी हो तथा अँगुलियों के द्वितीय पर्व लम्बे हों तो जातक को दाँत एवं मसूढ़े सम्बन्धी रोग होते हैं ।

होम्यो - चिकित्सा— दाँत एवं मसूढ़े सम्बन्धी रोगों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एन्टिम क्रूड 200— खोखला दाँत, कुछ खाने अथवा ठण्डा पानी दाँत में लगने से असह्य वेदना ।

एकोनाइट नेप 30— ठण्ड लगकर दाँत की जड़ फूलना, दर्द और यन्त्रणा।

चेनापॉडो 3— दाँत के दर्द में हितकर है ।

कैल फ्लोर 200— दाँतों का हिलना, दाँत में कुछ लगते ही दर्द होना।

कैलफॉस 3x, 200— शिशुओं के दाँत देर से निकलना । वयस्कों के दाँत में छेद, दाँत की जड़ ढीली हो जाना तथा दाँत का नष्ट होना ।

प्लेण्टैगो 3x— प्रायः हर प्रकार के दन्त-शूल में हितकर है । बाह्य-प्रयोग के लिए मदर-टिंक्चर का प्रयोग करें ।

कार्बो 30— छिद्रमय मसूढ़े, दाँतों की जड़ निकल आना, रक्त बहना।

चायना 30— थोड़े स्पर्श से दर्द, परन्तु दाँत पर दाँत रखकर जोर से दबाने पर दर्द घटना ।

कॉफिया 200— मुँह में ठंडा पानी रखने पर दाँत का दर्द घटता हो तो दें।

हैकलालावा 2x, 3x, 6— मसूढ़ों में घाव, फोड़े, नासूर, कीड़े लगकर दाँतों में घाव, पायरिया, सूजन के साथ दर्द तथा उखड़वाने के बाद कुछ अंश रह जाने के कारण होने वाली यन्त्रणा में हितकर ।

क्रियोजोट Q— कीड़े लगे दाँतों में इसके बाह्य प्रयोग से लाभ होता है। दूध के दाँत में कीड़ा लगना । दाँत का पहले पीला फिर काला होना तथा क्रमशः क्षय होकर भीतर गड्ढा हो जाना ।

कॉफिया टोस्ट 30, 200— ध्वंस हुए दाँत में दर्द के कारण मुख के स्नायुशूल-दर्द में दें ।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है– साइलीशिया, सिस्टस, फास्फोरस, एपोसाइनस, ऐसिड फ्लोर, मर्कसॉल, मैग्नेशिया कार्ब, रैटान्हिया, स्टैफिसेग्रिया आदि ।

नेत्र-सम्बन्धी विविध रोग

यदि अनामिका अँगुली के तीसरे पर्व पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर नीले रंग का 'दाग-चिह्न' हो तो जातक की आँखों में पीड़ा बनी रहती है ।

होम्यो - चिकित्सा— नेत्र-पीड़ा में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभकर होता है–

एकोनाइट 30— ठण्ड या ठंडी हवा से आँखें आना, आँखों में अचानक प्रदाह, फूल जाना, लाल रंग की हों, आँखों के भीतर जलन तथा करकराहट।

अर्टिमिसिया 200— आँखों में चोट लगना तथा उसके कारण उत्पन्न सभी उपसर्ग ।

मर्कसॉल 200— पलकों का प्रदाह, कुटकुटाहट, रात में आँखों का चिपक जाना, आँखे आना, आँखों में पीव, कीचड़ अथवा घाव ।

पल्सेटिला 200— 'मर्कसॉल' जैसे लक्षणों में पर्याय-क्रम से दें ।

सिमसिफ्यूगा 30— आँखों के तारों तथा भौंहों के समीप अत्यधिक दर्द, उसके साथ ही सिर-दर्द, बाईं आँख में दर्द की अधिकता ।

एब्सिन्थिया 200— ठण्ड लगकर आँख का प्रदाह ।

एट्रोपिया 30— आँख आने के बाद अनेक प्रकार के रोग, भ्रमपूर्ण दृष्टि, द्वि-दर्शन, सब वस्तुओं का बड़ा दिखाई देना ।

लाइकोपोडियम 1M— किसी वस्तु का दाँया आधा भाग दिखाई देना।

लिथिया 3x— किसी वस्तु का बाँया आधा भाग दिखाई देना ।

ऑरस 30— किसी वस्तु का निचला आधा भाग दिखाई देना ।

मार्फिनम 3x, 6x— चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई पड़ना ।

कैनाबिस सैट— आँखों से कुहारे जैसा दिखाई देना ।

सिनेरेरिया मेरिटिया— मोतियाबिन्द, कर्निया में दाग तथा धुँधला दिखाई देना ।

ग्रैफाइटिस 200— कीचड़ से आँखें सट जाना । पलकें फटकर रक्तस्राव।

कास्टिकम 200— मोतियाबिन्द की प्रथमावस्था में धुँधला, बादल जैसा दिखाई देना ।

अन्य औषधियाँ— सिनाबेर, क्लिमेटिस, कोनियम, क्रोकस, कैलेण्डुला, कैन्थिरस, एलियम सिपा, हिपर, स्टैफिसेग्रिया, मेजेरियम, सल्फर, कैलि-कार्ब, कैलिबाई आदि लक्षणानुसार प्रयोग करें ।

दृष्टि-दौर्बल्य–

यदि हृदय-रेखा पर 'बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक को दृष्टि-दौर्बल्य रोग होता है अर्थात् उसकी दृष्टि कमजोर होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— दृष्टि-दौर्बल्य तथा आँखों के अन्य रोगों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिये–

ब्रॉथ्रूप्स 30— दिवान्धता, सूर्योदय के बाद कुछ भी न देख पाना ।

एल्युमिना 30— अस्पष्ट दृष्टि, द्रव्यादि पीले दिखाई दें ।

एमोन-कार्ब 30— सूक्ष्म कार्य की वजह से दृष्टिहीनता ।

ऑरम 30— एक वस्तु का दो अथवा आधी दिखाई देना ।

कामोक्लेडिया 30— दाँई आँख के भीतर दर्द, अँधेरा दिखाई देना ।

कोनियम 200— प्रदाह अधिक न होने पर भी रोशनी न सुहाना।

क्रोकस Q, 200— पलकों का फड़कना, दृष्टिहीनता, कुहारे के भीतर होने जैसा अनुभव होने के लक्षणों में बहुत उपयोगी ।

लैकेसिस 200— किसी भी प्रकार देख न पाना अथवा धुँआ जैसा सामान्य हृत्पिण्ड अथवा सिर-दर्द के कारण दृष्टि-शक्ति का ह्रास ।

फास्फोरस 6x से 200— दृष्टि-शक्ति का ह्रास, अनेक प्रकार के रंग देखना, बत्ती की रोशनी दूनी, चौगुनी, अठगुनी दिखाई देना ।

फाइजस्टिग्मा 6— दूर की वस्तुएँ न दीखना, अनेक प्रकार के रंग दीखना।

सिपिया 200— अचानक ही दृष्टि-शक्ति का लोप हो जाना । धुँधली दृष्टि, दृष्टि-शक्ति की स्वल्पता ।

लिथियम कार्ब 3x— किसी वस्तु का आधा हिस्सा ही दिखाई देना।

पैराफिन 30— अँधेरा दिखाई देना ।

कार्बोनियम सल्फ— अदूर-दृष्टि, वस्तु का मानो कुहासे के भीतर से देखना, दृष्टि का सम्पूर्ण लोप ।

अन्य औषधियाँ— कॉलेस्टेरिनम, कोकेन आदि ।

अन्धापन–

(1) यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है ।

(2) यदि तर्जनी के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अन्धा एवं दुर्गुणी होता है ।

(3) यदि शुक्र-क्षेत्र पर लाल रंग का चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है ।

(4) यदि मध्यमा अँगुली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण जैसा चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है ।

(5) यदि शुक्र-क्षेत्र से हृदय-रेखा तक एक बड़ा द्वीप-चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है ।

(6) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर आरी जैसे दाँत बने हों अथवा वृत्त-चिह्न हो तो जातक आँखों से अधिक काम लेने के कारण अन्धा हो जाता है ।

होम्यो - चिकित्सा— निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग दृष्टि-क्षीणता में उपयोगी सिद्ध होता है—

चायना 6, 30— शरीर में रक्त की कमी होने के कारण यदि कम दिखाई दे ।

फास्फोरस 6, 30— 'चायना' से लाभ न होने पर इसे दें ।

नक्स वोमिका 1x— अत्यधिक नशा-सेवन से दृष्टि कमजोर होने पर।

बेलाडोना 6, 30—अधिक खून एकत्र होने के कारण दृष्टि-क्षीणता में।

पल्सेटिला 6, 30— मासिक रजःस्राव रुककर दृष्टि-क्षीणता ।

कैक्टस 6— हृत्पिण्ड के रोग के कारण दृष्टि-क्षीणता में ।

सैंगुइनेरिया— तीव्र सिर-दर्द के साथ दृष्टि-क्षीणता में ।

रक्त की कमी के कारण दृष्टि क्षीणता में— फेरम 6, एसिड-फास 6, आर्सेनिक 30, चायना 6 अथवा युफ्रेशिया 2x ।

पाचनशक्ति की कमी के कारण दृष्टि-क्षीणता में— नक्स-वोमिका 30, पल्सेटिला 30, मर्क्यूरियस 6, चायना 6, सल्फर 30 अथवा बेलाडोना 3।

रतौंधी में— फास्फोरिक एसिड 3, 30, हेलिबोरस नाइग्रा 3, 200, चायना 6, बैलाडोना 6, लाइकोपोडियम 30, हाइपोस 6, रैनेन 30, नाइट्रिक एसिड 30 आदि ।

दिनौंधी— ब्रॉथ्रप्स 6, 30, सिलिका 30, फास्फोरस 6, सल्फ्यूरिक एसिड 6, बैलाडोना 6 आदि ।

कानों के रोग

बहरापन—

यदि मस्तक-रेखा पर आरी जैसे दाँत हों तो जातक को बहरापन होता है अथवा उसे कानों से कम सुनाई देता है ।

होम्यो - चिकित्सा— बहरापन तथा कान के अन्य रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का प्रयोग करें—

शारीरिक कमजोरी के कारण बहरापन हो तो— पल्सेटिला 3 (नये रोग में), कैलिहाइड्रो 3x वि० अथवा मर्क-बाई 6x वि० (पुराने रोग में), डल्कामारा 6 (बरसात की तर हवा लगने के कारण), एकोनाइट 2x (ठण्डी सूखी हवा लगने के कारण) एवं ब्रायोनिया (वात के साथ बहरापन) ।

ज्वर आदि के बाद बहरापन हो तो— बैलाडोना 3 (बहरेपन के साथ सिर में चक्कर आना), चायना 3x अथवा एसिड फास (शरीर के रस-रक्त आदि का स्राव होने के बाद का बहरापन), पल्सेटिला 6, सल्फर 30 ।

त्वचा की कोई बीमारी दब जाने अथवा कान का पीव बन्द हो जाने के कारण बहरापन हो तो— हिपर सल्फर 6, सल्फ़र 30, आरम 3x, 200 ।

तालुमूल-प्रदाह अथवा उपजिह्वा फूलने के कारण उत्पन्न बहरापन— मर्क-बिन आरोड 6x, मर्क-कोर 6, कैलि-हाइड्रो 3x वि०, बैराइटा-कार्ब 6 ।

मस्तिष्क में गहरी चोट के कारण बहरापन— आर्निका 3x ।

बहरेपन के साथ कान में धीमी आवाज होने पर— नेट्रमं-सैलिसिलिकम 3, नक्स-वोम 3 अथवा इग्नेशिया 6 (बहरेपन के साथ सुनने में तेजी), बैप्टीशिया 2x (बहरेपन के साथ कान में गहरी गरज) ।

विशेष— बहरेपन की प्रथमावस्था में 'मूलेन आयल' की 3-5 बूँदें दिन में दो बार कान के रोग में डालते रहने से बहुत लाभ होता है ।

अन्य औषधियाँ— इस रोग में लक्षणानुसार इन औषधियों के उपयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है– फास्फोरस 30, चिनियम-सल्फ 3 वि०, एसिड फास 6, इलैप्स 3, कैल्के० फास 3x, ग्रैफाइटिस 6, 200, मर्क्युरियस 6, बैलाडोना 3, पल्सेटिला 6, सिलिका 30, चायना 6, सल्फर 30, एसिड-फास 3, हिपर सल्फर 6, आरममेट, कास्टिकम 6, एण्टिम क्रूड 6, नाइट्रिक-एसिड, आयोड, आरम, मर्क-आयोड, कैलि-आयोड आदि ।

पाँवों के विविध रोग

यदि शनि-क्षेत्र उन्नत हो, मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तथा हथेली पर रेखाओं की अधिकता हो तो जातक को पाँवों से सम्बन्धित कोई रोग होता है ।

होम्यो - औषधियाँ— निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग पाँवों के रोगों में हितकर सिद्ध होता है–

नेट्रम-कार्ब 30— पाँव की गाँठ तथा सन्धि-स्थल की दुर्बलता, तलवा फूला हुआ एवं दर्द, थोड़ी दूर चलते ही पाँव की गाँठ में दर्द होने लगना।

एण्टिम-क्रूड 200— पाँव के तलवे में केवल दर्द होना, फूला न रहना।

मैगेनम-म्यूर— पाँव की गाँठों तथा हड्डियों में दर्द ।

मैगेनम एसट— एड़ी व गाँठ में दर्द । तलवे में वात ।

मैगेनम आक्साइडेट— पाँव की हड्डी टीबिया में दर्द ।

फाइटोलक्का 2x, 30— एड़ी में काटने जैसा दर्द ।

साइक्लामेन 30— एड़ी में जलन एवं घाव जैसा दर्द ।

लीडम 6, 30— एड़ी में सूजन तथा तलवे में बहुत दर्द ।

हाइड्रैस्टिस 30— पाँव की अँगुलियों में घट्टे होना ।

एनाकार्ड आक्सि 200— पाँव का घट्टा, घाव, फटा हुआ तलवा ।

फीलपाँव-रोग— यह रोग बहुत ही कम ठीक हो पाता है । इसमें हाइड्रोकोटाइल, एनाकार्ड तथा कैलोटापिस नामक औषधियों का बहुत दिनों तक लक्षणानुसार प्रयोग करना पड़ता है ।

अधिक चलने में पाँव दुखना— आर्निका 30, 200, 1M ।

पाँव ठण्डे होते जा रहे हों— कार्बोवेज 30 या सिस्टम 30 ।

पाँवों में दर्द— रसटॉक्स 200, एपिस 3x, लीडम 6, कोलोफाइलम।

पिंडलियों में दर्द— क्युप्रम आर्स 3x ।

पाँव के तलवों में कष्ट— म्युरियेटिक ऐसिड, ऐसिड फास, पल्सेटिला, पेट्रोलियम, ग्रेफाइटिस, सल्फर, साइलीशिया, सिकेल आदि लक्षणानुसार दें।

एड़ी में कष्ट— साइलीशिया 200, कॉल्चिकम 30, बर्बेरिस वल्गैरिस 30 ।

त्वचा-रोग

(1) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा मस्तक-रेखा घूमकर

उससे मिल गई हो तो जातक को फोड़ा-फुन्सी आदि त्वचा सम्बन्धी रोग होते हैं ।

(2) यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तथा नख बाँसुरी जैसे हों तो जातक को त्वचा सम्बन्धी रोग होते हैं ।

होम्यो - चिकित्सा— त्वचा सम्बन्धी रोगों में निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है-

ग्रेफाइटिस 30— अनेक प्रकार के त्वचा-रोगों में हितकर । तारदार चिपटने वाला स्राव, गोंद एवं शहद सरीखा एग्ज़ीमा– जो फटा-फटा हो।

आर्सेनिक 30, 200— जिन रोगों में त्वचा मोटी पड़ जाती है, उसमें हितकर है । पुराने पित्तीरोग में भी लाभ करती है ।

सल्फर 200— खुजली, सिर पर खुश्की, गर्मी, रात में बढ़ने वाली तेज खुजली एवं लाल त्वचा वाले एग्जीमा को ठीक कर देती है ।

एण्टिम-क्रूड— त्वचा पर मोटे दाने, बच्चों के सिर पर शहद के रंग के खुरण्ड पड़ना आदि में उपयोगी है ।

थूजा 200, 1M— मस्से, टीका लगवाने के बाद होने वाला एग्जीमा में लाभप्रद।

नेट्रम-म्यूर 30— नाखून के किनारे वाले भाग की सूजन, तर एग्जीमा।

क्रियोजोट Q, 30— जोड़ों के पास वाली पेशियों पर दाने पड़ना ।

बर्बेरिस 30— चेहरे की फुन्सी (मुँहासे) आदि तथा पोरिएसिस ।

हाइड्रोक्रोटाइल Q— त्वचा पर अत्यधिक खुश्की, उससे छिछड़े उतरते रहना । कुष्ठ-रोग तथा सोरिएसिस ।

पेट्रोलियम 30— शुद्ध एग्जीमा जिस पर मोटा खुरंड पड़ता हो, पस रिसता हो अथवा त्वचा में फटाव हो । कानों के पीछे के एग्जीमा में विशेष हितकर है ।

मेजेरियम 30, 200— सिर पर पपड़ियाँ जमना एवं जबर्दस्त खुजली, फफूंदी लगने से खोपड़ी पर अथवा कानों के पीछे खुजली होना, जो रात में इतनी बढ़ जाती हो कि नींद न आये ।

रस-टाक्स 200— हर्पीज, एग्जीमा, खुजली आदि में हितकर है ।

सोरिनम 200, 1M — असह्य खुजली, त्वचा पर जगह-जगह दाने पड़ना ।

अन्य औषधियाँ— लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है— ओलिएण्डर, रैननक्युलस, नाइट्रिक एसिड, पल्सेटिला, डल्कामारा, सीपिया, टेल्यूरियम, हिपर-सल्फ, फ्लोरिक एसिड एवं कैलिम्यूर आदि ।

आत्महत्या की प्रवृत्ति

(1) यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर निकली हो तथा हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा से मिल रही हो तो जातक अपने किसी प्रेम-सम्बन्ध के पीछे दीवाना होकर आत्महत्या जैसा दुष्कर्म करने में प्रवृत्त होता है ।

(2) यदि मस्तक-रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिल गई हो, गुरु-क्षेत्र उन्नत हो, जीवन-रेखा को छोटी-छोटी रेखाऐं काट रही हों तथा भाग्य-रेखा कमजोर हो, तो भी जातक की आत्म-हत्या की ओर प्रवृत्ति होती है ।

होम्यो - चिकित्सा— आत्म-हत्या की प्रवृत्ति होने पर निम्नलिखित होम्यो - औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग उपयोगी है—

आरम मेट 30— जीवन से निराश होकर आत्म-घात के लिए उद्यत होना ।

आर्सेनिक-ऐल्बम 30— जीवन से निराश होकर आत्म-घात की इच्छा करना ।

टिप्पणी— 'उद्यत' होने तथा 'इच्छा' में मुख्य भेद यह है कि 'उद्यत' होने पर मरने का भय दूर हो जाता है, जबकि 'इच्छा' होने पर मरने का भय भी बना रहता है ।

॥ इति शुभम् भवेत ॥

***

विश्वविख्यात ज्योतिषी एवं भविष्यवक्ता

महापण्डित 'कीरो' द्वारा प्रणीत-

'हस्तरेखाएँ क्या कहती हैं ?'

व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण है।

- भूतकाल में आपके साथ क्या घटना घटित हुई और क्यों ?
- वर्तमान समय कैसा चल रहा है ??
- भविष्य में आपके साथ क्या होने वाला है ???

—सभी बातों का सचित्र, सुस्पष्ट और प्रामाणिक लेखा-जोखा इस पुस्तक में निहित है।